

भूमिका ।

१६२०

पाठकों को विदित होगा कि यह कविसमाज श्री महाराजाधिराज श्री १०८ महाराज बालकृष्णलाल जी कांकरौलीनरेश ने सन्वत् १८५० में स्थापित किया था तब से लेकर छ महीने की समस्यापूर्ति प्रथम भाग में बाबू जगन्नाथप्रसादजी वी०ए० उपनाम रत्नाकर कवि के प्रबन्ध में छप चुकी है। अब दूसरा भाग जिसमें दूसरे छ महीने की पूर्तियां हैं प्रकाश किया जाता है। आगे तीसरा भाग भी छप रहा है। योंही छः छः महीने का एकएक भाग होता जायगा—इस ग्रन्थ में जिस कवि को जैसी कविता है व्यों की व्यों प्रकाश की गई हैं। कोई घटाव बढ़ाव अपनी ओर से नहीं किया गया है जिससे कि सर्व साधारण को भिन्न २ कवियों को योग्यता का परिचय होय। महाराज बहादुर ने कवियों का असाह पुरस्कार देकर बहुत कुछ बड़ाया है और बढ़ा रहे हैं। इन्में ऐसे अनेक सुयोग्य महाशयों को कविता है जिनको पुरस्कार से कोई वास्ता नहीं केवल

अपने उत्साह और भाषा काव्य की वृद्धि के निमित्त यह परियम उठाते हैं। हम उन महाशयों को हृदय से धन्यवाद देते हैं और प्रार्थना करते हैं कि सदाही इसी प्रकार कटिवह रहकर भाषा काव्य की वृद्धि में तत्पर हों।

निवेदक

रामकृष्ण वर्मा

सेक्रेटरी—कविसमाज

काशी ॥



समस्यापूर्ति (द्वितीय भाग) की सम्- स्याओं की सूची ।

समस्या	कहाँ से कहाँ तक ।
पावस अंधेरी में	१—१०
सावन सुहावनो	११—२१
कविपुंज बगखो परै	२१—२८
आज वा कदख तरे रंग बरसत है	२८—३६
सनोज महाराज की	३६—४६
प्यार की आखनि में	४६—५४
मलिन्दमतवारे से	५५—६४
रंगभरी मूरति अनगभरी अंखिया	६५—७१
हिये में प्रानप्यारी के	७१—७८
सुगन्ध की लपट सी	६८—८६
एका तें छै गई है तस्वीरें	८६—९४
छूटै चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की	९५—१००
धादनी सी फौली चारु चादनी ददन की ...	१०३—१११
अनंग मदमाती है	१११—११९
तारम समेत तारापति फोको परियो .. .	११९—१२७

रासमण्डल गुपाल की	१२८—१३८
निष्ठावर करति है	१३८—१४८
वाँसुरो वजावै है	१४८—१६३
मानिक ते मानहु मरीचि मरकत की	१६३—१७५
सरोज सकुचाने से	१७५—१८३
गरक गई है मानो वोजुरो अंधेरे से	१८३—२०७
माल सुकतान की	२०७—२२५
प्यारे अचचन्द पे उल्यारी चली जाती है	२२५—२४२
फुलयारी है वसन्त की	२४२—२५८
हृयभान को दुलारो में	२५८—२७६

काशी कबिसमाज की

समस्यापूर्ति का दूसरा भाग ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाल जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

पावस अँधेरी में

गरजत आवै घन कारी घटा घेर घेर चम-
कत जात विष्णु सोभा जो उँजरी में । कहे रस-
सिन्धु फेर दूती गई गोपी पास वातहु बनाय
हाथ जोर बोली चेरी में ॥ चल वेग प्यारी नि-
सा लगत डरारी खूब ऐसो जो न होय मेह
आय जाय देरी में । कृष्ण पै ले आइ गई वाल
को लिवाय स्याम सखी संग केलि करे पावस
अँधेरी में ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजीवन काशी ।

आये बलवीर उतै वालक अहीर संग द्रुत
मनमोहिनी सखीजन की घेरी में । परम प्रवीन

प्यारी कौतुक विचार हिये ग्वालन की कामरी
छपाई नेक देरी में ॥ छाये घन घुमड इतक
मे चहँ घा घोर सूभत न हाथ धुम्भकार की धु-
धेरी में । जौलीं गोपगण उतै कामरी को धावै
तौलीं लै गई गुविन्दै गहि पावस अँधेरी में ॥

मान कही मेरी खान पान मति छोड़ै तेरी
वात हीं वनैहीं दिन हैकही की देरी में । जाय व-
लवीर सीं सुनैहीं सब तेरी पीर काज साध लैहीं
वस तीन चार फेरी में ॥ जानति है मोकीं हीं
प्रवीन परवीनन में वीर मिलिबे को नाहि औ-
सर उँजेरी में । धीर धरि ही में तू अधीर मति
हाय श्यामा अवको मिलैहीं तोहि पावस अँ-
धेरी में ॥ २ ॥

काशीनियासी पं० अम्बिकादत्त व्यास ।

साँवरी सँवारि सारी स्याम वगराय वार
छवि सरसाओ स्याम वावरे की घेरी में । घोआ
मां चरवि चान घोली स्याम रेसम की स्याम
नग आभरन धारो इहिँ वेरी मे ॥ छवि अम्बा-

दत्त स्याम अजन को रंजन कौ हरो हरिनी को
मद हरेँ हेरा हेरी में । स्याम मन धारि चली
स्यामल तमाल टिग साँची स्यामा वना स्याम
पावस अंधेरी में ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

सरद में ले आऊँगी साँवरौ सलोनी स्यामा
हेमा तो हिमन्त अन्त आवै नेक देरी में । सि-
सिर में सारदा मुहाई जी ससांकमुखी विन्दा
को वसन्त में बुलाऊँ तीन फेरी मे ॥ माधव जू
मौज करो यौषम निकुंज माह गनिका सी
गोरौ गात ल्याऊँगी सवेरी में । जेती बजम-
रडल में नागरी नवेली वाल लाल हीं लिआ-
ऊँ तिन्हें पावस अंधेरी में ॥

काशी निवासी पण्डित केदारनाथ

भूषन वसन अंग अंग सुठि नीको सानि
मिलन चली है ब्रजराज सों हरेरी में । जोवन
की वनक विचित्रता विसोके वनै पायल भनक
काम कैदी जात वेरी में ॥ घन घहरात हहरात

पौन जारे जार ह्वरात हिय रे केदार चली
 टेरी में । पीतपटवारो नहिँ मिल्यो धन वारो
 थल लार्ड क्यो वुलाड रॉड पावस अंधेरी में ॥

कवि प० अम्बाग्रंकर जी काशी ।

उन्नत उरोजन पै चोजदार चोली कसे ही
 जदार सारी के किनारी लगी घेरी में । अखिया
 सरोज लखे सफरी लजोज होत ठाँव ठाँव जा-
 गत मनोज देहँ तेरी में ॥ संकर नू रोज की ग-
 मंक फूटि चहूँ कोज करति गमोज कर्द जोजन
 की फेरी में । ओजभरी वदरी में मौज भरी भा-
 मिन तू खोज भरी काके चली पावस अंधेरीमे ॥

पीतम पियारे ने पियार सों वुलाड मोहि
 आओ प्राणप्यारी आज भारिन घनेरी में । तैं
 जो कही एकली न साथ सखी तेरे कोज मेरे
 साथ मेरी मति मेरी सखी चेरी में ॥ संकर नू
 प्रेम में न नेम कछ्यो कोज कहूँ हीहूँ फँदी तेई
 फँदे आपनी दिलेरी मे । एरी अरी वीरी जाति
 उनहाँ के खोज लगी भावस की आधी रात
 पावस अंधेरी मे ॥ २ ॥

बाबू हरिशंकरप्रसाद बनारस ।

घन को घमण्ड जो अखण्ड नभ छाये रछो
राह के बटोही ना दिखँय निसिकारी में । मेरो
रंग जोई सोई कासरी घटा में घटा औसर
भलो है नहीं वनिहै उजारी में ॥ भनै हरिशंकर
सखा सों स्याम ऐसो कछो मेरी कटि जैहै मंजु
मोद फुलवारी में । गेह वृषभान के निसंक आजु
घुस जैहों कौन धरि लैहै सोहिं पावस अंधारीमें ॥

काशीनिवासी वृजचन्द्र जी वल्लभीयं ।

कोऊ जाउ कारन विकुण्ठ कोऊ क्षीरसिंधु
खिलत प्रतापी प्रभु आयसु उँजरी में । विकल
विलोकि निज अनुभौ सुनावैं सुनौ वात यह
गूढ यातैं कही अतिं देरी में ॥ अंस कला भूति
जातैं हात हैं प्रकास सोई व्यापक दुभुज राम-
लीला द्रुहि बेरी में । याही तैं निसंका हम, सं-
कित परे ही सवै स्वारथ विषय रितु पावस अँ-
धरी में ॥

सकल सुमार्ग अवसान जँडही में हात ज-

गत प्रकास नित्य याही मति फेरी मैं । ताहूको
दुराड कौ परम निज तत्व माहिँ भाषै अवसान
नित्य आपनी उँजेरी मैं ॥ चिदाचिद देज
सनवन्ध निज आपुसै मैं मानि मानि सन्तत परे
हैं भुक्ति वेरी मैं । राखि लै चरन की सरन विद्व-
लेश मोहि माया मत वाद रितु पावस अँधेरीमें॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

कोज लपटाने पटताने परे सेजही पै कोज
करें काज वारि दीपक उँजेरी में । कोज कहैं
आजु का भई है विधिना की रात छैहे कव
प्रात ऐहैं सूर कितै देरी मे ॥ कोज कहैं मोहि
भये छैहैं जुग नाम जगे कछु ना समात कहा
वात बुधि मेरी में । कोज कहैं देखि चकवाकहिँ
स्र काहे तुम रात दिन जान लेत पावस अँधेरीमें॥
प्रेम कालि अलि राति रही जात हौं अकेली
फँदे वा घर पै नावन कों जामन दहेरी में ।
उन्हौं खिन वा दिसि तें आइगो सुसील कान्ह
पायस ३ कुहू ना परी वदरी घनेरी मे ॥ हौं तो

भट भेरी होत भूमि घहराय गिरी ऊपर तें वाहू
गिघी पड़ी वड़ी फेरी में । आज तें तिहारी
सौह कैसहू नसाय काज घर तें कटूंगी नाहिं
पावस अंधेरी में ॥ २ ॥

गंधीलो जिला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जो
उपनाम ब्रजराज ।

नीलमनि भूषन सुअंगन कुरंगसार धारी
जिन सारी सो अलिन रंग हेरी में । तैसो घन
धार कोपसार अन्धकार परी सोंधे की सुवास
सों दुरेफन की घेरी मे ॥ जाति ब्रजराज सों
मिलन कुंजधाम वाम वाम सों उतरि काज टू
सरी न नेरी में । सावस सहेट चली वा वस हिये
के एक रजनो अमावस औ पावस अंधेरी में ॥

बाबू भगवतीचरण सकला जिला शाहाबाद ।

खंजननयन वारी वारिज बदनवारी जाति
है मिलन मीत प्रीत की घनेरी में । विद्युत द-
मकवारे भूषन अनेक धारे हारै हैं कुरंग कारे
चाल की अदेरी में । नेक ना नयून हीत रूप

की छटान वाकी चलन सनेहसनी बूंद की त-
रेरी में । गात जातरूप की जचार्ई होत जात
मानो भगवती कसौटी सी पावस अंधेरी में ॥

महाराजकुमार गौरीप्रभादसिंहजी गिहौर ।

दीपक बुझाय वाल भौकतौ भरोखा मग
लाल मिलिवे के काज पंच सर फेरी में । वदन
मयंक कर ऊपर विराजमान हेयो ठिग जाय
अत अजब उजरी में ॥ घाऊयो हिय बेर बेर
निरखि सु ऐसी छवि समता अनूठो यहै अच-
रज हेरी में । मनु निकलंक पूर सरद मयंक
उयो प्रफुलित कांज पर पावस अंधेरी में ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलाल जी गयावाल ।

घेर घेर घूम रहें घन आसमान बीच भूम
रहै द्रुम मिलै वेलिन की टेरी में । गिरधारी-
लाल कहै सूना घाट वाट त्यांही जगै मुकतान
ज्योति जेहरी घनेरी में ॥ संग ना सहेली काज
वैस मलबेली अति नम री पिरात गहै रसरी
इयेरी में । तो सी मुकुमारि को ये वारि भरिवे
को राय भेज्यो को गंवार ऐसी पावस अंधेरीमें ॥

घोर वन भीतर कठोर बाघ चारो ओर दौ-
रत है ठौर ठौर बेलिन की ढेरी में । नगर न-
गीच नहि डगर सगर खोटौ अहें अजगर केते
कन्दरा घनेरी में ॥ गिरधारीलाल बेसुमार बट
पार वसें याही ते कहति बार बार ढेरी में ।
भारी दुख पाइहौ अतीहीं पछताइहौ जो जा
इहौ बटोही यह पावस अंधेरी में ॥

सिद्धोर (काठियावाड) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई
प्रीतम प्रदेश वाकी आवत संदेश नाहिँ नि-
लज ननद गई सासुरे सवेरी में । सास दिन
सातक तें गई गंग न्हावन कीं आयगी सो आ-
जही तें तीनरी उँजेरी में । घर में न और कोज
रहत अकेली हम यातें कहूँ यामिनी में आव
आज ढेरी में । गोविन्द मुकवि ऐसे सूने घर
माहिँ कैसे मोतें रघ्यो जाय आली पावस अँ-
धेरी में ॥

काहे कीं करोध करि कहावो कठोर वैन धी-
रज कीं धारो उर भापत हूँ ढेरी में । ननद नि-

गोड़ी नित हेरत हमारी और यातें उर डरी
चलु छौनी पर हेरी में ॥ मिलन समय नाहिँ उ-
ज्जलही यामिनी में तातें करजोरि कहुँ आज
वेर वेरी में । गोविन्द अवस्य आय आपकीं मि-
लेंगी हम सौंह तें कहत अब पावस अंधेरी में ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

अंग अंग भूपन जवाहिरजटित साजि चन्द
चपि जात मुख चमक उँजरी में । सारी जर-
तारी कौ किनारीदार सोहै वर वारी जौन अ-
तर गुलावन कौ टेरी में ॥ बेनी द्विज तडिता
तडातड तमकै तहाँ निसा घोर कारी घटा धि-
रका घनेरी में । करत मसाल सी प्रकास वा र-
माल वाल जात प्रानप्यारे पास पावस अंधेरी में ॥

फानपुरनिवासी पं० ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी ।

पिय परदेस में सँदेसज न पायो कहु तौ-
नई अँदेस के कलेम माहि घेरी में । ननद सि-
धारी दिन चारिक ते सासुरे को माइके जठानी
को रहति अयमेरी में ॥ ललित परास करि रोस

वैर बाँधे रहे कोऊ ना सुनत मेरी वीस वेरी
टेरी मैं । संग ना सहेली कोऊ निपट अकेली
आजु कैसे रहों भौन माहि पावस अँधेरी मैं ॥

चन्द्रकला वाई - वूँदी ।

आवत सघन घन घोरि घोरि और और
ठार ठार मोरन के सोरन की फेरी मैं । चातक
चिकारैं ये बलाक दौरि दौरि मारैं हारैं मन दा
मिन की दमक घनेरी मैं ॥ चन्द्रकला जुगुनू ज-
साति चिनगारी देत वालम भये हैं लीन कूबदार
चेरी मैं । कैसी करों कहाँ जाऊँ कैसे निरवःह
कगैं येरी वीर मावस की पावस अँधेरी मैं ॥

सावन सुहावना ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला की महाराज

उपनाम रससिंधु ।

वाटर जु आये घेर कारे ओ सपेद भूरे वर-
सत मेह नेह सोभा सरसावना । कहै रससिंधु
तहाँ बड़े हे तलाव आगे सघन निकुंज अति

बाग मनभावना ॥ कीयल पपीहा मोर दादुरह
करै सोर भींगुर की भनकार काम उपजावना ।
भूलत हिँडारे स्याम राधागल बाँह डारि सखी
जो भुलावै लगै सावन सुहावना ॥

बामू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजीवन काशी ।

तरुन तमालन सीं लपटी लवङ्गीलता दुखद
अनङ्ग लाग्यो सुख सरसावनो । कैसे के विदेसो
उर धीरज धरेंगे धीर मोरन को सोर हिये ला-
गत डरावना ॥ ऐहें बलवीर मन आवत हमारे
ऐसा वीतिगो प्रचण्ड पापीं ग्रीषम भयावनो ।
कादरकरावनो प्रवासी विरहीन मन आयो मन
भावन या सावन सुहावनो ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज वेनी कवि ।

सुख सरसावनो है वारि वरसावनो है म-
दन जगावनो है नेह की कटावनो । घन घह-
रावनो है विजु चमकावनो है कीकिल पपीहा
मोर मोद उपजावनो ॥ वेनो द्विज आवनो ह-
मारे है तिहारे हेत ऐसो समै चाहिये वृथाही

(१३)

ना गवावना । मान तजि झूलौ चली संग मन-
भावन के आये मदनस वीर सावन सुहावना ॥

काशीनिवासी बाबू साधवदास जी ।

जैसी यह छाई है घटा री घनस्याम आली
तैसी निठुराई करि बैठी तूं मनावना । त्रिविधि
वयार वहै काकिल पुकार कहै चलिये निकुंज
साह कीजि मनभावना ॥ साधव जू मोहि को प-
ठावत है वार वार तू तो मनुहार करै प्यारे को
सतावना । पावन परै है मनभावन तिहारो वीर
चलिये निकुंज लगै सावन सुहावना ॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथ जी ।

छाई छिति मण्डल हरीरी वर वागन में
फूलै लगे सुमन सुगन्ध सरसावना । हरी हरी
दूबन पै वगरी बहूटीवीर पन्ना के फर्श मंजु
मानिक विछावना ॥ चातक चकोर मोर को-
किला अलापें घने वारि वारिवाहक लगे है व-
रसावना । मोद सरसावना अंग दरसावना
विनाद वरसावना है सावन सुहावना ॥

कवि पं० अम्बाशंकर जी—काशी ।

जधो यह सूधा सो सँदेसो कहि दीजो भले
 केकिन की केका कूंक कोकिल जुहावने । बा-
 दर को सादर समूह भुक्थो आदर सीं चादर
 सो नीर चहूं परतो फुहावने ॥ संकर सुकवि
 वन वागन में वारिन में इन्द्रबधू पातिन को रंग
 चुचुहावने । सरिता सरोवर को संगम सुनाय
 फेर आवने सुनावने जू सावन सुहावने ॥

वेपति की तौय ताहि तावने सतावने है
 दम्पति मिलावने मल्लार मोद लावने । अ-
 इन कँपावने डरावने विदेसिनहूं भावने सु-
 जागी जाग जुगति बढ़ावने ॥ केकी कुहका
 वने घनेरी घटा छावने जु पानी वरसावने
 कवी को हलसावने । संकर सुनावने वनावने
 कवित्त जाड़ि आवने भयो ये मस्त सावन सु-
 हावने ॥

वावू हरिशंकरप्रसाद बनारस ।

नागिन सी कारी राति उलटि पलटि डरै

तीर ऐसो लागत है गावनो वजावनो । भूले भो-
लुआ की धरि हियरा भुलाय देत कजरी सुने
ते मुख कजरी लगावनो ॥ साँची वात कहौ
हरिशंकर दोहार्द करि मोकी ना सोहात मन
मोद दरसावना । बालम विदेस ते तुरत आय
जाय आली तवतौ हमारे हेतु सावनसोहावने॥

काशीनिवासी वृजचन्द जो वल्लभीय ।
सोर करै चौहैं चारु कोकिल कि सोर मोर
ठौर ठौर भयो है बलाकनि को आवनो । नदौ
नद नारनि में घोर जल जोर छायो मंजुल म-
रालनि को छै गयो परावनो ॥ चातक तृषित
की तृषा न विनु स्वाति जाति बाढत निरन्तर
प्रवल प्रेम पावनो । अजहूं न आयो मनभावनो
हमारो छायो उमड़ि घूमडि घन सावनसुहावनो॥
महाराजकुमार गौरीप्रसादसिंहजी गिधीर ।
दादुर पुकार तैसी भनकार भिल्लिन की
धुनि सुरवान की अनंग उपजावनो । चवला
चमक संग मेह गरजावन ल्यों मंभा पौन ला-

वन पपीहरा को गावनो ॥ हिय हुलसावन ब-
सावन समाज सुख मन तरसावन लगत मन
भावनो । ताप को नसावन सलिल बरसावन
सुमोद सरसावन ये सावन सुहावनो ॥

गंधौलो जिला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जो
रपनाम ब्रजराज ।

गावन मलार सुर तार को बजावन न भा-
वत है एरी मोको भूलन भुलावनो । घेरि घन
आवन मयूर रट लावन औ चंचला को चारो
ओर चमक चलावनो ॥ चूनरी रंगावन सुमेंहदी
रचावन अलीगन को आवन विनाहक सता-
वनो । टावन विना री ब्रजराज मनभावन के
लागे विन लागत न सावन सुहावनो ॥

गयानिवासी प० गिरधारीलाल जो गयावाल ।

धूमिवो घटा को अरु भूमिवो सुवेलिन की
दामिनी दमकिवो पपीहा रटि लावनो । भेंकन
को बोलिवो औ डोलिवो समीर सीरे वार वार
भोरहुं को सोरहु मचावनो ॥ गिरधारीलाल कहै

भूलिबो सु भूलन की ल्योंही बहु फूलन के से-
जहिँ विछावना । पावन परति याके नाव नहि
लीजै मोहि भावन विना न लागै सावन सुहा-
वनो ॥

काहे को अयान भाँति मान ठान वैठी आज
सुनि ये चवाइन के भूठ वहकावनो । ईस की
दुहाई वीर साँच में बखानत हों अकलंक सरल
है तेरो मनभावना ॥ कहै गिरधारीलाल मान
कही मेरी अब बेगि छाड़ि दौजै चित द्वेष उप-
जावनो । भौंहन चढ़ावो जनि क्रोधहिँ बढावो
जनि बिरथा बितावो जनि सावन सुहावनो ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

पूछति कहा री वीर वार वार मेतिं आप तू
तो है सयानी कहा तोहि समुभावना । आवना
तो दूरि रछौ धावना पठायो नाहिँ कैसो नि-
रसीही हाय होय रछो भावनो ॥ जावनो उन्हीं
पै सब हालत सुनावनो बुभावना वनाय बात
काह भँति लावनो । दिन ना बितावनो भु-

लावनो न मेरी सुधि आइ जानो रहते री सा
वन सुहावनो ॥

धन्य हौ हमारे मनभावन कहावन की आ-
वनो तो दूर ना सँदेसह पठावनो । कहाँ लौं
उराहनों पठाऊँ लिखि प्यारे तुमैं जानत अ-
जान वनै ताहि का बुभावनो ॥ कौन प्रीति
रीति या जु आस दे निरास करौ वरसों पर आ-
वनो न, परसों कहि जावनो । आपुही विचारियै
सुसील विनु आप कैसे काटैं दिन रात आयो
सावन सुहावनो ॥

बाव शिवनन्दनसहाय हेड किरानो जजी पटना ।

दामिन दमंक अस घन को घमंक घोर जु-
गनू चमंक हीय भीत उपजावनो । कोइल को
कूकें मोरगन की कुहूकें भंभा पौनहूँ की भूकें
हूकें लूकें वरसावनो ॥ नाहर से गरज रहे हैं
नद नाहरहूँ नाह विनु चाहे ये वियोगिनी च-
वावनो । ऐसीही अपावन ल्यों अबला सतावन
को छिः छिः सिव भाषत हौ सावन सुहावनो ॥

धावै लगें धीरे धीरे धुरवा अकास बीच मे-
घन को शब्द हीन लाग्या मनभावना । नाचै
लगै मोर चहुँ ओर ल्यों उमंग भरे गावै लगे
कोकिल सु हीय हरसावना ॥ भूमै लगीं द्रुमन
पै लोनी सु लवंगलता गूँजै लगै भौर मनमोद
उपजावना । दुख भरसावन सनेह सरसावन
सो आय गयो फेर सिव सावन सुहावना ॥

चन्द्रकला वाई - वूँदी ।

वरषि वरषि वारि हरष बढ़ावत है करखत
चित्त री मलारन को गावनों । औरैं भाँति के-
किन की केका सुनियत आलौ चातक मुनात
वैन सुख सरसावनों ॥ चन्द्रकला मन्द मन्द शी-
तल समौर वहै फरकत वाम अंग मेरो मनभा-
वनों । ऐहैं घनश्याम घन श्यामन में वीसों विसैं
आवन लग्यो है अब सावन सुहावनों ॥

सिद्धोर (काठियावाड) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई

औपधि उपावन कों वुन्द वरसावन कों रंग
नभ सावन कों चित में सुहावना । मान के

मिटावन कों प्रेम सरसावन कों काम उपजा-
वन की संपा चमकावनो ॥ गोविंद के गावन
कों वेल के वढ़ावन कों भूमि हरियावन कों
मोर के नचावनो । बिरही के तावन कों संगि
के रिभावन कों आयो मनभावन या सावन
सुहावनो ॥

वारिद के वुंद मन्द मन्द बरसत अरु मन्द
मन्द बोलत मयूर मनभावनो । चंचला चमक
चहुंओर लसे मन्दमन्द मन्दमन्द मारुत सुहात
सुख छावनो ॥ मन्दमन्द भूलत हिंडोरे नर नारि
सवै मन्द मन्द पपिहा पुकारै पिय आवनो ।
गोविंद अनेक ऐसे कौतुक उपावन कों आयो
मनभावन या सावन सुहावनो ॥

कानपुरनिवासी पं० ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी ।

पपिहा पुकारै तौन प्रानही निकारै मारै
कोयल हुंकारै धुरवानह्र की धावनो । भिल्ली
भनकारै जरै जूगुनू प्रजारै भरै भारै सी चपल
चपलान की सतावनो ॥ मोर सोरि सोरि कान

फोरि कै जगावै मै न ललित न भावै नेक अलि-
गन गावना । कैसे धरौं धीर मनभावन विदेस
वीर मोहि तौ लगै ना यह सावन सुहावना ॥

छवीले कवि—वनारस ।

पठ फहरात तामों त्रिविध समीर कढ़ै रंग
वर केसर सुगन्ध सरसावना । सुकवि छवीले पग
नूपुर भनकदार भनकाख्यो भोंगुरन मज अरु-
भावना । घोर स्वर वाँसुरी वजत गरजत मानो
हसन दसन दुति दामिनी लजावना । वीर वृज
वीथिन वहार वरषा है संग आये घनस्याम वनि
सावन सुहावना ॥

छविपुंज बगरधौ परै ।

काशीनिवासी श्री १०५ हनुमानजी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

अम्बर जु कारी घटा मोतीमाल वुंदे परे सांग
लाल इन्द्रधनु खूब अगन्यो परे । कहै रससिंधु
फेर कोयल सौं कूके कराठ नूपुर की भनकार

देख नगस्यो परे ॥ चली वानि कुंजन में प्रेम जो
सरोवर पै श्याम संग जाय मिली पास डगस्यो
परे । राधिका को रूप मानो चंचला की चका-
चौंधि कुंज की लता तें छवि पुंज बगस्यो परे ॥

वाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजीवन काशी ।

लाहु लाहु दिन में सुलाख बार भाखौ तुम
वाद बलवीर तू हमारे रगस्यो परै । लाजँ यदि
कुह्न की अँधारी निसा माँह तज तन को प्र-
कास माहताव ज्यों बस्यो परै ॥ धारत ही गेह
की सुदेहरी के आगे पग ठौर ठौर भौरन को
भौर भगस्यो परै । कैसे ताहि लाजँ लाल मा-
लतीनिकुंज प्रति अंगन ते वाके छविपुंज बगस्यो
परै ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज वेनी कवि ।

मुख महताव सीं सहस्र गुना आवदार ही-
रन को हार चारु कुच रगस्यो परै । वेनी द्विज
वर्णत वनै ना वर्ण तेज ज्वाल कीटि भारतण्ड
सो प्रकास अगस्यो परै ॥ जिते गुन रूप के वि-

धाता ने बनाये वेस राधिका के गातन विलोकि
सगख्यो परै । राहन में कुंज के चली तो मै दे-
खाजँ लाल छाहन में जाके छविपुंज वगख्यो परै ॥

आये प्रात कित ते प्रभात हौ हमारे भौन
अंग अंग सिथिल विलोकि सगख्यो परै । वेनी
हिज वीलत हौ आलसवलित वैन चलत दूतै
ते उतै पग डगख्यो परै ॥ अंजन अधर पीक अ-
रुन कपोल राजै त्रिन गुन माल उगि उर अ-
गख्यो परै । लाल लाल परम ललाम लाल आं-
खिन ते आज गुंजमाल छवि पुंज वगख्यो परै ॥

बाबू हरिशंकरप्रसाद बनारस ।

जमुना के तीर दार फूल मार खिलिवे मों
कहाँ लों सँभारै कम्हा अंचल टख्यो परै । गजव
गुलाव नेक गुच्छ को उठावै कर मानौ मैन साचे
माँहि कंचन टख्यो परै ॥ भनै हरिशंकर लचकि
लंक लफि जाति एक कुच टाँकै एक कुच उ-
वख्यो परै । अंग अंग प्यारी के अनंग को तरंग
लखि स्याम होत दंग छविपुंज वगख्यो परै ॥

पंडित अम्बिकादत्त व्यास—काशी ।

आईं घों कहाँ ते विनु कारन लुनाईं माईं
भरी मधुराईं सों बिलोकन लगी हरै । कारो
ककरेजा ज्यों करेजा कों निकाारि रघ्यो सौप-
हार धीरज के हार अरपी गरै ॥ कवि अम्बादत्त
भुसुकान वान आईं कछु वात के कहत जनु
फूल की लरी भरै । देखो गोरटी की छोरटी के
या धुरैटे अंग चारिक दिना तें छविपुंज वगछ्यो
परै ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

पद कांज की लुनाईं जेहर जरावताईं किं-
किनी कलोल कलहंस भगछ्यो परै । पीतपट ल-
कुट मकुट वनलाव सोंहैं मोहैं हैं सुठार हार
ही मे ठगछ्यो परै ॥ कुण्डल की जोत मुख चन्द
तें दुचन्द होत मन्द मन्द तान ते सुमान पगछ्यो
परै । माधव जू मौजभरे चलु री देखाऊँ जहाँ
माधुरी निकुंज छविपुंज वगछ्यो परै ॥

कवि पं० अम्बाशंकर जी—काशी ।

असित सिंगार सार प्यार सों प्रिया पै चली
काँटे की गलीन अंग २ रगख्यो परै । करी हरी
चक्रवाक कीर भौर मार मोर जोर भरे दौर २
भौर भगख्यो परै ॥ जलज सुवास को निवास
आस पास होत हास के प्रकास फूल रास स-
गख्यो परै । इन्दु ते करोर गुनो कानन में आ-
नन तें संकर सुकवि छविपुंज वगख्यो परै ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

भूलत हिँडोरे आज स्यामा स्याम वंसीवट
पवन भुकोरै पीतपट फहख्यो परै । ल्योंही जर-
तारी सारी सुभग किनारीवारी भनत सुसील
वार वार उघख्यो परै । ता समै की सोभा नहि
कासु मन लोभा अंग अंगनि लुनाई छिन छिन
छहख्यो परै । वारन तें हारन तें हँसनि उचारन
तें अकथ अतीव छविपुंज वगख्यो परै ॥

वैठी स्यामा स्याम-सोच सूने केलिमन्दिर
में घेरि घन आयो वार वार घहख्यो परै । जैसे

जैसे वसंत अपार भरभर नीर तैसे तैसे नैनन
ते लोर कह्यो परै । ऊरध उसास चलै आस
ते निरास भई कौनहू उपाय मन नाहिँ ठह्यो
परै । हाय वही कुंजन में कह्यो करै है जहाँ
संग में सुसील छवि पुंज बग्यो परै ॥

महाराजकुमार गौरीप्रसादसिंहजी गिहौर ।

हिलन हमेल हार हीरन हसन मन्द भन-
कार पैजनी पै प्रान फह्यो परै । चातुरी बचन
चारु चिवुक चलन मन्द चचल चितौन पर चित
छह्यो परै ॥ लोनी लट लोथन लचीलो छीन
लंक पै लजीलो मन लालची लटू ह्वै लह्यो
परै । वारिज वदन वेदी भाल त्यों वसन बेस
वेसर पै आज छविपुंज बग्यो परै ॥

गंधीलो जिन्ना सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जो
उपनाम वृजराज ।

कहाँ रैनि जागे मो अभागे घर आये भोर
शंगन अनंगहू ते रूप अग्यो परै । जैये तहाँ
जैये जू मनैये ना वितैये दिन उनसों इतै न कहूं

आनि भगस्यो परै ॥ मेरे तज उनके औ उनके
तो उनहीं के एही ब्रजगल अब क्यों न डगस्यौ
परै । लाली भरे लाज भरे आलस-समाज भरे
नैनन ते आज छविपुंज वगस्यो परै ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलालजी गयावाल ।

भौंहन विसाल अरु बोलति रसाल वैन हा-
लर्दे जी गौन आर्दे वा गुवाल के धरै । इन्दु के
से आनन औ अरविन्द के से दृग मन्द मन्द
चाल में गयन्द मद को हरै ॥ गिरधारीलाल
अहै महा सुकुमारि वाल सिसकी भरति जौन
नेकु कर के धरै । आज वृजराज सै मिलैहीं ति-
हि संग जाकी अंग अंग संजु छवि पुंज वगस्यौ
परै ॥

कानपुरनिवासी पं० ललितप्रसाद जी त्रिवेदी ।

छोटी २ वूँदन फुहारै घन भारै नीर पवन
भुकारै डारै भूमि रगरी परै । गावति मलारै
अलि विविध विहारै भरि धारै मुद पपिहा पु-
कारै अगरी परै ॥ भूलति हिँडोगे स्यामस्यामा

वहु बाम संग तीनी लोक सुखमा ललित ड-
गरी परै । कुंज खग गुंज अलि मंजु मिली छ-
न्दावन आजु सखि कुंज छविपुंज बगरी परै ॥

चन्दकलाबाई—बूंदी ।

गावत गुविन्द गीत मुरली मनोहर में लै लै
नाम तेरो री विशेष उघस्यो परै । नाचत गुवाल
बाल दै दै ताल नाना भाँति लखि लखि लो-
यन की मन तगस्यो परै । चन्दकला लपटो ल-
वंगलता तालन में बहत बयार में सुगन्ध घबस्यो
परै । गुंजत मलिन्द आली डोलत निकुंजन में
चलि री विलोकि छवि पुज बगस्यो परै ॥

चौदहवां अधिवेशन ।

आज वा कदम्बतरे रंग बरसत है ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

सघन निकुंज तामें फूल की हिँडोरा साज
फूलन की भूमकाहू सोभा सरसत है । कहे
रससिन्धु तहाँ भुण्डन की भुण्ड सखी राधिका

विराजी वाम देख हरसत है ॥ बहल जु घेर घेर
गरजें वे बेर बेर चंचला चमकौ मेह आयो दर
सत है । भूलत हिंडोरे स्याम कालिन्दी कूलन
पर आज वा कदम्बतरे रङ्ग बरसत है ॥

सुन्दर सलोने नैन पैने जी रसीले बैन देखे
जिय परे चैन मैन हरसत है । कहै रससिन्धु
फेर करत सिंगार खूब दर्पन ले देख रही सोभा
सरसत है ॥ बातन बनाय नेह घातन लगाय
बाल स्याम सो मिलाय गई कुच परसत है ।
अंगन सों अग लाय चूमे मुख बेर बेर आज वा
कदम्ब तरे रंग बरसत है ॥

कवि पं० अम्बाशंकर जी—काशी ।

मन्द र गरज तरज डफ ठाल बजें भिल्ली
भनकार भाँभा वाँकी सरसत है । कूकत सि-
खण्डी झकि फूकें तुरुही की तान अविर मुकेस
बज जुगू दरसत है ॥ संकर सुकवि नृत्यकारी
दामिनी है तहाँ गावत धमार पौन मंभा हर-
सत है । घन पिचकारी लिये पावस रचाई फाग
आज वा कदंबतरे रंग बरसत है ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

आली री दिखाज तोहि कौतुकी कदंब एक
मूलमे जुगल कंज भूमि परसत है । तापै जुग रंभ
खंभ दामिनौ दमक तामै सर पै कपोत सोम
सोभा दरसत है । सोम पै कलापी कीर खंजन
कलोल करें खंजन पै नीलकठ सोभा सरसत
है । माधव सो न बोलै तूं चलियो हमारे संग
आजु वा कदंबतरे रंग वरसत है ॥

बाबू हरिशंकरप्रसाद बनारस ।

साँवरो बटोरि कै अनेक रूपवारी नारी
काहू मुख चूमै काहू कुच परसत है । डर बृष-
भान के अकेली कैसे जाँउ आली छटा देखिवे
को मेरो जीव तरसत है ॥ मानौ हरिशंकर अ-
मित भाँति साजि पाँति देह वनिता की धरे
काम दरसत है । काल्हि लौं उड़ि कै गरद खड़
खड़ाने पत्र आजु वा कदंबतरे रंग वरसत है ॥

काशीनिवासी वृजचन्द जी वल्लभीय ।

चलै री चलै तू अब करै ना विलंब नेक दे-

खिवे को वीर मेरो चित्त तरसत है ! घेरे घन-
घोर बोलैं काकिल किसोर मोर चारोओर त्रि-
विधि समीर भरसत है ॥ भूलत हिँडोर प्यारे
नवलकिसोर दोऊ बाजत अनेक वाद्य मोद द-
रसत है । गावत हिँडोर मेघ मधुर मलार गुंड
आज वा कदंबतरे रंग वरसत है ॥

काशोनिवासी पं० केदारनाथ जी ।

हरी हरी डारिन मैं हरित हिँडोर राजै ह-
रित फाँदे हैं फाँद डोर दरसत है । हरी हरी
सखियाँ भुलावति हैं स्यामा स्याम गावती म-
लार मंजु सोभा तरसत है ॥ कारी अधियारी
भारी बीजुरी चमकै चारु मन्द मन्द मारुत फु-
हीरी सरसत है । भींजि पट अंगन ते रगळू के-
दार चुँवै आजु वा कदंबतरे रंग वरसत है ॥

कोपागंजनिवासो मारकंडेलाल उपनाम विरजीव कवि,

चंचला चमक चकचौंध चहुँओर आप अविर
अँधेरो धुम्भ धाक दरसत है । पिहिक मयूर
हारी राग भींगुरन भाँभ गरज सृदंग जाते अंग

हरसत है ॥ कवि चिरजीव चलो लाडिली दि-
खाऊँ जहाँ पावस में फाग की प्रमोद सरसत
है । करि कौ उमग मेघमण्डल महीतल मैं आज
वा कदंब तरे रंग वरसत है ॥

जुवती बेचारिन ते जल मे जाड़ाये हाथ
जाके नंग अग ते अनंग सरसत है । आप चढ़े
कदम चोराय चीर कालिँदी पै कान्ह की कलानि
में खाटाई दरसत है । कवि चिरजीव कछौ
ताहूँ पै जु आवो पास पैहा तबै बसन जु अंग
परसत है । दंग हाथ जात लोग टंग को बिलोकि
जाके आज वा कदम्बतरे रंग वरसत है ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

लाल फालसाई औ गुलाबी गुलावाँसी पट
काह्र पै वदामी गुलेनार सरसत है । जरद च-
मेली काहूँ काहु धानी गम्बकी त्यों काहूँ आ-
समानी पीरोजई दरसत है ॥ सकल अनन्दभरी
भूलतीं हिँडारे चारु भींगि पेंग मारें लखि जीय
तरसत है । चलि री सुसील प्यारी लोचन की

लाहु लहै आज वा कदम्ब तरे रङ्ग वरसत है ॥

एक मिलि एकन सों सुर हरषाय आली
मारती है तान जाय नभ परसत है । एक लै
सितार एक ढोलक पखावज लै एक बाँसुरी व-
जाय संग सरसत है ॥ चहूँओर लाखन की भीर
अभिलाष भरी एकन के आगे एक जान तरसत
है । सुघर हिँडोरे स्यामा स्याम जू सुसील भूलै
आजु वा कदम्बतरे रङ्ग वरसत है ॥

महाराजकुमार गीरीप्रसादसिंहजी गिहौर ।

हरषि हिँडोरे चढौ नागरीन संग ब्रह्मभान
की किसोरी हिये मैन वरसत है । वमन सुवेस
सजे चंपई हरीरो लाल भूलै भुकि भूमि ल्यों
उमंग सरसत है । लर पुखराज पन्ना मानिक
लौं कौधौं प्रतिविम्ब इन्द्रधनु की अवनौ पै दर-
सत है । भूलन में उड़त दुकूल की बहार कौधौं
आज वा कदम्बतरे रंग वरसत है ॥

गयानिवासी पं० गिरधरोलालजी गयावाल ।

मलि मलि गाल पै गुलाल है उमंग भरे

ग्वालन के सहित गोपाल हरसत है । कहै गिरधारीलाल गारी पढ़ि बार बार युगल उरोज पर कर धरसत है ॥ हौंती उतही ते चलि आवति हौं एरी वीर देखे ना हमारो रूप कैसेा दरसत है । अम्ब की सौं भूलहूं न जाय वहि कुंजओर आज वा कदम्बतरे रङ्ग वरसत है ॥

गधौलो जिला सीतापुरनिवासी बाबू जुगलकिशोर जी
उपनाम ब्रजराज ।

दौरि दुरि आली देखु दीपति दुहूं को दुवा दंपति सरूप से अनूप दरसत है । गोरे स्याम-ताई स्यामताई में गोरार्ई आई रंगन को भाँई रंग औरै सरसत है ॥ राधे में कन्हार्ई ब्रजराज वृषभानुजार्ई अंग प्रतिविम्ब अग अग परसत है । एरी मुख साज को समाज करि ठाढे सखी आज वा कदम्बतरे रंग वरसत है ॥

बाबू शिवनन्दनसहाय हेड किरानो जजी पटना ।

गोरी वैस थोरी लिये रोरी ल्यों गुलाल भोरौ रची है सु होरी पेख हीय हरसत है । लाल मेघ

माल नार्द्धे' छार्द्धे है चहूघा सिव तामें घनस्थाम
घनस्थाम दरसत है । डफ की अवाज सोई गरज
दराज होत वीजुरी सी राधा रूप ओप सरसत
है । होयगो अनन्द अंग अंग जाय देखो ढंग
आज वा कदंबतरे रंग वरसत है ॥

सिंहोर [काठियावाह] निवासी कवि गोविन्द गोलाभाई ।

जाके तल तेह धरि दोऊ उठ गये पुनि फे-
रही मिजन वाके जीव तरसत है । यातें अप-
सोस करि दोऊ पकृताइ अति आंखिन तें आं-
सुन के बंद वरसत है ॥ गाविंद गुमान तजि
सोई एक दूजा अब आप तें मनाइ आली हिय
हरषत है । चाह तें सकारे सोय गोपिका गुपाल
मिलि आज वा कदम्बतरे रंग वरसत है ॥

सोहत सघन बन बेस अरु बृक्षन तें धूप न
धरा में तहाँ नेक दरसत है । भरना भरत एक
उते अभिराम ताके सीतल सलील लखि हीय
हरषत है ॥ गोविंद सुकवि तहाँ कदंब कदंब
जू के विमल विराजी अति शोभा सरसत है ।

गोपिका गुपाल मिलि खिले तिति फाग मानो
आज वा कदंबतरे रंग वरसत है ॥

कानपुरनिवासी पं० ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी ।

नवलकिशोरी गोरौ थोरी २ बैसवारी रेसम
की डोरी गहे सोभा सरसत है । भूकन भुलावै
कोज गावै हरखावै कोज कोज रतिभाव भरी
धाड़ परसत है ॥ हँसति हँसावति बढावति
प्रमोद मन ललित अनूप सुख सोभा दरसत है ।
भूलै स्यामा स्याम संग जुगुल अनंग भरी आज
वा कदंबतरे रंग वरसत है ॥

मनोज महाराज की ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

वाजत नगारे घन धुरवा निसान लिये चं-
चला चमंके तोप फेर जी अवाज की । कहै र-
ससिंधु तहाँ वटल की फौज साज हाथिन पै
वैठ कारे लावत समाज को ॥ कोयल पपीहा
मोर टाटुरह झिल्ली और वाटत है मेह दौर वूँदे

भर आज की । पवन भकीर जोर करत है मोर
सोर आवत सवारी ये मनोज महाराज की ॥

चलो आज कुंजन में सघन निकुंजन में स-
खिन के पुंजन में सोभा वो समाज की । कहै
रससिन्धु फेर जमुनार्जा पास वहे बोलत पपीहा
मोर मधुर अवाज की ॥ सखी बोले आइ तहाँ
करी है तयारी जहाँ वृक्षन पै डोरी डार भूलन
के साज की । भुलत भुलावत ओ आप स्याम
भूलत हैं करत कलौले ये मनोज महाराज की ॥

पंडित अश्विकादस व्यास - काशी ।

वेदिका बनाई वक्ष्यल की सुखच्छ अति
अधिक लुनाई नीर सीची सुख साज की । पिंड
जुग राखे तापें मधुर निकार्ई सने हास दूधधारा
ठरकाई इहिँ काज की ॥ कवि अस्वादत्त रोम
पाँति तिल पाँति राजै नौवी ससरनि बलि
ठानी छवि छाज की । तीय तन तीरथ में जो-
वन से सित्र आज श्राद्ध विधि कीनी है मनोज
महाराज को ॥

पण्डित अम्बाशङ्कर जी - काशी ।

चलो ३ तीर भानुजा कदंब तरे भूलत हिँ
डोरे दोऊ सोभा अति आज की । एक ओर सं
कर भुलावै बनि गोपी रूप दूजे अरधङ्गिनि ह्वै
गोपी गुरु लाज की ॥ गावत मल्हार सचौ सा-
रद विसारद जे नारद बजावै बिन सातो सुर
साज कौ । वारीं छवि रति की निहारि राधिका
पै कोटि कोटि ब्रजराज पै मनोज महाराजकी ॥

पं० केदारनाथ जी बनारस ।

आयो पुनि ब्रज पै पुरन्दर प्रकोपित ह्वै द-
मक दिसान होत दामिनी दराज की । घेरि
घन घहरि घमण्ड घहरान लागे चातक चकोर
मोर कोकिल अवाज की ॥ नाथ बिनु धीरज
धस्यौ ना जाइ पावस मे कैसे कै केदार जू वि-
तैगौ निसि आज की । जधो जाइ मोहन ते
कहियो सँदेस पेरो पीर सहि जाइ ना मनोज
महाराज की ॥

वा० हरिशंकरप्रसाद जी—काशी ।

ऐसो है उचित कि बियोग को पकड़वाय
भेजि दें सिन्धुपार राह उखमाज की । नारी
औ पुरुष को निहायत सतावत है प्यास भूलि
जाय चाह होत न अनाज की । याही मोह-
किमा जाकी होत न अपील कहूं भनै हरिशंकर
लचारी है रेवाज की । विरही मनुज दरखास
देत यकि गये कोरट दिवानी है मनोज महा-
राज की ॥

वा० माधोदास जी—काशी ।

कैधों काहू विरही ने ऐंच लियो मध्यभाग
कोर की गोलार्द्ध सोई दम्कैं द्विजराज की ।
कैधों सुधा सिधु माह विंब रविमण्डल को कैधों
रेख खाँची है विधाता सुख साज की ॥ कैधो
वस करिबे को माधव प्रिया को मन जन्ती ये
वसीकर औ मोहनी समाज की । चारु चपला
सी खासी नत्य राधिका की कैधों भूलती है
फाँसी ये मनोज महाराज की ॥

सजचन्द जो बलभीय—काशी ।

छवो रितु माहिँ छवो रितु की बहार हेतु
इहैं राजधानी है अनादि रितुराज की । चा-
तक चकीर मोर राजहंस कोकिलादि गावत हैं
कीरति अनूप वाग राज की । गौरी पूजिवे को
यहां आई है स्वयंवरीहु स्वामिनी जो आठहू
सखिन सिरताज की । ताही के बजत ये है
पायल सधुर संजु वाजें मनो दुन्दुभी मनोज
महाराज की ॥

मारकण्डेलाल उपनाम चिरजीवी कवि - कोपागंज ।

लिये खरग चपला चमकनि दिखाय आय
प्राणन सुखाय दीन्ही दीपन के नाज की । बूदन
के वान धरे सान वेधि गातन को वातन भुलाय
दीन्ही सहस समाज की ॥ कवि चिरजीव जाके
प्रीतम विदेश छाये आये नाहि अजों बेस बैस
मे अकाज की । खोज खोज मारतीं सरोजनैनी
को रोज चोजभरी घटा ये मनोज महाराज की ॥

भयो ना अंधेरो भानु छिपिते हमारी वीर

उड़ी रेनु छायो धुन्ध सारे मग ताज की । चप-
ला चमक ये न दीपत उलंग असि गरज न येरी
धुनि रन बाघ वाज की ॥ कवि चिरजीवी हमें
प्रीतम बिहीन जानि कीन्हो है समान बधिवे
के वेस साज की । घटा ये न नभ में हमारी
प्राणप्यारी सुनो प्राणहारी फौज ये मनेज म-
हाराज की ॥

अयोध्याप्रसाद (स्याम) बाकरगज - बांकीपुर ।

कठिन है जीतिवे को देह कामनी को देस
प्रवल है दल स्याम तीर नीक साज की । सो-
रहो सिंगार सोई शस्त्र वेसुमार जानो अंग अंग
सुन्दर सिपाह सब काज की ॥ धारे टोप कारे
कुच सोहैं फौजदार दोऊ मधुर नगारे धुनि
नूपुर के वाज की । जग यहरात फहरात जब
दूरही ते अंचल पताका है मनेज महाराज की ॥

गयामिवासी पं० गिरधारीलाल जी गयावाल ।

दौंके करवाल विकराल द्युति दामिनी के
तैसई पताका घूमै वकन समाज की । पैदल

सयूर अरु दादुरन फ़ैलि रहै घनघोर तोप बृन्द
प्रवल अवाज की ॥ गिरधारीलाल बाहै मिलु री
गुपाल संग कैसेह न रहिहै गुमानी वीर आज
की । मानिनी के मान गढ़ तोरिबै को चला
आवै सेना लिये पावस मनोज महाराज की ॥

बाबू शिवनन्दनसहाय हेड किरानी जजी पटना ।

कुंजन लतान नाहीं काम के वितान तने
भूमि हरिआई ना दरी है सख साज की । कारे
नाहिं वादर अतंग अतवारे सारे गरज न होत
धुनि सलख अवाज की ॥ चपला चमक नाहीं
खुले हैं सुकरवाल चातक की भीर नाहीं सेना
के समाज की । वूंदन को धारा ये न जानो
सर धारा सिव पावस चढ़ाई ना मनोज महा-
राज की ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

फूलन की धूनी वनी पटली सुफूलन की ल-
सति हिंडीरे डोरी फूलन के साज की । फूलन
की सेज तापै राजि ब्रजराज रहे फूलन की

साज सजी राधा छवि आज की ॥ फूलन की
माल गरे कंकन सुफूलन के फूलन के कर्नफूल
फूलन समाज की । देखि चकाचौंधी लगी सुधि
हू सुसील भूली रति रितुराज की मनोज महा-
राज की ॥

दृग अंधियारी छई सीस सित केस भये नि-
तही सिकायत है पचन अनाज की । तऊ रंजि
अंजन लगाय कै खिजाव चलें ठूँठत किताव
दवा धंभन दर्राज की । जात अवलागन कीं
घूरि घूरि देखत हैं होय कै निलाज नेकु लाज
न समाज की । सौक साज वाज की मिटी ना
राज वाज की सु मौज है हनोजहू मनोज म-
हाराज की ॥

महाराजकुमार गौरीप्रसादसिंहजी गिहौर ।

छिन छिन कानन की ओर बढ़ो जाति मन
मेरो लखि औरैं भयो सोभा कछु आज की । र
हत न नेक सुधि उसत अवैहीं तवै तन की न
मन की न सुखद समाज की ॥ इत उत जात

दौरि रहत न क्योंहू थिर बस करिबे को जग
विधि मनु काज की । सावक कुरंग कैधौ बि-
षम भुजंग कैधौ चपल तुरंग ना मनोज महा-
राज की ॥

गंधीलो जिला सीतापुरनिवासी बाबू जुगलकिशोर जो
उपनाम हजरज ।

लोचन लखात मदमोचन जपा के दल पज
पल रोमन समर सुख साज की । अधर कपोलन
हिये पै घने दीसैं छत रातेई दुकूलन बिलोकी
छवि आज की ॥ कित रमि रैन ब्रजराज भोर
आये दूत नित तित हित जित नित रति काज
की । रोज रोजवारी नहीं मौज चोज खोज मानो
ओजभरी मूरति मनोजमहाराज की ॥

कानपुरनिवासी पं० ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी ।

कोकिल के कूकनि मैं मारुत के भूकनि मैं
भौर मुख फूकनि मैं चातक अवाज की । किं-
शुक अनारन मैं मंजु कचनारन मैं वीरे अम्ब
डारन मैं सामा सजे साज की ॥ बाटिका सु-

बागन में विपिनि तड़ागन में ललित सुरागन
में दुति रितुराज की । जगत मभाई विरहीन
पै चढ़ाई करि फिरति दुहाई है मनोज महा-
राज की ॥

बाबू पयोध्यासिंह मधुवन तिला आजमगढ ।

बादर न होय चढी तोपें चली आवति है
गरज न होत फौली धुनि है अवाज की । बूंदें
ना परति बरषत हैं विषीले वान इन्द्रधनु है
ना है कमान रन काज की ॥ हरि-ओध धुरवा
न होहैं फाँस जेवरी है भर ना लगी है भारी
आयुध समाज की । बीजरी न होय एरी बधन
वियोगिनी को तीखन कृपान है मनोज महा-
राज की ॥

सिंहोर (काठियावाड) निवासी कविगोविन्द गोलाभाई

चामर चिकुर अरु गौन गजराज सोहे ज-
रज गुरज अति ओपे युवराज की । सोहे भुव
चाप अरु कोंधत कटाक्ष वान मेजा फहरात
नत्य दीपति दरान की ॥ कंचुकी कवच साज

कर्नफूल ढाल धरि नेवर निनाद शकशूर के स-
माज की । गोविंद सुकवि ऐसे बाल बपु सैन
साज आवत सवारी ये मनोज महाराज की ॥

पन्द्रहवा अधिवेशन ।

मिती भादों शुक्ल १ सखत् १८५१

प्यार की आँखनि में ।

काशीनिवासी श्री १०५ कल्यालाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

सुन्दर रूप सलोनि हैं नैन जू अमृत वच मृदु
भाखनि में । रससिंधु कहे चलि बेगि लली
नहि तोसी तिया कोइ लाखनि में ॥ फिर साँ-
वरे स्याम सो जाय मिली तहाँ रूप सुधारस
चाखनि में । सुरभायो नही सुरभौ हैं सखी उ-
रभयो मन प्यार की आँखनि में ॥

साखन मीं अति कोमल गात जु अधर मधुर
रस चाखनि में । रससिंधु कहे लट नागिन सी
जुलुफें भवराहत भाखनि में ॥ कटि सिंहन सी

कुच कांज लसें नहीं ऐसी तिया कोइ लाखनि
में । मन मेरो लग्यो है भला सजनी सुन तेरिये
प्यार की आँखनि में ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजीवन काशी ।

कत भूठ दुराव करै सजनी रजनी बिती
लाखऽभिलाखनि में । बलबीर सों बीर मिली
कसिकै मिसि कै क्यों दुरावति या खनि में ॥
मसकी उर कांचुकी बार खिले कह देंगे भेट
ये लाखनि में । यह साँच है बीर कही जग कौ
न छिपै पिय प्यार की आँखनि में ॥

पंडित अम्बिकादत्त व्यास - काशी ।

यह गाल के गाड़न सों गड़ि जात सी लागे
सुहावनी लाखनि में । अंचरा भटकाय हठीली
हंसै भरमावति भोरे से भाखनि में ॥ कवि अ-
म्बिकादत्त जू ग्वारि गँवारि धरै चतुराई ज्यों
लाखनि में । करि जोर करेजो सो ऐंचि रही है
बड़ी बड़ी प्यार की आँखनि में ॥

मधुराई इती हहा है कहा सुपियूखन मा-

खन दाखनि मैं । कवि पुंज इतो न विलोक्यौ
 कहूं लखे सुन्दर लाखन लाखनि मैं ॥ कवि अ-
 भिकादत्त लुनार्द्र लखी वह आवति क्योंहूँ न
 भाखनि मैं । जग तन्व बसीकर है जो कहूं तो
 विलोक्यो सो प्यार का आखनि मैं ॥

कवि पं० अम्बाशंकर जी—काशी ।

एरी सखी वह जावति है यह भूठी बनावट
 भाखनि मैं । कहि साँचो सहाय करौं अबहो
 नहिँ नेक भलो ठकि राखनि मैं ॥ तुअ अङ्ग कहै
 अरु रंग कहै पुनि ठग कहै पग नाखनि मैं ।
 कवि संकर की करि सौँह कहौं सब जाहिर
 प्यार को आखनि मैं ॥

सुजचन्द जो बभभिय—काशी ।

विषयी अरु स्वारथी को निदरैँ ललकारि
 कहैँ हम लाखनि मैं । इहि ते रस बारहो त्यागि
 सदा धिरता नय नेह के राखनि मैं ॥ नहिँ जा-
 निये काह पढी किहि पै तुम दोष बडो कटु
 भाखनि मैं । कल वर्जित दीह दया मृदुतः नि-
 बसै नित प्रेम की आखनि मैं ॥

काशोनिवासी पं० केदारनाथ जी ।

यह भारी लगावनी लाग है री ना कूटै उप-
चार के लाखनि में । मन मानिक जात वि-
काय विदाम सनेह सने मृदु भाखनि में ॥ कछु
और की औरई दीसै केदार सुधा अधरारस
चाखनि में । सुख जधो लह्यो ना कोऊ जगमें
दुख दून है प्यार की आखनि में ॥

काशोनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

छिपै प्रीत की रीत छिपाये नहीं यह बात
प्रसिद्ध है लाखनि में । भूलकै सब गातन गा-
तन ते अरु प्रेममर्द मृदु भाखनि में ॥ द्विज बेनी
सों काह दुरावती हो धरी लाज उठाय के ता-
खनि में ॥ दरसै रद दाग कपोल घने वरसै
रंग प्यार की आखनि में ॥

लगतौ पलकै न पलौ छन है महबूवही की
अभिलाखनि में । द्विज बेनी न दीद है दीदही
की तकै प्यारी चपै नहीं लाखनि में ॥ दरसै उ-
नकौ माहे अनवर परपूरन दोहुन पाखनि में ।

रंग धार की वेस बहार भरो नमूदार है धार
की आंखनि मैं ॥

महाराजकुमार गौरीप्रसादसिंहजी गिहौर ।

गुरु लोगन में लख आयो गोविन्द प्रसेद
कुस्यो तिय ता मन में । तन सेद को भेद न जानै
कोऊ यह सोचि चली अभिलाखन में ॥ संग
जाति सहैलिनहूं ते कृपायो चहै कहि बैन सु-
लाखन में । अंगिराय जम्हाय दुरावै तऊ प्रगस्यो
परै धार की आंखन में ॥

गंधीलो जिला सीतापुरनिवासी बाबू जुगलकिशोर जो
पटनाम हजराज ।

केहूं दुरै नवनेह नहीं करती रहौ लाखन
साखिन मैं । वा दिन की मुसकान चुभी चित
है गति ज्यों मधु साखिन मैं ॥ भाँवरौ सी ब्रज-
राज भरै नित तेरिये गोहन वा खिन मैं । जा-
हिर होत अरी प्रतिविम्ब तो प्यारे को धार की
आंखिन मैं ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

निसि सारी टहं की ससील विती सख सों

अनुराग की हँसिन में । नभ लाली विलोकि
कै माँगी विदा घबराइ कै प्रीतम ता छिन में॥
ललना अकुलाइ लगी गर सौं सुधि बोलन की
ना रही तिन में । मुख दोऊ दोऊ को निहारि
रहे भरि वारि सुप्यार को आँखिन में ॥

पिय सोच पिया जिय सोच तिहि सखियां
पिय लाइ के ता छिन में । मिस को हँसि कै
वतरावै लगीं सुनै आइहैं प्रीतम या खिन में ॥
सुनि बाल कहै अस भाग कहाँ प्रगथ्यौ पी स-
हेट तें वा खिन में । ललना सकुचानी लजानी
महा भरे वारि सुप्यार की आँखिन में ॥

अव काहुहिँ काह गुदानहुगी तुमही तुम
एक ही या छिन में । सुख सौं सुख लूटन माहिँ
सकोच रही अव राति न ना दिन में ॥ बहु
बात तो भूलही भूल गई परती रही पाय छिनै
छिन में । तव तें ककु औरे भई जब तें गड़ी
याद के प्यार को आँखिन में ॥

सुखकन्द नहीं मिसरी में नहीं नहिँ दाखन

माखन चाखनि में । सुख नाहिँ मिलै उर रा-
खनि में हँसिकै खिसकै नहि भाखनि में ॥ सुख
जेते सुसौल प्रवीन भने हम ठूँड़े भली बिधि
लाखनि में । सुख है सुखतो बस एकही है वह
प्यारी के प्यार की आँखनि में ॥

दाब शिवनचनसहाय हेड किरानो जजी पटना ।

लेन गई प्रिय प्रीतम को दर्ई मारी पगी रस
चाखनि में । आई इतै दरकी कँचुकी कहै फाट
गई लगि भाँखन में ॥ बात छिपाये छपात न री
सिव सौँहें करे किन लाखनि में । आरसी लेके
निहारे अजों छवि छाई है प्यार की आँखनिमें ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलाल जी गयावाल ।

किन होठन दन्त के दाग धरै रति से अध
रामृत चाखनि में । कहु क्यों न हिये हरवा न
गडै उर प्रीतम को कसि राखनि में ॥ गिरधारी
कहै अलि क्यों न लगै तुतरानि सुधामयी भा-
खनि में । घनस्याम मिल्यौ तव क्यों न बढ़ै ये
ललाई री प्यार की आँखनि में ॥

कद छोटी मझा सुकुमारि अहै ससि सी
दुति धारति है तन में । अरु रागिनौ रागहु
जानति है सब हाव औ भाव करै छन में ॥
कटि छीन नबीन है वैस की वीनहि हीन करै
मृदु वैनन मे । गिरधारी इते पर क्यों न वसै
तिय प्यारे के प्यार की आंखनि में ॥

कानपुरनिवासी पं० ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी ।

धन भूरे समेटन में चसकी सिसिकी सो भरे
अभिलाखन में । ललिते वा अदा की सदा किये
चाह हिये ते भुलाति है नाखिन में ॥ तनह
सन वारे रहै नित जो वित की कहा बावर
भाखिन में । मृदु मन्द हँसो सो रसी सो वसी
रहै यार की प्यार की आखिन में ॥

बाबू अयोध्यासिंह मधुवन जिना आजमगढ ।

कछु प्रीति की रीति ही ऐसी अहै दिन जात
चले अभिलाखन में । नित होत है पीर नई
हिय में दुख होत धनो हित भाखन में ॥ हरि-
औध दयानिधि मीं हौं चहौं न अरे कोउ या

रुचि राखन मैं । मन काहु को काहु सों लागै
न री न परै कोउ प्यार की आँखन मैं ॥

लखि सुन्दरता नहि मोहै कोऊ न दृष्टै परि
कै अभिलाखन मैं । नहि नेहसों पालो परै क-
वहूँ न रमै कोउ या रस राखन मैं ॥ हरिऔध
सदा हौं चहौं हरि सों विलमै न कोउ कल वा
खन मैं । मन काहु को काहु सों लागै न री
न परै कोउ प्यार की आँखन मैं ॥

सिद्धोर [काठियावाड़] निवासी कवि गोविन्द गीलाभाई ।

मन मेरो चल्थो मुरवा तजि के वह जाय
फँस्यो शुभ काखनि मैं । उनते निकसी कुच शैल
चढी उतरत गिस्यो गथ लाखनि मैं ॥ कवि गो-
विंद नीठ चल्थो उनते पह जाय बस्यो मृदु भा-
खनि मैं । निकमो उतते पुनि आय फस्यो त-
रुनी तुव प्यार की आखनि मैं ॥

मलिन्द मतवारे से ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलासा जी महाराज
वपनाम रससिंधु ।

करत सिंगार चारु केश को सँवार रहीं काँच
निये देखे बाल चोवा तेउ कारे से । कहे रस-
सिंधु फेर जूड़ा को जू बाँधी जाल अलिन की
बैठी पाँति जुल्फे घुघरारे से ॥ एते बीच आये
स्याम मिले अभिराम वाम खूब भई घाम धाम
नैन अनियारे से । राधा अरविन्द मुख चूमे कृष्ण
भोर मानो रूप रस छुके ये मलिन्द मतवारे से ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजोवन काशी ।

आई दधिवेचन कहूं ते वृजमण्डल में गो-
पिन को कान्ह जहाँ लागत हमारे से । कोमल
मृणाल कैसे सुन्दर सुबाहु दोऊ अंग को सु-
वास मानो पद्म विकसारे से ॥ दरिआई कंचुकी
में लसत उरोज जुग सुन्दर सरोज ज्यों सरोवर
बगारे से । एरी अरविन्दमुखी कंजनैनी तूने
वीर कीन्हे मनमोहन मलिन्द मतवारे से ॥

मान करि सौन गहि बैठी मनमोनन सों
 मो तन निहार नेक नैन रतनारे से । बागन
 बहार बन बौधिन बिलोकि बीर बम ना बसैगो
 या बसन्त बजमारे से ॥ गरबीली गूजरी तू ग-
 रव गुमान छाड़ि गाँठ गहु प्रेम की गुविन्द गु-
 नवारे से । ठौर ठौर कूकै कौर कोकिलाकलाप
 बीर भौर भौर भूमत मलिन्द मतवारे से ॥

आली निज भूल का कहानी क्यों बखानी
 जाय कीन्हों हैं गुमान वा गुविन्द गुनवारे से ।
 नेक हौं न मानी वे मनाय बीर थाके अब रूसि
 कै सु जानी गृह-सौतिन पधारे से ॥ तब हौं
 बखानौंगी प्रवीणता सु तेरी जौपै आली तू मि-
 लावेगी हमारे प्राणप्यारे से । सौतिन के मद
 में मतंग मदमाते बीर कै दै मनमोहन मलिन्द
 मतवारे से ॥

प० कंदारनाथ जी बनारस ।

छिनक कृपात हेरिवे को अकुलाय जात
 जैसे प्रभा लोपित चकोर पति तारे से । ला-

गोई रहत संग बैन सुधा पीजिबे को मुकता
गुथोई करै जूरो कोरि बारे से ॥ हार सुरभावत
केदार उरभोई जौन आंगी वन्द वाँधन करेर
कौ पिठारे से । राधे मुख अमल अनूप अरविन्द
ता पै मडरात मोहन मलिन्द मतवारे से ॥

पडित अश्विकादस व्यास काशी ।

चौपाई ।

नैन कमल लखि उमँग भरे से ।

भृकुटि व्याज जनु पाँति करे से ॥

सार ।

आज नन्दनन्दन छवि वरनत सुकवि सबै हारे से
रोम रोम की सेभा कविगन गरूर गहि गारे से ॥
पीरी खौर लिलार लसै तहँ कचहू घुंघरारे से ।
सोहत केसर कली चहूँदिस मलिन्द मतवारे से ॥

आर्या ।

सोहत मन्द हँसत मुख छटके तापै सुकेस घुं-
घरारे से । विकसित अमल कमल पै मनहु भुके
हैं मलिन्द मतवारे से ॥

में सुहात शनि तारे से ॥ मदन महीपति उच्छाह
ने निमन्त्रण के सुललित पत्र पै सुबेस अङ्ग धारे
से । गुंजाफल कैसे शिख फल पर जम्बु कैसे प्र-
फुलित कञ्ज पै मलिन्द मतवारे से ॥

महाराजकुमार गौरीप्रसादसिंहजी गिहौर ।

हीरन-जटित बेंदी बाल भाल ऊपर तैं वि-
चलि सुमानिक भो अधर प्रचारे से । हरित दु-
कूल पर पन्नन की छवि होत नीलमनि कंचुकी
सुनील पर धारे से ॥ इन्दु गोद बुध सी विना-
यक सी कंज पर बेलिन पै कौर छवि मंजुल
सवारे से । सरवर रूप से सुमकरन्द काज आज
इन्दीवर ऊपर मलिन्द मतवारे से ॥

गंधौलो जिला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जो
रपनाम हजरराज ।

फूले हैं अनार कचनार अंब डौर वौर एरी
कूक कोकिल कौ कोकिल पुकारे से । चलत स-
मीर वीर भीतल सुगन्ध मन्द सुखद सयोगिन
वियोगिन द्वारे से ॥ मान को वरजि ब्रजरान

को बिलोकै किन मदन कदन विरही को चित
धारे से । एरी रितुराज की अवाई के करौल
डोलै मन्द मन्द वीथिन मलिन्द मतवारे से ॥

बाबु शिवनन्दनसहाय हेड किरानो जजी पटना ।

आय परी पल्लन वसन्त ऋतु कन्त सिव सेमर
सुमन भण्डा मुख उघारे से । बिटप सिपाही
लाल पल्लव की वर्दी कसै करनैल कोइल कवा-
इद उघारे से ॥ घटककली है तौन छूटत बँ-
दूक मनो मोरन ठनक होत बाजत नगारे से ।
चलत समार है तुरंग हरकारे जिम फिरत अ-
नन्द में मलिन्द मतवारे से ॥

पटनानिवासी बाबू पञ्चनलाल जी ।

लाल यह चाल कवौं रावरी कुटैगौ नाहिँ
कहूँ रात कहूँ प्रात भ्रमत सितारे से । बैठि
एक डार बोलि माधुरी अमोल बोल चित लै
परात हौ परिन्द परवारे से ॥ हाय वह
ललना ललाति विललाति महा नेकहु न जाय
लखौ हग अनियारे से । कारे हौ विकारे भरे

गुलाब में सँवारे से ॥ हरिऔध राधिका की
सुखमा कहां लौं कहीं मौस लसैं मोती अन्ध-
कार बिच तारे से । कारी कारी पूतरी अरुन
अँखियान डोलैं अमल कमल में मलिन्द मत-
वारे से ॥

छोटी छोटी आम की रसौली मजरीन काहिँ
निकसि गुलाबफूल सौरभ सवारे से । गुंजरत
याही और देखु यह आवत है अति कमनीय
कज वन के किनारे से ॥ हरिऔध की सौँ आइ
अवहीं मचैहै धूम गूँजि गूँजि आनन सुवास के
सहारे से । भूलि अब भौन ते न बाहर कढौंगी
कवों जवि गई एरी या मलिन्द मतवारे से ॥

सिंहोर [काठियावाड] निवासी कवि गोविन्द गोलाभाई ।

आवत वसन्त खिले सुमन समाज देखो सी-
तल सुगन्ध मन्द पौन बहे भारे से । राजत र-
साल नवप्रसन्न विसाल पुनि विकसी पलास अति
ओप अरुनारे से ॥ औरही अनेक फूल फूलि के
मधुर महा मंजुल मरन्द दिसतारत अपारे से ॥

गोविंद सुकवि ताके पान करि चित्त छकि ठौर
ठौर डोलत मलिन्द मतवारे से ॥

रंगभरी मूरति अनंगभरी अँखियाँ ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

वंसी की जु धुन सुन चौक उठी ब्रजवाल
छोड़ सब काम काज धीरज न रखियां । कहे
रससिन्धु फेर भुगडन की भुगड चली वंसीवट
कुंजन में जाय मिली सखियां ॥ वाजि मिरदंग
संग वीन ओ उपङ्ग चङ्ग सारंगी जलतरंग मैन
रूप लखियां । राधा ओर स्याम दोऊ गाँवें गल
वाँह दिये रंगभरी मूरत अनङ्गभरी अँखियां ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजीवन काशी ।

बड़ी लाजवारी सील-गौरव-गुमानवारी ज्ञान
मान बस तुच्छ कीन्ही सब सखियां । तुही एक
वृज में पतिव्रत निवैठे वीर कौलों जौलों रूप-
सुधा नैन नाहिँ चखियां ॥ भूलि जैठे कुल को

गुमान नीति ज्ञान सबै निरखत साँवरे की मा-
धुरी कनखियां । ताकनि तरङ्गभरी सूरत उमङ्ग
भरी रङ्गमरौ मूरति अनङ्गभरी अँखियां ॥

बाबू हरिशंकरपसादव - नारस ।

केती समुभाय हारीं मानति न काहू भाँति
षलिवे को कहे कोप वारे भेख रखियां । एक
दूसरी है याते रूप में अनूप नारि वाको जो
बुलैहैं स्याम ह्वैहै प्रति पखियां ॥ यासो चौगुनी
है हरिशङ्कर सपथ करौं छवि औ सजावट मीं
सुनौ सब सखियां । अंगभरे भूषन उमंगभरे
कुच दोऊ रंगभरी मूरति अनगभरी अँखियां ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

ऊधो जी वसीठी हेतु आयो है सुचीठी दैत
मीठी है के खाटी सो वताओ अरी सखियां ।
सबै रसभोगी है सुजोगिन वनावै मोहि हम तो
वियोगी वा त्रिभंगी रूप लखियां ॥ कूवरी क-
साइन के पाइन परत हाय नाइन की जाइ ठ-
कुराइन सी रखियां । माधो की न भूलति है

सुरत सुहाई वह रंगभरी मूरत अनङ्गभरी अँ-
खियां ॥

प० केदारनाथ जी - बनारस ।

विधुरि गये हैं केस कूटि चहुँओर जूरो भूमक
मुरे हैं कर्ण दोऊ कोर लखियां । मौस बिन्दु
सरकि गया है कहूँ और ठौर कज्जल-कराई गई
फैलि दोऊ चड़िया ॥ पौक लीक लागी है क-
पोल पै केदार कैसे आई रस लेइ जैसे कंजन
मों मखियां । मोते क्यों रूपावती बतावती ना
एरी भटू रंगभरी मूरति अनंगभरी अँखियां ॥

काशीनिवासी ब्रजचन्द जो बलभीय ।

बल्लभपियारो नन्दजसदादुलारो ताहि सेवति
निरन्तर तिहागी सब मखियां । तेरे बिन एहो
ब्रजचन्द श्रीचकोरो तेरी होति हैं विकल जैसे
वार बिन मखियां ॥ धन्य धन्य भाग तिनके
हैं ब्रजभूमि माहिँ लखति मदाहीं जो मयानौ
चारु चखियां । कव धौं निहारि हैं नयन ये ह-
मारे तेरी रङ्गभरी मूरति अनङ्गभरी अँखियां ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

दुर री निगोड़ी नींद बैरिन हमारी भई दुर
री निगोड़ी यह पावस की मखियां । कहा कहीं
हाय तुम लोगहु हमारे हेत बैरिन भई ही सबै
प्रानप्यारी सखियां ॥ करतीं न बक्वक् सिरहाने
जो हमारे बैठि काटतीं न मखियां न होती
नींद पखियां । नाहिँ उडि जाती हरखातो ल-
खि प्रीतम की रङ्गभरी मूरति अनङ्गभरी अँखियां ॥

शिवनन्दनमहाय हेड किरानी जजी पटना ।

कहत वनै ना जस वनक लखी है सिव गई
हुती तरनितनूजा तट तखियां । उत ते गोआल
संग लैकै हैं गोपाल आयें इतहूं ते स्यामा ल्यो
सलोनी लिये सखियां ॥ मची तहाँ धूंधरधमार
घन घोर जोर होन लागी हीरी परी पूरि अभि-
लखियां । राजै सखी मध्य सोभाखानि वृषभानु
नुता रङ्गभरी मूरति अनङ्गभरी अँखियां ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीजानजी गयावाल ।

भौहन विशाल अरु चाल है मराल केसी

धारिवो ल्यों सीस पै रसाल मीर पखियां । गि-
रधारीलाल कहै कुण्डल बहार पुनि संजु कर
कज की चमकदार नखियां ॥ व्याकुल विधा तें
बार बार अति रोय रोय ऊधो सन कहत स-
कल वृज सखियां । कैसहूँ न बिसरै बिसारे वह
साँवरे की रङ्गभरी मूरति अनङ्गभरी अँखियां ॥

गंधीलो जिला सीतापुरनिवासी बाबू युगुलकिशोर जी
उपनाम ब्रजराज ।

गोकुल के संग पति गोकुल विलोकि अलि
को कुल सँभारै वकै जो कुल विलखियां । लखि
हाव भाव ल्यों चवाव की सुनै की भटू राव खांव
खांव की ब्रथाही रही अखियां ॥ आज सुखसाज
गृहकाज लाज बाज राखि एरी ब्रजराज-मधु
की हौं भई सखियां । देखिहौं त्रिभंग अंग अंग
की अभंग कवि रङ्गभरी मूरति अनंगभरी अँ-
खियां ॥

अयोध्याप्रसाद (स्याम) बाकरगंज - वांकीपुर ।

जमुना पै जात रही लेन जल एक बार साथ

में सलोनी सुकुमारी बहु सखियां । दूरहीं ते
देखि स्याम जाय दबकाय रही सोरी चतुराई
बनवारी तब लखियां ॥ आइ के निकट चट
प्रीत की निकागी रीत गये अब हाय त्यागि हम
सब भखियां । कौन ऐसी पल जासे याद ना
परत ऊधो रङ्गभरी मूरति अनङ्गभरी अँखियां ॥

बाबू अयोध्यासिंह - मधुवन जिला आजमगढ ।

अजहूँ न भूले हैं प्रसंग डफ बाजन के सा-
लति हैं भंग भीनी अजहूँ कनखियां । अंग अंग
भीने से गुलाल में लखात अजौं गावत जनाति
सौ सृदंग संग सखियां । हरिऔध होरी के त-
रङ्ग हिय वैसही हैं देखि सुनि पूजो हैं न अजौं
अभिलखियां । व्यङ्ग भरे वचन उमंग भरे प्रान-
नाथ रंगभरी मूरति अनंगभरो अँखियां ॥

सिहोर (काठियावाड़) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई

नायिका नवीन एक नैन ते निरखि नेक
राजत ललाम वाकी कंचन सी कँखिया । लो-
चन विमल वाक्रे ओपत अपार ताकी चचलता

पेख पैठ नीर माहिँ भखियां ॥ गोविँद सुकवि
ताकी तिरछी चितौन अरु मन्द मुसक्यान मा-
हिँ चित्त मो करखियां । वा दिन ते सोई छवि
हिये वसी सो न टरे रङ्गभरी मूरति अनंगभरी
अँखियां ॥

कानपुरनिवासी प० ललितप्रसाद जी त्रिवेदी ।

गुंजन के पुंज हार काछनी कछनि चारु ल-
कुट लपेटे पग सौस मोरपखियां । पट फहरानि
मुसकानि में विकानि सब जेतिक तुम्हारी हतीं
मेरे संग सखियां ॥ वाँसुरी के तानन सों प्रानन
निकारे लेत भूले गृहकाज आज कैसे लाज र-
खियां । आजु लखो वीर जमुना के तीर कान्ह
और रंगभरी मूरति अनंगभरी अँखियां ॥

हिये में प्रान प्यारी के ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिधु ।

कांजन से नैन चारु मोतिन की माल गरे

हीरन के हार धरे सोभा अति भारी के । कहै
रससिन्धु फेर देख के लुभाये सभी कोई तरे मिले
बाल मन मे विचारी के । फूलन की माला हाथ
पायल बजाती चला जाय पहराई दौर कण्ठ मे
मुरारी के । तभी ते बसी है हरि उर माँझ लछमी
जी स्याम जू की मूरति हिये में प्राणप्यारी के ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजोवन काशी ।

एहो बलवीर मनमोहन गुपाल लाल हाल
जो सुनौगे विरहीन वृजनारी के । धीरज नसैहै
विनसैहै ज्ञानशैल छाया जैहै प्रेमपुंज बात सु-
नत हमारी के ॥ नौद भूख प्यास ताहि रंचक
न एकी पल आठौ जाम नाम रटे कुंजनविहारी
के । मिलौगे गुविन्द तोपै कसक निकारि लैहै
हौंसले हजार जो हिये में प्राणप्यारी के ॥

जा दिन गई ही दधि बेचन अकेली भोर
औचक दरस पाइ गई वनवारी के । पीतपट पे
खत सु पीत सी भई ही वीर विगतविवेक भई
देखत विहारी के ॥ ता दिन ते भूल गई आ-

प्रनी पराई सुधि हाल कहा कहूं वृषभान की
दुलारी के । तान बसी वाँसुरी की कान में गु-
मानभरी मूरति गुपाल की हिये में प्राणप्यारीके॥

ब्रजचन्द जो बलभीय—काशी ।

नैननि निहारि निरधारी है कुचालि तज
सादर डरसि उठि लागी गिरिधारी के । कुटिल
कन्हारै को करति मन भाई सदा ऐसे हैं वि-
सुद्ध गुन कीरतिकुमारी के ॥ रमा रति गौरिह
निरन्तर सिहाति देखि गौरव गंभीर वृषभान
की दुलारी के । संग को सखौनहू मिखाइ
सीख हारी सबै मान को न भाव भो हिये मै
प्राणप्यारी के ॥

बाबू हरिशंकरप्रसाद जी - बनारस ।

गुरुजन चास ते बुलावै यहीं मोको पास ह्वै
जो जात लटू सुने जिकिर तिहारी के । फरकाय
अधर लजीले नैन सैन साजि मुसक्याय रहै ओट
बूटेदार सारी के ॥ ग्वाल सो चराय गाय सौह
हरिशंकर की भये निरमोही सङ्ग रहि वनचारी

के । आप अँठिलाय सो बितावै जहाँ चाहै निसा
लिखी तसबीर है हिये में प्रानप्यारी के ॥

प० कंदारनाथ जी बनारस ।

प्यारे घनस्याम कहौं वृज की दसा मैं काह
सलिल भये हैं तप्त तनयातमारी के । हूकि र
हारन में धरती न धेनु कबौं चाहती सुनोई
श्रीन बसी बाँसवारी के ॥ नेकु नन्दबाबा जू के
आँखिन सों सूमै नाहिँ मोह कहि जाय ना य-
शोदा महतारी के । गोपिका नवेली विरहा-
कुल वियोग थारे लालसा है दर्स की हिये में
प्रानप्यारी के ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीनालजी गयावाल ।

छोड़ि खान पान नहि करति बखान वैन
चलत है आठौ याम धारा नैन वारी के । गि-
रधारीलाल दसा औरई भई है वाकी जब ते
भयो विदेस गमन विहारी के ॥ मलति कपूर
अरु चन्दन के धूर अंग त्योहीं अरविन्दन के
सेजहिँ सँवारी के । वैठी याहि विधि खसखाने

बीच तज मैकु सीतलता पैठी ना हिये में प्रान
प्यारी के ॥

नित्तहि नदान कैसे मान करो एही कान्ह
है कर सयान किन धारौ वान नारी के । गि-
रधारीलाल दुख आपह सहो त्यां कछु पीर
नहीं बूझौ सम मखी सुकमारी के ॥ चाहिये न
ऐसो जो भयो सो भयो जान दीजै आज रख
लीजै लाज बातन हमारी के । सब रीष त्या-
गिये वो चित्त अनुरागिये जू बेगि उठ लागिये
हिये में प्रानप्यारी के ॥

बाबू भगवतोचरण सकला जिला शाहाबाद ।

लहत ना सन्त सुख सागर के वार पार गा-
वत सुनत गुन कुंजनविहारी के । सूम सब फूले
भगवति हैं अनन्द मन, भये ते अथोर धन धाम
अधिकारी के ॥ जाचक प्रसन्न होत अधिक प-
रापति ते बन्टी चित हर्ष कारागार कुटकारी
के ॥ कामी सब जानत हैं जन्म को सुफल निज
लगे ते अहर्निस् हिये में प्राणप्यारी के ॥

बाबू शिवनन्दनसहाय हेड किरानी जजी पटना ।

दोज बड़े भागे प्रेम पागे अनुरागे दोऊ दिये
कर काँधे फिरें पास फूल क्यारी के । एकै रंग
एकै ठंग एकै हाव एकै भाव कहैं सिव भूषन
वसन एक त्यारी के ॥ एकै राग एकै तान एकै
रीत एकै प्रीत एकै मन बरु दोय देह कृबि न्यारी
के । प्रानप्यारी वसति हिये में प्रानप्यारे तैसे
प्रानप्यारे वसत हिये में प्राणप्यारी के ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

एरे वदजात वदराह वदरा तू नैक क्यों न
खुल जात हीत हेत दुख भारो के । आजही
की औधि अहे हाय किहि भाँति कहै पहुंचि
सकैंगे हम पास सुकुमारी के ॥ ऊँच नीच बी-
हड है मारग न ताको सोच केवट न कहै पार
सौगुनो उतारी के । वीती जान औध मेरी दुख
को तरंगें लाख लाखन उठैंगी हा हिये में प्राण
प्यारी के ॥

हीं तो चलि जाती अबै लाती मनमोहन

कों सहज सँघाती कहलाती सुकुमारो के ।
ज्वर कैसो बेग सो तो बेगही उतर जातो जैसे
नस जातो तम उगत तमारी के ॥ पै सकाती
चाल लखि याके घरबारन की नेकु सुनि पैहैं
हैहैं दुस्मन विचारी के । घर से न जान देहैं
हेत असनानहू के दूनो दुख हैहै औ हिये में
प्राणधारी के ॥

सिंहोर [काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगोलाभाई ।

सुन्दर सुघट सुखदायक उत मांगही ते चा-
हते सरकि चलयो हर्ष हिय धारी के । भाल पै
भटकि भूरि आंखिन में आय अत्यो वाहि ते
निकसि नेक नाक कों निहारी के ॥ कोमल क-
पोल फिरि औठन पै अ.इ. वातें सुन्दर चिबुक
हैके गिखो गर्वहारी के । गोविन्द सों कौन
भाँति निकरैगो मोहि मन पखो जाय प्रेम ते
हिये में प्राणधारी के ॥

जन्मही ते आजही सों दृष्टा-अनुसार तेरी
विचखो विशेष हम प्रेम कों पसारी के । खान

पान खेल अरु गान आदि आन केते जेहि जेहि
चहे सोइ कियो में स्त्रीकारी के ॥ औरही अनेक
भांति कीनि जेहि कामना ते सोइ करी पून
में हर्ष हिय धारी के । गोविंद कहत तोहु मूढ
मन मोहि तजि बस्यो जाय बेग ते हिये में प्रान
प्यारी के ॥

बाबू प्रयोध्यासिंह - मधुवन जिता आजमगढ ।

वीति गये बरस कितेकन विदेस आये बस
कछु ऐसे परे विधि अधिकारी के । जिते भौन
जान के विचारे व्योत बार बार विफल भये ते
हेतु पेट अपकारी के ॥ हरिऔध आवतही गृह
में नवेली नारि फट परि गये या वियोग अवि-
चारी के । और कहा है नैक हँसि बतरानहूं
की हाय ! रहौ हौसहौ हिये में प्रानप्यारी के ॥

दाज दुहूं चाहैं दोज दुहुन सराहैं सदा
दोज रहैं लोलुप दुहुन कवि न्यारी के । एकै
भये रहैं नैन मन प्रान दाहुन के भौने रहैं दाज
रंग मदन खेलारी के ॥ हरिऔध केवल दिखात

द्वै सरौरही है नातो भाव दीखै हैं महेस गिरि-
वारी के । प्रानप्यारे चित में निवास प्रानप्यारी
रखै प्रानप्यारी वसन हिये में प्रानप्यारी के ॥

सत्रहवां अधिवेशन ।

मिती आश्विन शुक्ल १ सम्बत् १९५१

सुगन्ध की लपट सी ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज

उपनाम रससिंधु ।

केसर की सारी चान चौवा को लहँगा साज
कंचुकी जु सौंधे भरौ अतिहौ सुवट सी । कहे
रससिंधु फूलमाला कस्तूरोहार चन्दन बरास
डार खोर करी भट सी ॥ चली दौर स्यामपास
आलिन की भीर भुकी पतली है कमरहु सिंहीन
के कट सी । केवड़ा जवाद खस अम्बर अनेक
अत्र मोसरी गुलाब की सुगन्ध की लपट सी ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतप्रोबन काशी ।

गुरुजन भावती बखानें सुखमा की सीव
आलीगन कामलता कहै अटपट सी । निधि

पान खेल अरु गान आदि आन केते जेहि जेहि
चहे सोइ कियो मैं स्त्रीकारी के ॥ औरही अनेक
भांति कीनि जेहि कामना ते' सोइ करी पूरन
में हर्ष हिय धारी के । गोविंद कहत तोहु मूढ़
मन मोहि तजि वस्यो जाय वेग ते' हिये में प्रान
प्यारी के ॥

बाबू प्रयोध्यासिंह - मधुवन जि रा आजमगढ ।

वीति गये वरस कितेकन विदेस आये वस
कहु ऐसे परे विधि अधिकारी के । जिते भौन
जान के विचारे व्योत बार बार विफल भये ते
हेतु पेट अपकारी के ॥ हरिऔध आवतहां गृह
में नवेली नारि फट परि गये या वियोग अवि-
चारी के । और कहा ह्वै है नेक हँसि बतरानहूं
की हाथ ! रहौ हौमहौ हिये में प्रानप्यारी के ॥

दाज दुहूं चाहैं दोज दुहुन सराहैं सदा
दोज रहैं लोलुप दुहुन छवि न्यारी के । एके
भये रहैं नैन मन प्रान दाहुन के भीने रहैं दाज
रंग मदन खिलारी के ॥ हरिऔध केवल दिखात

है सरीरही है नातो भाव दीखै हैं महेस गिरि-
वारी के । प्रानप्यारी चित में निवास प्रानप्यारी
रखै प्रानप्यारी वसन हिय में प्रानप्यारी के ॥

मत्रहवा अधिवेशन ।

सितो प्राश्चिन शुक्ल १ सम्बत् १९५१

सुगन्ध की लपट सी ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज

रचनाम रससिंधु ।

केसर की सारी चारु चोवा को लहँगा साज
कांचुकी जु सोंधे भरो अतिहो सुघट सी । कहे
रससिंधु फूलमाना कस्तूरौहार चन्दन बरास
डार खोर करी झट सी ॥ चली दौर स्यामपास
आलिन की भीर झुकी पतली है कमरहु सिंहिन
के कट सी । केवड़ा जवाद् खस अम्बर अनेक
अत्र सोमरी गुलाब की सुगन्ध की लपट सी ॥

वाक् रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजीवन काशी ।

गुरुजन भावती बखानें सुखमा की सौँव
आलीगन कामलता कहैं अटपट सी । निधि

सी बखानें नित नन्द जिठानी कहै जाँउ बलि-
हारी यह लागै नटखट सी ॥ वीर प्रिय प्यारी
की अनोखी कवि कहै कौन बानी अकुलानी
रहै हाय छटपट सी । सौतिन कों साल मो
हिये में गड़ै आठो जाम लाल हिये माल ह्वै
सुगम्य कौ लपट सी ॥

भले ही सिधारे पिय भोरही हमारे गेह
अजब अनूठी यह चाल अटपट सी । पीकलीक
नैनन सु अञ्जन अधर धरे सोहत गुपाल पेंच
पाग लटपट सी ॥ बात न बनाओ बलवीर जू
हमारी सौंह मूरति तिहारी आज भासति क-
पट सी । प्रीति मृगमद लौं दुराये ना दुरैगी
लाल चहुँओर फौलती सुगम्य की लपट सी ॥

पण्डित अम्बाशङ्कर जी - काशी ।

कृष्ण महाराज के विजय की जै जागी जग
खल गज डाटन को सिंह की डपट सी । कुटिल
कुगोत दुष्ट दानव कपोतन पै संकर जू देखौ
हीत बाज की झपट सी ॥ और वृजवासी गोप

गोपी मृग भुगड लागि सान दिखरावै वीन तान
कौ कपट सौ । भक्तजन सज्जन के मन के दुरे-
फन को नाना भाँति सुमनसुगन्ध कौ लपट सौ ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनो कवि ।

कुन्दन छरी सौ चली अंगना उमंगभरी पाछे
परी भौर भीर आवत झपट सौ । मन्द पग ध-
रति गयन्दगति बेनौ द्विज कटि ना लखात
कहूं हित के कपट सौ ॥ निस अंधियारी में
विहारी के मिलन हेत देत अहि वीछिन को
मन्वन दपट सौ । चारु मुख चन्द ते पसारत उ-
जरी जात अगन बगारत सुगन्ध कौ लपट सौ ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

हीरन के हार औ हमेल हियरा में धार भार
मुकतान के झलाझल झपट सौ । चाँदिन के
वादला की चादर चमकदार मिलि रही चन्दा
की जुन्हार्ई में कपट सौ ॥ माधौ जू सयानी
सखी सींधे लगी संग जात नेकु ना दिखात
गात दावा कौ दपट सौ । चौंकदार चाँदनी में

चन्द्र को कला सी चारु चलो ब्रजचन्द्र पै सुगन्ध
की लपट सी ॥

काशोनिवासी पं० केदारनाथ जी ।

सौरभ समोये वार गूथी कुन्दकली चारु
आंगी सित कसी कुच कंचन के घट सी । पैन्हि
खेत सारी प्रभा पारद उँजारी सर्द चन्द्र च-
न्द्रिका में चली चन्द्रिका प्रगट सी ॥ मोती हीर
हार गर सुमन चमेली धारि मीत मिलिबे को
जाति पांयन झपट सी । उडै उपरैनी सनो अन्न
घनी पौन पाइ गैल माहिँ फौलती सुगन्ध की
लपट सी ॥

बाबू मन्मथलाल जी बनारस ।

कुहू की अँधेरी में सरद को उजरी देखि
कदली के पत्र पै है नागिन सपट सी । सुधा
के सरोवर में जोत विजली की होत फूल्यो है
कमल वाले कोयल कपट सी ॥ मन्मथलाल ताही
ठौर कीर एक राजत है ताके चींच माहिँ रही
भोरनी कपट सी । चलो तो देखाजँ ऐसो अ-

नुभौ विहारीलाल जाके पास उठत सुगन्ध की लपट सी ॥

काशीनिवासी हजचन्द जी बल्लभीय ।

कल्पि बतावै हम निसि दिन काम-पीर तापै तू बकति बहु बात अटपट सी । कहै देत बचिहै न प्रान यह प्यारो आज बोलहू हमारी भई जाति लटपट सी ॥ परम पुनीत प्रीति बाही सों लगाई वीर जानिये न ताहि वह मानै क्यों कपट सी । ललिता बतावै आइ अंग लपटैहै कवै चन्द्रावली नागरी सुगंध की लपट सी ॥

कोषागजनिवासी कवि सालिग्राम जी ।

छाई है वियोग विधा मोहन के सारे अंग व्याकुल परजंक पै लोटत अपट सी । लोग औ लुगाई पुछै औरही बतावै ताहि भेषजी भुलाने रहै बाही में लपट सी ॥ कहै सालग्राम दूती ल्याइहै मनाय ताहि जाकी रही चाह अति सोई भटपट सी । विना किये जंत्र मंत्र कुटि गई सबै व्याधि लागी जब अंग में सुगन्ध की लपट सी ॥

चिन्ह गोपन कों गात करे केतौ करतूत सो तो
लागत कपट सी । गोविंद सुकवि कैसे दुरेगी दु-
राये प्रीति फ़ैली चहुँओर सो सुगन्धकी लपटसी ॥

सासुरे में जाइ सखी रहियो सयानी ह्वै के
कहियो न बात कभी कोई से कपट सी । सासु
के समीप सदा विनय बलित रही कीजियो स-
कल बस्य बेग तें बिकट सी ॥ गोविंद सुकवि
कहा बेर बेर कहूं आनी कीजियो न संग नारि
निरखि नफ़ट सी । नेह में निमग्न बनि लागि
हो लगन धरी नाथ हिय भाल ह्वै सुगंध कौ
लपट सी ॥

एक तें व्है गई द्वै तसवीरें ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

फूलन की चुन चारु कली लली चोटौ भली
जो करी बहु धीरे । त्यों रससिंधु जू सारी कि
रेफ की मोतिनमाल ओहार हे ह्योरे ॥ वाल नई

वह रंग गुलाब सो नेह न जानत वो पर पीरे ।
काच लिये मुख देखत वो तिया एक ते छै गर्दे
है तसबीरे ॥

कोई कहे यह निरगुन ब्रह्म है कोई कहे
साकार सरीरे । त्यों रससिंधुहु साची कहे भ्रम
टार करे उतपत्ति जु धीरे ॥ जो कछु यामे स-
मर्थ नहीं तो कहा ते करे वे सिष्टि मही रे ।
ब्रह्म ते माया भई है तभी वह एक ते छै गर्दे
है तसबीरे ॥

वाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजीवन काशी ।

भोरहि आज गर्दे जमुनातट सग लिये सखि-
यान की भीरें । औचक देखि पखो नदनन्द
वजावत वेनु कलिन्दजा-तौरें ॥ आधिक नैन
सुराधि लख्यो तहँ आधिय दौठ लखी बलवीरें ।
दोऊ मिले मन एक भयो * पुनि एक ते छै
गर्दे है तसवीरें ॥

* आधा और आधा मिलने से एक होता है ।

पै नेम पुराण कुरान शरीफ़ गँभीरें । आपुनी र
रीत चलें जग एक ते' हूँ गर्द हूँ तसवीरें ॥

बा० माधोदास जी काशी ।

गौने की आई नई दुलही मिलिबे की लला
ने करी तदवीरें । मूनी अटारी परी परजंक स-
संक सु भाधौ जू आवत धीरें ॥ भौन के भी-
तर जाय लखी कृपी चित्र लिखी पुतरीन के
तीरें । हेरत हेरत हास्यौ प्रिया मनो एक ते'
हूँ गर्द हूँ तसवीरें ॥

सुजचन्द जी बलभोय—काशी ।

तूही हितू प्रिय चित्र दिखाइ दया करि
दोन्हें सबै हिय धीरें । मोहि कृतार्थ करी स-
जनी में रिनी हौं सदा री गर्द सब पीरें ॥ दे-
खत चित्र मुदे दृगह्र पै लखौं मैं सोई प्रतिमा
कवि भीरें । बाहर भीतर देखिबे कौं दूहि एक
ते' हूँ गर्द हूँ तसवीरें ॥

बाबू मद्रूलाल—काशी ।

स्याम को रूप लिख्यो कर आपने रात को

बैठ एकन्त में धीरें । जावक को लिख्यो भाल
सें लाल के गाल लिख्यो सुख दाग गँभीरें ॥
मन्नूलाल उनीदी लिख्यो अँखिया औ ओढ़े
लिख्यो चुचुहाती चीरें । आये प्रभात मिलान
कियो कछो एक तेँ ह्वै गर्द ह्वै तसवीरें ॥

कवि रघुनाथ जी - काशी ।

हौं लखी कौतुक नोखी भली ब्रजवाल की
भीर कलिन्दजा तीरें । न्हाही सबे विधि भूषन
साजि लगी पहिरै रुचि सो शुभ चीरें ॥ गागरी
लै निहुरी रघुनाथ चकी प्रतिबिम्ब विलोकि
अधीरें । चक्रित ह्वै कै बकै सब सों लखु एक
की ह्वै गर्द ह्वै तसवीरें ॥

मदनमोहन पाठक रघुनाथ मनोभव गो घाट काशी ।

ऊधो जू लाये हौ पाती गुपाल की रावरी
यामे न ह्वै तकसौरें । मैही अभागिनि हौं जो
मनोभव जोग की वामें लिखी तदर्वारें ॥ बोलि
कै ऐसो सुता ब्रह्मानु की स्याम की देखें लगीं
तसवीरें । पूतरी काठ सी ह्वै गर्द सो मनो
एक तेँ ह्वै गर्द ह्वै तसवीरें ॥

कोपागंजनिवासी कवि सालिकराम जी ।

चाह रही निसु बामर मैं मोहि राधे बसै
हिय बीच सरौरैं । साधन साधन सो भगवान
दियो बर वानी सुनाय गँभीरैं ॥ सालिक स्याम
न छोड़ि सके सँगही चलि आये कृपा करि तीरैं ।
देखि परी हिय अन्तर मैं तव एक ते ह्वै गर्द
है तसवीरैं ॥

भारकण्ठलाल उपनाम चिरजीवी कवि - कोपागंज ।

पहिले रही औध की आस हिये अब आनि
वसी ब्रज बाम की भीरैं । तबतो सरजू हौ सो
सौक रछौ अब भो जमुनाहुं मैं प्रेम गँभीरैं ॥
तबतो रछौ रामही को चिरजीव भयो अब कृ-
ष्णाह के बस धीरैं । दिन हैक ते या उर अन्तर
मैं अब एक ते ह्वै गर्द है तसवीरैं ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

प्राणप्रिया छिनहू न तुमै विन धीर धरैं उर
होत अधीरैं । हौं अरु मेरी सवै सखियां समु-
भाइ यकीं करि कै तदवीरैं ॥ पै अब जो तुम

दे निज चित्रहिँ तोखत सो न बढावत पीरैं ।
एक अनन्यता क्यों रहिहै जब एक तेँ ह्वै गर्दूँ
है तसवीरैं ॥

व्याकुल होति महा छिनही छिन धीर धरै
न कोऊ तदवीरैं । हा मम प्रीतम प्रान अधार
कहा कहि मोचति लोचन नीरैं ॥ लाडू तवै
सखि चित्र धरी हरि वेनु बजावत कलिंदीतीरैं ।
देखतहो जकि सी थकि सी भई एक तेँ ह्वै गर्दूँ
है तसवीरैं ॥

चन्द्रकला वाई - बूँदी ।

बैठि रही अलिमण्डल में वृषभानुसुता सखि
शोभ शरीरैं । ता विरयाँ ललिता सखि नै हरि-
चित्र दियो कर में नमि नीरैं ॥ चन्द्रकला लखि
लीन भई तव बोलि उठी सखियां इमि धीरैं ।
देखहु अद्भुत कौतुक है यह एक तेँ ह्वै गर्दूँ
है तसवीरैं ॥

महाराजकुमार गीरीप्रसादसिंहजी गिहौर ।

होत प्रभात पिशा घर आयो सु क्याँहू नहीँ

सग में पग धीरें । आनन अंजन रेख बिलोकि
लखी तिय चन्दभरे दृगनीरें ॥ लाल ते बोली
लखो यह कौतुक मो मन देखि धरै नहि धीरें ।
भोर लो एकै हती नभ में अब एक ते ह्वै गई
है तसवीरें ॥

सिहोर[काठियावाड़] निवासी कवि गोविन्द गोलाभाई ।

आपस में मिलि राधिका गोविंद पेखत एक
टुजा पर धीरे । पेखत पेखत नेन मिले पुनि
चित्त मिले अब होइ अधारे ॥ गोविंद यों मि-
लि एक भये तव धीर भये तित दीउ शरीरे ।
नेक हले न चले उन ठामनी एक ते ह्वै गई
है तसवीरे ॥

संजुल सूरति माधव की लिखि चित्रनी ने
धरि राधिका नीरे । सोई लखो रसरूप भरी
अति माहित ह्वै मन भाव मों धीरे ॥ पेखत
नेन निमेष तजि अरु शान सवे तजि आप श-
रीरे । गोविंद मोय भई कवि सी मनो एक ते
ह्वै गई है तसवारे ॥

अठारहवा अधिवेशन ।

मिती कार्तिक कृष्ण १ सम्बत् १९५१

छूटें चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णबाबा जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

वंसी श्री जु धुनि सुनि वसीवट आई बाल
बुन्दावन सोभा लखी जमुना तटान की । कहे
रससिन्धु कृष्ण हीरा को मुकुट धरे भूषन ति-
रंगी कटिकाऊनौ पटान की ॥ टेढ़ी भौंह टेढ़े
दृग टेढ़ी तान टेढ़ी सान हाव भाव नृत्य करे
सदन कटान की । कोइल पटान सखी भीडहुड़
तान तैसी छूटे चन्द्रमण्डल ते छहरकटान की ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजीवन काशी ।

चामीकरचंचला सी चमक चहुंघा चारु च-
न्दन पर्यङ्क पर चमक चटान की । भालरै मु-
केस की सु चारोओर लागीं तित राजै बलवीर
संग वेटी वृषभान की ॥ कामकलाकौतुक अ-
नूठी छवि छाई राजै दोउन के अङ्ग पै फहर

दुपटान की । मुखविधुमण्डल ते मुक्तालर टूटै
जनु कूटै चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की ॥

बाबू मन्नूलाल जी बनारस ।

विमल अकाश भयो फूले कास आसपास
कहत वनै न सोभा कालिँदीतटान की । मन्नू-
लाल तहाँ रच्यौ रास को रसीले लाल बाँसुरी
वजाय राग गाय कै नटान की ॥ सोरह सहस
गोपी निरतत स्यामा स्याम अंग में भूषन कवि
छाजत पटान की । मुख की मरीचै जाकी बेधि
नभ भण्डल को कूटै चन्द्रमण्डल ते छहर छ-
टान की ॥

काशोनिवासी पं० केदारनाथ जी ।

कासन औ कुसुम विकामित भये हैं सेत
लागी हे विदाई होन मेघ औ घटान की ।
निर्मन भये हैं नीर सरित सरोवर के फूलि गे
सरोज अति ओज प्रगटान की ॥ आये खग खं-
जन चकोर मनरजन भे बन्द भो केदार मोर
मोर के रटान की । छार्द शुभ सर्द महिमण्डल
मयूखै मजु कूटै चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की ॥

कवि पं० गोपीनाथ जो काशी ।

आली बनमाली रासमण्डल रच्यौ है आजु
करिके तयारी भारी जमुनातटान की । मन्द र
मधुर बजाय राग वाँसुरी में करत कलीलें कला
विधि सों नटान की ॥ गापी ग्वालवाल सब ल-
खत निहाल होत वह अनियारी छवि रेशमी
पटान की । सरद निसा में लूटें दंपति अनन्द
मिलि छूटें चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

चाँदनी के सरम फरस करि चाँदनी के रीसैं
करौ न्यारी सेत चाँदी के चटान की । चाँदिही
की चौकी पै चमेली को चगरैं चारु सजि अ-
सवेली सेज रतन जटान की ॥ बेनी द्विज क-
हत बनै न वा समै की छवि रवि से विमल
दुति सेतु दुपटान की । सरद निसा में लूटें
आनँद अटा पै दोज छूटें चन्द्रमण्डल ते छहर
छटान की ॥

बारादरी विमल विलौर की बनाई वेस भं-

भरती लगाई जाल विविध कटान की । चाँदी
की चटान पै चगेरें चारु फूलन श्री सजि सजि
साजी सेज रतन जटान की ॥ बेनी द्विज तामै
स्याम स्यामा आय माँझही ते पहिरि पोशाक
सेत रेशमी पटान की । लूटैं दोऊ सरद निमा
मै सुख जूटि जूटि कूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर
छटान की ॥

वृजचन्द्र जो बभ्रुभोय—कागो ।

सुनि धुनि एई श्री चरण चारु नूपुरनि मृ-
त्युंजय पदवी भई है महेसान की । मधुरादि
दिव्य सक्ति संग मैं मखी सरूप इहाँ श्री त्रिपाद
छोडि कानि नाहि आन की ॥ चिदानन्द को-
मल अमल भूमि माहि पाद चिन्ह अड़तालिसो
जनावत है जानकी । मुख की मरीचि तैं क-
ढ़ति सुखमा यों मनौ कूटैं चन्द्रमण्डल ते छहर
छटान की ॥

रसिक नवीन—कागो ।

रंगभरी वैठी है रँगौली रंग रावटी में सजि वर

सारी मंत्र रेममी पटान को । परम प्रवीन सेज
रसिक नवीन रचि धरी हैं चंगेरें चाम रतन
जटान की ॥ हीरा मणि महल वितान तने
मोतिन के सरद उजरी में तयारी कै अटान
की । लूटौ चलि लाल वेगि बाल सों अनन्द
जहाँ छूटै चन्द्रमण्डल ते कहर छटान की ॥

बाबू अयोध्यासिंह मधुवन जि ना आजसगढ ।

विकसित वारिज वरूथ में बढी है विभा
वार वार वौरें वौरें भृङ्ग लपटान की । घट गर्द
चहूंओर घहरि घहरि घूमि विरि घरि घरी २
घेरन घटान की ॥ औध-हरि अनुपम सरद अ-
वाई पाइ आभा भई औरै आज आंगन अटान
की । कन कन कनदा में छिटकी सु चाँदनी सों
छूटै चन्द्रमण्डल ते कहर छटान की ॥

मारकण्ठलाल उपनाम चिरजीवी कवि कोपागंज ।

हिम सी हिमाचल सो हर सी हयानन सी
सेस सी सतोगुन सो सुखमा अटान की । ही-
रक सी हंस सी हुवाव हास्यरस ऐसी सुधा सी

सरस्वति सौ स्वच्छता सटान की ॥ कवि चिर-
जीव कान्ह कौरतिकिसोरी जू के केलि करिवे
की कला करि कै नटान की । छिति पै चहुंघा
छीर सिन्धु उमग्यौ तो आज छूटै चन्द्रमण्डल ते
छहर छटान की ॥

अखिल अनन्द की अधार ये अयोध्या भई
गई व्यथा सागी विरहानल बटान की । विविध
विधान नभ तोरन पताक छायो गायो गन ग-
ध्रव गुरेजन नटान की ॥ कवि चिरजीव आज
राज रघुराज जू के छूटौ महताबी खेत सुखमा
घटान की । भरत सुफूल ताको महि में लखात
मानो छूटै चन्द्रमण्डल ते छहर छटान की ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

आजु हौं विलोकी वा नवेली अलवेली बाल
वैठीही अटान छवि देखति घटान की । कहा
कहौं लाल बाके रूप की बिसाल छवि याही
है समैया जाके उरज उठान की ॥ सुन्दर क-
पोल गोल बोल अनमोल महा करतीं किलोल

नैन डोल औ पटान की । मन्द मुसुकानि सर-
सानि सरसाति मानौ कूटै चन्द्रमण्डल ते क-
हर कटान की ॥

क्योंह कहि रामराम बरसा वितीत भई स्वच्छ
भे अकास घूटी घिरनि घटान की । हाट वाट
घाटन पै चरचा चहुंघा चली मारग खुले की
कीच नीर निघटान की ॥ आवा गौन भवन
विदेसिह्न की होन लागी सुधि ना मिली हा
याके पीय पलटान की । कूटै उर कर ते लह
की घूट घूटै जब कूटै चन्द्रमण्डल ते कहर क-
टान की ॥

श्री चन्दकला वाई—बूंदी ।

राधे चलि जमुना के तट पटपीत धरे राजत
गुबिन्द तुति दलन घटान की । नाचत सखी-
गन में दै दै ताल नाना भाँति चोरि लित चित्त
कवि मुरवा पटान की ॥ चन्दकला मुरि मुमु-
काय गीत गावत हैं चितवनि है री मद मदन
इटान की । देखि री मुखारविन्द आभा उफ-
नात जिमि कूटै चन्द्रमण्डल ते कहर कटान की ॥

सिंहोर (काठियावाह) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई
राधिका ललाम तेरे भाल की विसाल आभा
ओपत अपार तैसें सोहे कृबि कान की । लोचन
रसाल पुनि विमल विभायता की सोभा मुख-
दाय लसे मोह उपजान की ॥ हास ते प्रकास
होत दन्त की दमक ताकी गोविंद लसत सोभा
नेह के निदान की । ऐसे मुखमण्डल ते भाय
भास भूरि मानो कूटे चन्द्रमण्डल ते कहर क-
टान की ॥

सौसा के महल माहिँ नायिका नबेली बैठी
लाज ते' लुकाइ मुख नेह के निदान की । तहाँ
आइ प्रीतम ने अंक भरि आनँट ते आनन उ-
घाखी ऐंचि साटिका मुजान की ॥ गोविंद सु-
कवि तवै दीपदुति मन्द भई परम प्रकामी प्रभा
आनन अमान कौ । विमल विराजी सोई ओ-
पत अपार मनी कूटे चन्द्रमण्डल ते कहर क-
टान की ॥

चाँदनी सी फ़ैली चारु चाँदनी बदन की ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

चाँदी के चौतरा पर चाँदी को तख्त विछो
तैसीई चमक होत चाँदी के सदन की । कहे
रससिंधु फेर सारी करतारौ भारी मोतिन के
माल हार जोत जो रदन की ॥ गावत बजावत
है नृत्य करे स्याम संग भुण्डन की भुण्ड खड़ी
भरी वो मदन की । राधिका जी गोरी भोरी
नवलकिशोरी ताकी चाँदनी सी फ़ैली चारु
चाँदनी बदन की ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजोवन काशी ।

एक तो सखीजन की मण्डली सुघेरे रहै
ननद जिठानी रहै पाहरु सदन की । दूजे गु-
रुजन की सुभीर सौ लगीही रहै एही बलवीर
चेती लाज विरदन की ॥ बावरे भये ही तुम
साँवरे विहारी अंग छार्ड है उमंग वहकावरे
मदन की । कैसे गृहअंगना ते अंगना पधारै
लाल चाँदनी सौ फ़ैलै चारु चाँदनी बदन की ॥

कवि पं० अम्बाशंकर जी—काशी ।

छाकी मद् जोवन की चौवन चलाकी मढ़ी
 सोवन की पाटी पढ़ी मदन सदन की । स्याम
 मृदुमूरति ज्यों रानी रसराज जू की मानी है
 प्रमानी दानी चारहू पदन की ॥ राधे चलि
 देखि बैठी अँठी चारु चौकी चढ़ी कारीगर नीके
 गढ़ी नाग के रदन की । सकर सुकवि कहै क-
 विता न मान प्यारी चाँदनी सी फ़ैली चारु चाँ-
 दनी वदन की ॥

बाबू मन्नूलालजी—काशी ।

अवध की रानी ने बोलाई न्योत रानी सबै
 करै मू देखाईं धाईं सुर के सदन की । उमा
 आईं रमा आईं मारदा सचीह्न आईं रती
 आईं सजि कै जे मोहनी मदन की ॥ मन्नूलाल
 कछो तव कौशिला सुमित्राजी सों बोलि लाउ
 दुलही जो कोशल नदन की । ल्याईं अँगनाईं
 मैं घूँवट के उधारत ही चाँदनी सी फ़ैली चारु
 चाँदनी वदन की ॥

पं० केदारनाथ जी बनारस ।

ये जू नदनन्द एक गोरी बरसाने माहिँ तुम
को बुलाई चलो कीरति सदन की । कोमल
मृनाल कजह्र तै अति खीन कटि पीन कुच
दन्त दुति दाडिम कदन की ॥ भौँहैं धनु बद्ध
ता हगी हैं अङ्ग आठ केर ताकनि चोटीली
नेज तेजना मदन की । जनो चन्द्र पूनो को
प्रकाश ललना को दूनो चाँदनी सी फ़ैली चारु
चाँदनी बदन की ॥

कवि गोपीनाथ जी काशी ।

सीस गृह सीमन मै स्वरण-सरो सी बाल
वानिक विमल बेल सुखमा सदन की ॥ सेत
जरी वूटिन विचित्र जरी सारौ मोहे अंग प्रति
अंग ओप बाढ़त सदन की । गोपीनाथ पूंजी
सुप्रराई परी वाके हाथ सरकी न जाके तिय
काम के कदन की । चाँदनी विनाही दिव्य
दसह्र दिमान माहिँ चाँदनी सी फ़ैली चारु
चाँदनी बदन की ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

सरस सिंगार साजि सांघे की समूह भरी
जरीदार सारी सो सपेदही सदन की । मजेदार
मोतिन की माल अरु हालैं मन्द दीने मन मा
धव मे मोहनो मदन की ॥ हरे हरे हेरैं हीय
हौमला हजारों धारि हँसिबे मे काँत पाँत हीरा
से रदन की । चन्द की जुन्हार्दे मे सुजात ब्रज
चन्द जू पै चाँदनी सी फौली चारु चाँदनी व-
दन की ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

वेगही चली तौ मे लग्वाऊँ वाल बेनी द्विज
वैठी है दरीचो खोलि आपने सदन की । कु-
न्दन के रग से सवाई है गोरार्दे अंग चपला सी
घोगुनो चमक है रदन की ॥ रूप की निकार्दे
वाकी वरनो कहाँ ली देखि धरनी धमो सी
जाति धरनी मदन की । कातिक के चन्द सी
मुकन्द जनु चारोओर चाँदनी सी फौली चारु
चाँदनी वदन की ॥

मानिक सी ललित ललाई लाल ओठन को
हीरा नग पाँति सी है अवली रदन की । खं-
जर से परम कटीले हैं नुकीले नैन भृकुटी बि-
कट बह्म धनुहीं मदन की ॥ वनी द्विज वनिता
न दूजी लग बाकी सर लार्दे है लोनार्दे लूटि
विध के मदन की । मैली करि सरद मयङ्क के
प्रभा की आव चांदनी सी फ़ैली चारु चांदनी
वदन की ॥

कोषागजनिवासी कवि सालिकराम जी ।

एहो घनस्याम तीर वा दिन जो देखी वाम
वार २ पूछी मोते व्याकुल मदन को । सोई ब
षभानु की दुलारौ है अनूठी याते दूसरी न देखी
कामकामिनौ कदन की ॥ कहै सालग्राम ता-
की उपमा कहां लों कहीं मौन भई बानी याते
ब्रह्मा के सदन की । सरद है न पूनो है न तारा
को प्रकाश ककु चांदनौ सी फ़ैली चारु चांदनी
वदन की ॥

पावू अयोध्यासिंह - मधुवन जिला आजमगढ ।

कर पग जलजात सरिस भये हैं संजु गति
मै भई है सोभा सरस नदन की । आनन अ-
मन्द चन्द सरिस दिपन लाग्यो जाहि सों जगी
है जोति अतन मदन की ॥ हरि-औध जोवन
सरद की समैया पाइ कुन्द की कली लौं भई
पाति है रदन की । चंचलता आँखिन ठनी है
खजरीट ऐसी चाँदनी सी फ़ैली चारु चाँदनी
वदन की ॥

कोपागंजनिवासो मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि ,
चाँदनी सो भयो अंग होरन के भूषण ते
चाँदनी चंपानी दुति काम के कदन की । चाँ
दनी वगारन चमेलिन के हार लाग्यो चाँदनी
चकाय दीन्ही सहिमा रदन की ॥ कवि चिर-
जीव चली चाँदनी निसा मैं आज चन्द्रमुखी
राधे प्यारी नन्द के नदन की । चाँदनी सो सारी
पेँधि चाँदिनीहूँ मात कीन्ही चाँदनी सी फ़ैली
चारु चाँदनी वदन की ॥

काहे मेरी कटि ये छिनैही छिन छीन होति
काहे गति मन्द भई अनि कै पगन की । काहे
कछु उर मैं जनान लाग्यौ बोझ कैसो काहे चि-
कनाई चढ़ी गत अगदन की ॥ कवि चिरजीव
काहे पुलक पसोज्यौ अंग साथ होत नेकु कवीं
नन्द के नदन की । काहे चन्द रोज से हमारे
सुख चन्द्रमा कौ चाँदनी सी फौली चारु चाँदनी
वदन की ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

होत है अमःवस न पावस कवौहूँ जहाँ पू-
छत निसानी तुम ताहि के सदन की । अवसि
दिखाइहौँ चलो जो साथ मेरे पर हँसी ना करैहौँ
नाम नन्द के नदन की ॥ नित प्रति पूनो की
सुहावनी रहै है निसा अहै तेज साली यदि
छोटिही कदन की । मोहि मति जैहो मति गति
नाहि रहो देखि चाँदनी सी फौली चारु चाँदनी
वदन की ॥

मति घवराय नेकु प्यारी खाय हाहा जिन

कहा भयो जागतीं जो स्वामिनी सदन की ।
रैन है अंधारी तजि सेत पेन्हु स्यामसारी धरि
द्वै उतारि घूंघुरन या पठन को ॥ भयो है करार
तोसें आजही मिलाद्वे को आस करै नास जनि
नन्द के नदन को । काम है प्रकाम को न मा-
रग बतै है तैरी चाँदनी सी फौली चारु चाँदनी
वदन को ॥

चन्द्रकला वाई - बूँदी ।

सोरहो सिंगार सजि स्याम सैं मिलन काज
राधिका सिधारी मनु वनिता मदन की । मन्द
मन्द मारग में चलत सखीन संग निज गति
आगै गति गज की कदन की ॥ चन्द्रकला भृ-
कुटो कमान नैन बानन से तारन समान क्वि
छाजत रदन की । हँसत लसत अति चन्द मो
सुखारविन्द चाँदनी सी फौली चारु चाँदनी व-
दन की ॥

सिहोर (काठियावाह) निवासी कविगोविन्द गीष्णाभाई
राधिका ललाम तेरे कंचन सी काय कैरी

ओपत अनूप आभां कुहू के कदन की । तामे
निरमल नख नखत सें लसे हैं पुनि विमल वि-
भाय आभा रम्यही रदन की ॥ कौंधत कटाक्ष
कांति विमल विशाल सोय आभा अधिकाय
मानो मुखमा सदन की । गोविंद सुहाय ऐसे
अग तामें लसे रम्य चाँदनी सी फ़ैली चारु चाँ-
दनी बदन की ॥

उन्नीसवा अधिवेशन .

मिती कार्तिक शुक्ल , सम्बत् १८५१

अनंग मदमाती है ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज

उपनाम रससिंधु ।

लगत सुहाती लाती अतर लगाती छाती
पलंग विछाती जाती सोभा सरमाती है । कहे
रससिंधु राती नेह वरसाती भाती महल स-
जाती वाती रोसनी कराती है ॥ खड़ी मुस-
काती नैन भौहं मटकाती गाती सब को रि-

झाती आती लङ्क लचकाती है । बाजाह बजाती
बतराती इतराती नाच स्याम को दिखाती ये
अनङ्ग मदमाती है ॥

बाबू रामकृष्ण बर्मा सम्पादक भारतजोवन काशी ।

कामकाज गृह के सँवारि सब भोरही सो
भोजन कगाय गुरुजनन सुवाती है । सुन्दर सु-
वासन सों अंगन बसाय चारु सेज की विछाय
रूप हेरि हरषाती है ॥ आलीगन मण्डली कों
मिस सो हटाय परि पाय इष्टदेव बार बार या
मनातो है । आवैं बलवीर पीर हीय की नसावैं
इमि वैठी परयङ्क पै अनङ्ग मदमाती है ॥

जाहि मत कुङ्क की अँधारी निसामाँह देख
कारी घटा चहूँओर घेर घहराती है । गुरुजन
मंक कुललाज कों विचार आली गगन निहार
मगवीधी ना लखाती है ॥ घन की अँधेरी चका-
चौंध देखि कौंधन की बड़े बड़े वीरन की छाती
दहलाती है । जानति हों मेरी कहौ नेक ना
सुनैगौ अरी वावरी भई है तूँ अनङ्गमदमाती है ॥

कन्नूलाल रसिक नवीन—काशी .

जोमभरी जोवन जवाहिर जलूम भरी आवत परी मी चली मग मैं लखाती है । ऐंडि २ लचक लचक लचकादू लङ्क वङ्क भृकुटी के सैन नैनन वुभातो है ॥ रसिक नवीन है प्रवीन कला कामन में अंग २ ज्वानी की उमंग दरसाती है । अति दूतराती नेक मन मैं न लाता सङ्क नोखी नई अगना अनङ्ग इदमाती है ॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथ जी ।

अंग अंग चंचल भरो है चंचला सौ चारु ताकनि तिरीछी नैन भौहैं मटकाती है । सुन्दर रँगौलो चटकीलो पहिरै दुकूल भूषन जरा-उन की जोति भलकाती है ॥ आंचरो न बांधति केदारनाथ सूधो कभूं आंगी की तनौहू सदा खुली रहि जाती है । बोलिवे को औरई उचारै ककु औरै मुख आठो जाम अंगना अनंग मदमाती है ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

लाल लखि आई हौं तिहारे लिये ऐसी बाल
जाकी ना मिसाल हाल बनिता लखाती है ।
रम्भा रमा मैनका तिलोतमा तुलै न तुल्य विध
सों लोनाई की ले आई लूटि थाती है ॥ बेनी
द्विज बेगही चलै तो मैं मिलाऊँ ताहि जाहि
लखि पतनी मुरेस की लजाती है । राती रस-
रंग की उमंग भरी ज्वानी अंग अंगना अजायब
अनंग मदमाती है ॥

बा० माधोदास जी—काशी ।

मरकत मनौन के जेहर जगवदार हार चार
वाजूवन्द किङ्किनी सुहाती है । स्यामरंग सारी
मखतूल की किनारी कोर स्यामही सुचोली
चारु माधो मन भाती है ॥ मृगमद टीको नीको
भाल पै विराजै स्याम स्यामही तमाल के नि-
कुंज माह जाती है । स्यामही सिंगार साजि
सावरी सलोनी बाल स्यामहो के रंग में अनग
मदमाती है ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

वैठी है सखीन बीच बातें बतराती कबों
कबों गौत गाती कबों बाजन बजाती है । कबों
मुसुकाती दरसाती दन्त पाँतिन कों बातनि
रिसाती कबों उठि भागि जाती है ॥ देखो छिपि
लाल हाल बाल को निहाल होहु आजु कछु
याकी चाल औरहो बुभाती है । ही जो सर-
मायी कबों मुखहू दिखाती नाहिँ सो यों भई
वावरी अनंग मदमाती है ॥

सोरहों सिंगार साजि भूषन बतीसो राजि
संग से सखीन के हँसौन दरसातो है । चन्द
सरमाती कंज खंजन लजाती पीर कीरहिँ व-
ढाती दुति दामिनि दवाती है ॥ शङ्ख के नि-
पोरशङ्ख संभुहि बोलाती वँव रंभ थंभ है अचंभ
केहरी कुढ़ातो है । मन्द मुसुकाती बतराती
छितराती ओज आती चली मौज मे अनंग म-
दमाती है ॥

गंधौलो जिज्ञा सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जी
एपनाम ब्रजराज ।

नबला के अंगन में योवन अवाई टगकोर
श्रुति और टुरि दुति अधिकाती है । पगन मै
छाई मन्दताई कटि छीन दीन अलकौ छवान
छूकौ छिति परसाती है ॥ रावरो संयोग ब्रज-
राज नित चाहति है मिलि सुख लूटौ छिन २
अकुलाती है । आठौ जाम रहै ऐसे रति रसरग
भरी जैसे रति रहति अनग मदमाती है ॥

मेरे टिग आय पूछै नितही कुशल केम हौंहूं
कहौं कुशल सुनत हरखाती है । सुरति कै तुरत
चितेरिनि को बोलि लेति सुरति लिखाय कै
लगाय लेति छाती है ॥ सपने मै देखति तुम्हें
हीं ब्रजराज नित सौतुक के हेत चित चिति
विलखाती है । रावरे मिलन लो हिये मे अभि-
लाप राखि रैन दिन रहति अनंगमदमाती है ॥

कोपागजनिवासी कवि सालिग्राम जी ।

आज लों न वीती द्य मासह्र तिया के

आये जोवन को जोर कोर अधिक देखाती है ।
दरपन सकारे लै वैठी वारजा पै सौंहे चितवति
चहुंओर मन्द मुसकाती है ॥ कहै सालग्राम
स्याम चलि के विलोको ताहि तेरे विन दरस
न नेकु कल पाती है । कमति उरोज रोज अग
तोरि जहुंआति कीन्हे चखु चंचल अनग मद्-
माती है ॥

श्री चन्दकला वाई - वंदी ।

आई में निहारि तुमहू तो चलि देखौ स्याम
आज राधिका की छवि अति मरसाती है । स-
कल सिंगार साजि अधिक उमाह धरि रावरे
मिलन हेत मन अकुनाती है ॥ चन्दकला इक
टक् निहारै मग रावरो ही कवहुं तुम्है ही लजा
नन मूँटि ध्याती है । चन्द तें चिरी सी विजुरी
सी वृषभानुलली वैठी परजंक पै अनंग मद्-
माती है ॥

दावू पयोध्यासिंह - मधुवन जिला आजमगढ ।

कठिन कियेहूँ केलि कसि भुज पासन सो

स्वामिनी किलकि अंक पिलि पिलि आती है ।
 दलि दलि टसन सों बिदलि अधर दीनो तज
 ना दबति मुरि २ मुसक्याती है ॥ हरि-औध
 हार हिय मानति न कौनहूँ है जामिनी गयेहूँ
 ऐसी गति दरसाती है । रति रन रंग हिय बै-
 सही हैं सुनो लाल अंग २ अजहूँ अनंग मद-
 माती है ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगोलाभाई ।

छिन में मदन माहिँ छिन में बहीर पुनि
 छिन में दुवार तक दौरि दौरि जाती है । छिन
 में अटा पै चढि भाँकति भरोखे पुनि छिनही
 में उतरि के आँगन में आती है ॥ छिन में
 हँसत अरु छिन में उदास होत ऐसेही अनेक
 तेरी गति दरसाती है । गाविँद सुकवि तातें
 मन माहिँ जाने हम वावरी हूँ फिरत अनंग
 मदमाती है ॥

कारी अँधियारी अति भारी भयकारी निसा
 तामें तजि स्यामसारी चलन चहाती है । मन

में न माने कैसे त्राम जीव जन्तुन को देख अ-
भ्यकार अति कांपतही छाती है ॥ गोविंद सुकृषि
कहा बेर बेर कहुँ आली मानस में मोच कुल-
कानि को न लाती है । यातें उर जाने हमें
प्रीतम के प्यार माहिँ वावरी बनी है तूं अनंग
मदमातो है ॥

तारन समेत तारापति फौको परिगो ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिधु ।

लोचन जु पंचवान भौंह मनमथ चाँप सुन्द-
रता लूटि के विरंचि मानो धरिगो । कहे रस-
सिधु फेर इन्द्र को धनुष मारी लक्ष्मी के भू-
षन सो सभी अंग भरिगो ॥ सभू से लसत कुच
सांतीमाल गगधार पन्नग भी छूटी लट पूजा
स्याम करिगा । उदित मुखारविन्द रवि सो
प्रिया को देख तारन समेत तारापति फौको
परिगो ॥

द्विज पलक पलौ ना लगी चारौ जाम नैनन में
नीर वीर हरि हारि भरिगो -। चाली निसा
आनी लाली नभ मे लखाई देत तारन समेत
तारापति फीको परिगो ॥

छबोले कवि बनारस ।

गरिगो गुमान गुन गौरि को गिरा को सुनि
रूप रति रंभा को पताका लौं उतरिगो । सु-
कवि छबोले परिपूरण पुरन्दरी को अमल अपू-
रव उजामु तामु हरिगो ॥ मण्डित अखण्ड नव
खण्डन प्रचण्डमान राधा कवि पहर प्रभात सों
पसरिगो । औतरी जवै हीं बृष मूरजसुता है तवै
तारन समेत तारापति फीको परिगो ॥

वा० माधोदास जी काशी ।

ललिता कहौ है बृषभान की सुता सों वीर
देखु द्विजराज आज कैपो तेज भरिगो । सरद
की राका पाय साका नभमण्डल से होय के
निसंक पंकजात सो पसरिगो ॥ ल्याई भौन
भीतर सों वाहिर दिखायवे कों तहाँ एक कौ-

तुक सु माधौ मन हरिगो । प्यारी सुखचन्द को
प्रकास गो अकास माह तारन समेत तारापति
फ़ीको परिगो ॥

महाराजा सर रावणेश्वरप्रसादसिंह बहादुर

के० सी० आई० ई० - गिहौर ।

संग सखियान लिये आई सजि साम पास
सुखमा समूह भौन भीतरै वनरिगो । जगमगी
जोत वारी जेवर जड़ाव अंग हीरन-जटित भांग
टाको भाल भरिगो ॥ घूंघट उघारि मंजु बदन
विलोकतहीं सुखवि गुमान काम वामही को
हरिगो । फैलत प्रकास मिथलिसनन्दनी को
नीको तारन समेत तारापति फ़ीको परिगो ॥

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिहौर ।

कौरतिकिशोरी बेठी चौहरे अटा पै सजी
सौरभ तरंग सौ चहुंवा चारु भरिगो । वेदिन
सँवारे भाल लाल मिलिबे के काज अंगन उ-
मंग त्यों अनंग को पसरिगो ॥ घूंघट उघारि
भुक्ति भाकतौ भरोखा मग बदन प्रकास मार-

ठरिगो गुमान डूतै तामरस ही ते उतै तारन
समेत तारापति फीको परिगो ॥

गोरे गात अंग राग करिकै कपूर धूर कीन्हो
अभिसार उर आनँद पसरिगा । साजि सेत भू-
षण जटित हीर भीरन सों तीरन रछ्यौ री तम
देश ते निकरिगो ॥ ब्रजराज हेत साजि बादले
की सारी तामे मोतिन किनारी सों प्रकास डूमि
भरिगो । घूँघट खुलत मुख तारापति भयो नभ
तारन समेत तारापति फीको परिगो ॥

चन्द्रकला वादें - बूँदी ।

आई तजि गेह में न आयें बलवीर वीर कैसे
धरौं धीर नीर नैनन मै भरिगो । पीरी परी देह
सीरी मोतिन की माल भई वीती है निसीथीनी
चकोर चैन ठरिगो ॥ चन्द्रकला होत चटकाहट
चहूँघा घोर ठौर ठौर ताम्रचूड सोर जोर क-
रिगो । लाललाल वाटर भये हैं नभमण्डल में
तारन समेत तारापति फीको परिगो ॥

बाबू प्रद्योत्थासिंह - मधुवन जिला आजमगढ़ ।

बीजुरी विचारी हूँ बिकल बिलखानी फिरी
हौरक ममाजहूँ को तेज सब हरिगो । चूर चूर
भयो चोप चुन्नी की चित्र कल्लूँ को दुतिवारे
दीपक दिमाकल्लूँ उतरिगो ॥ हरि-शोध बदन
बनावत ब्रजेश्वरी के विधिहूँ को बहुरो बना-
इवो विसरिगो । तरनि के तन में न तनक लु-
नाई रही तारन समेत तारापति फीकी परिगो ॥

कोपागंजनिवासी कवि सालिग्राम जी ।

कहै कवि कौन कवि कौरतिसुना की आज
कचनलता सी खासो सुखमा ते भरिगो । ना-
गिन सी बेनो तैसे खंजन जगल नैन भृगुटी
मनोज चाप आपहौ ते धरिगो ॥ सोहै सालग्राम
चक्रवाक ते उरोज दाज केहरि कमर-खौन उ-
पमा निदरिगो । आनन अनूप सब व्याधि ते
बिहौन याते तारन समेत तारापति फीकी प-
रिगो ॥

(१२८)

बीसवा अधिवेशन ।

मिती अगहन बदी १ सम्बत् १९५१

रासमण्डल गुपाल को ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

वज्रत मृदङ्ग इन्दु लेखाने वजाइ खूब रंग-
देवी करताल स्यामा देय ताल को । कहे रस-
सिंधु फेर माधुरी ओ मालतीहु दोऊ जो सारंगी
ले बजावे वह ग्याल को ॥ बोन तुंग विद्या चित्र
लेखा मुहचग वारी ललिता विसाखा गान करे
नन्दलाल को । विन्दा का जु हाव भाव चचलः
को तान सखौ नित्य राधिका का रासमण्डल
गुपाल का ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजीवन काशी ।

सरद निसा कौ खच्छ चांदनी चहुंधा छार्डे
को कवि वखानै री वहाँ के सुनु हाल को ।
कोटि कामदर्प को सुमर्दन करनहारो लैवो
गत थिरकि अनोखे नन्दलाल को ॥ देवन कौ

भीर सी लगी है 'नभमण्डली में' नैन तरसै हैं
री अखण्डल भुआल को । मान कही मेरी मान
छाड़ि है नवेली आज एरी चलु देखुरासमण्डल
गुपाल को ॥

एरी मनमोहन की मोहिनी नवेली सुनु
छाड़ि है री वावरी सखीजन के जाल को । स-
रद निसा की आज सोहति अनूठी छवि दूनो
चन्दपूनो ते सरूप नन्दलाल को ॥ तासों मिलि
वीर मुधा-रूप को अचै के भलै सुफल करै री
बलि लोचन विसाल को । देखैं सुरमण्डल अ-
खण्डल समेत नभमण्डल ते आज रासमण्डल
गुपाल को ॥

कवि गोपीनाथ जो - काशी ।

चाँदनी विलोकि स्वच्छ सूरजसुता के तीर
वीर बलवीर देख्यौ वाँसुरी रसाल को । सारो
सज सुन्दर किनारीदार नारी चली कोऊ सेत
सवुज वसन्ती कोऊ लाल को ॥ सोरहू हजारन
के बीच बीच गोपीनाथ हाथ गहि नाचै सम

साधे लिये ताल को । देखत बनत आली ल-
टक निराली यह राधिका को राव रासमण्डल
गुपाल को ॥

बाबू मन्नूलालजी—काशी ।

धन्य धन्य ब्रज धन्य धन्य ब्रजवासिन को
धन्य धन्य गाय गोपी धन्य ग्वालबाल को । धन्य
नन्द जमुदा उपनन्द सब धन्य धन्य धन्य धन्य
कीरति ब्रषभानजी के भाल को ॥ धन्य गोवर-
धन जाहि कर पै सुधास्थौ आप धन्य वामुरी जो
भावै मन्नूलाल लाल को । धन्य धन्य ब्रन्दावन
भूमि नवकुंजन की धन्य जहाँ होत रासमण्डल
गोपाल को ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

नेक नेक माखन दै हम री नचायो जाहि
आखि मूढ़ि कैसे के विलोकै वह लाल को ।
जा तन में साँवरो सनेह सों सनेह लायो ता तन
से कैसे के उढावै मृगछाल को ॥ माधो निज
हाथन तें कवरी करी है जाहि कवरी कहेंगे

भस्म लावनो सुभाल को । ऊधव जू वावरो मो
वकत ब्रथाही बीर याने नहि देख्यौ रासमण्डल
गुपाल को ॥

काशोनिवासी पं० केदारनाथ जी ।

कालीदह कूटि कै कन्हार्द्र नाग नाथ लाइ
वाँसुरी वजाइ खेल कौन्हे इन्द्रजाल को । कोपि
कै पुरन्दर केदार जू बुलाइ मेघ वारि बरसायो
जीर जैसे प्रलैकाल को ॥ वाम छोर नख पै गो-
वर्द्धनगिरिन्द्र राखि बूडत वचायो ब्रजवासी गाय
ग्वाल को । कुंजवनवास मंजु मदनत्रिलास हाम
ऊधो ना भुलाय रासमण्डल गुपाल को ॥

जोरि २ अँगुरी ते जोरी धोरो वैसन की
रोम २ जोवन उमंग भरौ वाल को । नाचिकै
नचावनि हँसाइ कै हँसनि मंजु गाइ कै गवा-
वनि सुवारि सुर ताल को ॥ स्वारिन कै मध्य
केदारनाथ मयनरूप करिकै कलोल हस्यौ मन के
मलाल को । सालि २ उठत करेजे सुधि कीन्हे
चैन ऊधो ना भुलाय रासमण्डल गुपाल को ॥

छवीले कवि बनारस ।

सरद निसा मै आजु अबमि बिलोकिये री
हौंछ लखि आई कही ऐसी हाल हाल को । सु-
कवि छवीले देवदारन समेत नभमण्डल ते देखि
होत परम निहाल को ॥ सुखद बिलास सकुल
पूरनप्रकासमान तिह्रपुर ता समान उकति न
ख्याल को । कोटि चन्द्रमण्डल को खण्डन क-
रत ब्रजमण्डल अखण्ड रासमण्डल गुपालको ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

एक समै वनिता बोलाई कान्ह कुंजन में
पूरन प्रकास लखि चन्द्र कवि जाल को । आई
बेगि ब्रज की लोगाई तहाँ बेनी द्विज गावत
बजावत मृदंग डफ ताल को ॥ है है ब्रजवालन
के बीच बीच नाचै स्याम ताके मध्य नाचै लिये
राधे नन्दलाल को । गोपी वनि देख्यो चन्द्रभाल
सो न जान्यो हाल खास इन्द्रजाल रासमण्डल
गोपाल को ॥

दा० हरिश्चन्द्रप्रसाद जी—काशी ।

देह की न सुधि रही गेह को न खोज मोहि
नेह घटि गयो अति पीतम सुचाल को । घूमि
जात सौस कहूं भूमि जात नय-नाक भूमि जात
टूटि वेना जड्यो मनि लाल को ॥ दया फरमाय
हरिश्चंकर को ध्याय आली दीजिये नसाय यह
विपति करान को । तेरिये दोहार्द चित व्याकु-
लता छार्द मेरे जौलों देखि आर्द रासमण्डल
गुपाल को ॥

सनमोहन कवि ।

वैठी माजि मन्दिर में सुन्दरी दरीची बीच
काज वृजराज आज सौति हिय साल के । लो-
चन सरोज से वदन चन्द छौनी कटि वेनौ कुच
सोभा वह देखे अनै वाल के ॥ नीलमणि आस
पास कनक मुदाने लसे मोहन विचारि चारु
गोरी गल माल के । मानौ स्याम पीत के सुरंग
यों लखात भास भावत प्रकास रासमण्डल गु-
पाल के ॥

महाराजकुमार श्री. गुरुप्रसादसिंह जी—गिझौर ।

बाजत रबाव बीणा तानपूरा स्वर सिंगार
सरिग-रिगम तान ध्रुवपद ख्याल के । राग रा-
गिनीन अलङ्कार कूट तानन से करत अलाप
प्रस्तार स्वर जाल के ॥ तकिट धृकिट धित्ताधा-
कृत मृदंगधृणि कडानधा कडानधा मान परन
पडाल के । विषम अतीत अनाघात सम ताल
के सुद्रुतगति नृत्य रासमण्डल गुपाल के ॥

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिझौर ।

सरद मयङ्क का मरौचिन लो आवैं कटि व-
दन मयङ्क तै प्रकाम वह वाल की । बाजै पग
पैजनीन किङ्किनी मधुर धनि बजत अनैक जन्त
मनु सुर ताल की ॥ नीलमनिमान बीच बीच
पुखराज मनौ कृष्ण बीच बीच छूटा छूटै ब्रजवाल
को । आर्दे सजि साज मनिमन्डिर से मानो
ब्रजमण्डल से होत रासमण्डल गुपाल की ॥

कोपागजनिवासो मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि,
कर सो प्रकारि कर ब्रज को किसोरी भवै

पेरी भरे भालन झुलाये गरे माल को । कावो
केत कौतुक वगारि काम ही को जाके अंगनि
वेभूषन विराजै रत्न जाल को ॥ कवि चिरजीव
प्राज सरद निसा में जहाँ केलि करै स्यामा
स्याम कीरति विसाल को । भूत न ऐसो औज
अनन्द उमंग वारो सुजस सँवारो रासमण्डल
गुपाल को ॥

चीर को हरन हरै हिय को हेमन्त ही में
मिसिर मै फाग मोहै गोपी ग्वाल जाल को ।
काम को सहोत्सव वसन्त ब्रजवालनि में काली-
नाग नाथनोहूँ ग्रीषम में लाल को ॥ कवि चि-
रजीव कृष्ण अष्टमी सु पावस में पालनो समेत
सुख सुखमा विमाल को । रंजन करत रोम र
अवनी में आज सरद निसा में रासमण्डल गु-
पाल को ॥

गंधीलो जिन्ना सीतापुरनिवासी थावू जुगुलकिशोर जो
एपनाम बृजराज ।

अजहूँ लीं करक करेजे करकत रहै विसरै

छिनौ न अलि रैन दिन ख्याल को । कर गहि
खैंचि खैंचि बसन सखीजन के भरि भुज भेटिबो
भटू री भलो लाल को ॥ तब ब्रजराज अब म-
थुराधिराज भये हमैं सौंपि विरह बिथा के यहि
हाल को । सूलत हिये में वह भूलत न केहू
भाति हँसि हँसि कीबो रासमण्डल गुपाल को ॥

लखनऊनिवासी हनुमानलाल कवि

शङ्कर को तप जप बिदित अदित सम सत्य-
हरिश्चन्द्र अहङ्कार दस भाल को । द्रोपदी को
अम्बर स्वयम्बर श्रीजानकी को करन को दान
ग्यान जनक-भुवाल को ॥ नारद को गुन गान
वरदान शारद को हनुमान रामजू ते अपर कृ-
पाल को । काम को सुमन धन सुरभी हरित
वन शरद निशा मै रासमण्डल गुपाल को ॥

श्रीचन्द्रकला वाई - वूँदी ।

नटवर वैष साजि मदन लजाने लाल मन
हरि लीनौ हाल नारिन के जाल को । अमित
स्वरूप धारि नखसिख सोभ मनी राख्यौ गहि

हाथ हाथ भिन्न भिन्न बाल को ॥ चन्द्रकला गाय
गीत भ्रमत सनेह सने वरनत नारदादि जस
जनपाल को । सुमन समूह बरसावत विमान
चढे देखि देखि देव रासमण्डल गुपाल को ॥

बाबू प्रयोध्यासिंह - मधुवन जिला आजमगढ़ ।

बस मैं न आपने हौं निबस भई हौं महा
वारि ठरै बैरीहूँ दृगन लखि हाल को । बुद्धि
विनसानी लेस रह्यौ ना विचार हूँ को वेदन
वढत भाखे विरह हवाल को ॥ हरि-श्रीध की
सौं जोग बतियां अनूठी अहैं केवल बतये इतो
करि बहु ख्याल को । कैसे वह साँवरो सरूप
हिय से ते कढ़ै जधा कैसे भूलै रासमण्डल गु-
पाल को ॥

कैसे सुधि वाँसुरी की धुनि को विसारि
दीजे कैसे दूर कौजे वांकी भौंहन के ख्याल को ।
मन्द मुसकान कैसे चित्त पै चढ़ै ना कवीं ध्यान
छूटि जावै कैसे लटकीली चाल को ॥ हरिश्रीध
की सौं सब करिहौं तिहारी कहौ के

दूतो तजि बहु जाल को । कैसे वह साँवरो स-
रूप हिय में ते कट्टै ऊधो कैसे भूलैं रासमण्डल
गोपाल को ॥

काकरौली निवासी कवि घनश्याम जी ।

वृन्दावन सघन सु बोलत मयूर मंजु कुहुंकत
कोकिला कपोत कीर चाल को । घनश्यामप्यार
मुख सुनि मुरली की धुनि थैई थैई नाचे नृत्य
गोविंद विसाल को । वाजत मृदंग तक् धुव-
किट् तडिलांग धा धा किट धकिट सु नीको
सुर ताल को । लालझू की मन्द मुसकानि रा-
धिका की ओर देखैं ब्रजवाल रासमण्डल गु-
पाल को ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगोलाभाई ।

वाजत मृदंग चंग नौवत नफेगी अरु सारंगी
सितार चित्त चोरत रसाल को । नाचत विहारी
ब्रजवनिता के सग तहाँ उरुपादि गति धरि
आनंद विशाल को ॥ गोविंद सुकवि सोय पेश्वन
कों प्रेम धरी अस्वर ते आय सवे माध मुरपाल

को । या समै तूं मान करि वैठी क्यों अबोल
आली देखन को चल रासमण्डल गुपाल को ॥

निछावर करति है ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिधु ।

गौवन चराय कान्ह साँभ समै आये गेह
पुष्पन की वृष्टि कीन्हें मन को हरति है । कहे
रससिन्धु सखी आरती जु राई लोन स्याम पै
उतार फेर पायन परति है ॥ सप्तदीप नवखड
चौदे लोक सप्तसिन्धु तैंतीस करोड देव वार के
धरति है । काटि मैन कोटि इन्दु कोटि रमा
कोटि रवी नन्द के कुमार पै निछावर करति है ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतेंजोवन काशी ।

आजु नँदगाँव में महोक्ख अनूठी छायो ज-
सुटा लै लाल जू को अङ्गनि भरति है । ग्वा-
लन की भौर चलौ आवाति है भोरही सों गो-
पिन की मण्डली प्रसन्न निकरति है ॥ याचक

समूह जुरे द्वार पै पुकारैं शुभ बीर नन्दरानी
तिन्हें दाम बितरति है । जीवै चिरकाल या
पियारो नन्दलाल यातें भर भर थाल को नि-
छावर करति है ॥

बा० माधोदास जी - काशी ।

दीरघ उसांस लेत चेतहुं विमारे देत सेत
सेत बुंदें अखियान ते ठरति है । रावरे सुध्यान
से पखान पूतरी सी होत साँवरो कहत ताहि
अङ्क में भरति है ॥ बकि बकि उठै बाल वा-
वरी सी बोलै बैन चैन ना दिखात गात आ-
पनो गरति है । माधव जू वेगही बिलोकिये
विदा की वेर नातो प्रान आपनो निछावर क
रति है ॥

कवि पं० गोपीनाथ जो काशी ।

ननद जेठानी वानी सुनत विकानी सवै सासु
बोल सुनिवै की साधन भरति है । नारी रूप
वारी जेती वृज की बसनवारी अब तो न कीज
वाकी सर को अरति है ॥ गोपीनाथ वनिता न

रासी है विधाता रची देवर निहार हिये आ-
नँद भरति है । सासु हीत परम हुलास वा प्र-
कास देखि प्रानधन प्रीतम निक्कावर करति है ॥

काशोनिवासी पण्डित द्विज वेनी कवि ।

सान सुघराई की निहारि हारि मानै मैन
असुनीकुमारहू न सर की अरति है । पारिजाति
परम लजात पद पेखि २ पूरन लजाय जाय
पंक मे परति है ॥ वेनी द्विज लाला कृष्णलाल
को प्रताप लखि इन्द्रहू हमेस हिय अन्तर डरति
है । कविता रसीली जोई रसिक सुनै है कान
मान पद पद पै निक्कावर करति है ॥

कान सुनि जनम सुजान कान्हजी को नन्द
दान दै दै द्विजन दरिद्रता हरति है । द्वार द्वार
वाजत बधार्ई वृजमगडल मे आनँद को सिन्धु
आनि उमड़ो परति है ॥ वेनी द्विज जसुटा
निहारि मुख चूमि चूमि मोद मदमाती जवै
गोद लै धरति है । छोरि छोरि भूषन वमन मनि
मोतीमाल लाला नंदलाल पै निक्कावर करति है ॥

पं० केदारनाथ जी बनारस ।

चुभि गो चपाकि अंग मै न जू को तं
तौर पौर मेटिवे को समै जानि धौं परति है ।
कर्कत है चूरी कर मर्कत है बाजूबन्द फर्कत है
वाम नैन सगुनोचरति है ॥ ताही समै आयगो
बिदेस ते केदारनाथ मोदित ह्वै विदुखिनि के
पायनि धरति है । अम्बर पटम्बर पिन्हाये देत
भांगे विनु रूप देखि रूपया निछावर करति है ॥

कांस को निदेस पाइ आई नंद के अवास
कुच सो लगाइ विष रूप मानो रति है । जान्यो
नाहिँ नेक नंदरानी आसुरी को भेव कीन्हो म-
नमान गोद सत को धरति है ॥ आपु लागी
गृह को सुँवारन केदार काज प्यावत पै सोर
करि पूतना मरति है । धाड़ उर लाड़ ; मातु
देवन मनाइ महा लाखन की सम्पदा निछावर
करति है ॥

पण्डित अम्बागड्डर जी - काशी ।

पूरव के वामर चराय वच्छ आये हरि, हरखि

जसोदा गहि गोद लै धरति है । पलक अलक
विशुलीले रज रंजित जे अंचल सों पोंछि ब्रान
मस्तक भरति है ॥ दृव दधि अक्षत औ फूल
फल धूप दीप संकर सुकवि देवपूजन सरति है ।
भूषन वसन सोन राजत रतन तौन वार २
वारति निष्ठावर करति है ॥

वा० हरिशङ्करप्रसाद जी — काशी ।

उमगि अनंग रंग छनदा छटा सौ वाम रचि
विपरीति केलि सागर तरति है । लंक लचकाय
जोम धूधुर मचाय चूमि चिबुक कपोल पी को
अङ्ग सो भरति है । एहो हरिशंकर मजेज मद-
माती महा सासु के मोहासिवे को नेकु न ड-
रति है । ज्यों ज्यों हँसि हँसि नँदलाल मुख
चूमि लेत ल्योंल्यों अमसीकर निष्ठावर करति है ॥

छवीले कवि — बनारस ।

वैठी सृगनैनी मजु मन्दिर मजेजभरी सेज
साजि मोहन की मारग भरति है । सुधर स-
हेलिन की संगति समाज सोहै तान तानपूरे

पैतराने की ठरति है ॥ सुकवि छबिले छैल तु
रत पधार पेखि आनँद पयोधि की प्रवाह हल-
रति है । पाइ बृजरानी बृजचन्द को अमन्द
कोटि चन्द मुखचन्द पै निक्कावर करति है ॥

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिहौर ।

जा दिन ते' देखो दृग सुघर सलोना रूप ता
दिन ते' भाँति भाँति भावना भरति है । धुनि
सुनि भौरन की डोलै संग लागि घनश्याम को
विलोकि हिय आनन्द धरति है ॥ नीलपट
छोरि धरै पीतपट गातन सं वातन में रावरीई
नाम उचरति है । एहो बृजराज अंक भरिये
निमंक वाहि तन मन प्रान जो निक्कावर क-
रति है ॥

कविराज लछिराम जी—अयोध्या ।

सोतिन के चौक पुंज पावड़े पसारि पौरि
पूजि पग नखन महावर धरति है । भूषन वसन
पौरि कङ्कन जजीरे कर सौरी माल वन्दन प्र-
भावर धरति है ॥ लछिराम अरविन्द स्याम अं-

जली सै राखि नवलकिमोरी भोरी भाँवर भरति
है । धारन सै छलकै रतन सुवरन भार भोरहीं
सों गौरि की निछावर करति है ॥

महल पधारे मनमोहन कहुँ तैं आज राई
लोन वारि अलवेली आदरति है । लछिराम
चौक चाननी सै नौरतन चारु मालाकार आ-
नँद अपार सै भरति है ॥ स्याम घन रंग विज्जु
माधुरी हँसनि सोहैं मदन मसाल की प्रभा को
निदरति है । गर वनमाल पर लोचन विसाल
पर ख्यौर वारे भाल पै निछावर करति है ॥

छा० मारकण्डेलाल उपनाम चिरजीवी कवि कोपागंज ।

मूल लीं दिखात जहाँ कूल वा कलिन्दजा
को रजत समान रेत समता धरति है । ऊपर
अकास अवकास को न अन्त जामैं जीवन जलू-
सन की सहिमा भरति है ॥ कवि चिरजीव कृष्ण
राधिका विराजैं जहाँ सरदनिसा में खूब चाँदनी
परति है । मानो निसि पूना वर मूरति विलोकि
दूनो चन्द की मरीचैं लै निछावर करति है ॥

लखनऊनिवासी लाला हनुमानलाल कवि ।

दनुज सँहारि लङ्कराज द्वै विभीषन को भ-
रत अवध सौरि कल न परति है । सुमन वि-
मान मै सशखा चढि धाए आपु हनुमान बेगि
देखि पौन पकरति है ॥ निरखत पुरवासी आइ
मिले सुखरासी हय गज दान द्वार नौवति क-
रति है । राम सिया लखन पै वारि पानि पीवै
माय तन धन प्रान लौ निष्ठावर करति है ॥

गंधीलो जिला सीतापुरनिवासी बाबू जुगलकिशोर जी
उपनाम ब्रजराज ।

बाल नव अंगन अनग कौ अवाई जानि वि-
विध विधान के उमाहन भरति है । नैनन में
अंजन सँवारि कै दिठौना देति उर उघरेते ऐंचि
अंचल धरति है ॥ देखत जितैही ब्रजराज को
विलोकै तितै तोरि तन कोरि क उपाय न स-
रति है । लाय निज हिय सों लला को ललचाय
चूमि प्रानन को आपने निष्ठावर करति है ॥

श्रीचन्द्रकला वाई - वूँदी ।

आज साज साजि होरी खेलन को ब्रजराज

ठाढ़े वृषभानु द्वार कौतुक धरत है । उत ते रँ-
गौली रसभीनी सखियान संग लैके राधिकाहू
अनुराग सरसत है ॥ चन्दकला करत अनेक
कला ग्वालवाल जब घनस्याम गाय भाँवरि भ-
रत है । तव वृषभानुलली तनु मन धन प्रान
आली वनमाली पै निछावरि करत है ॥

भावू अयोध्यासिंह - मधुवन जिला आजमगढ़ ।

सेवाही में सास औ ससुर की सदाही रहै
सपनेहूँ सौति जनहूँ सीं ना लरति है । सील
सुधराई त्यों सनेहभरी मोहति है रोस रिस रार
ओर क्योंहूँ ना ढरति है ॥ हरि-बोध सकल गु-
नागरी सती समान सूधे २ भायन सयानप त-
रति है । परम पुनीत पति प्रीति में पगीही रहै
प्रान धन प्यारे पै निछावर करति है ॥

कारोली निवासी कवि घनश्याम जी ।

कानहूँ को आगम सुन्योरी आइवे की आज
दौरि दौरि देखें नेक धीर न धरति है । घन-
स्याम प्यारे जोरि २ के सखिन आज गाय गाय

हरखि बधाये उचरति है ॥ मुर मुर देखें मुस-
क्यावे मुख मन्द मन्द पीय को उछाह जीय
नाहिँ विसरति है । तोरि तोरि मुकता मणि
माणिक मरीरि माल देख प्रिय दौरि के निछा-
वर करति है ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगोलाभाई ।

सरप तें छूटे कान्ह आय अवलोकि सबै ब्रज
की बधूटी वपु भाय कों भरति है । कोऊ राई
लोन लाइ ऊपर उतारे पुनि कोऊ रक्कासूत्र
लाइ कण्ठ में धरति है ॥ कोऊ लाइ कुमुभ कों
सिर पै चढ़ात पुनि कोऊ श्राइ आसिख अ-
नूप उचरति है । गोविंद सुकवि पर मात ज-
सुदा जी भरि मोतिन के थाल कों निछावर
करति है ॥

इक्कीसवां अधिवेशन ।

मिती अगहन सुदी , सम्वत् १९५१

बाँसुरी बजावे है ।

काशीनिवासी श्री १०५ कल्याणलाला जी महाराज

उपनाम रससिंधु ।

सुन्दर सलीने नैन अन्तहि रसीले वैन देखि
जिय परे चैन मेरे मन भावे है । कहे रससिन्धु
फेर हाव भाव नृत्य करे घेरदार दावन को हाथ
ते उठावे है ॥ सखी को बुलावे रासमण्डल करावे
मध फूनरौ खिलावे खूब सब को रिभावे है ।
देख ललचावे मुसकावे कभी गावे स्याम रा-
धिका के संग खड़े: बाँसुरी बजावे है ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजोवन काशी ।

देखो प्रेम-रंग में पगी है वह बाल लाल वे-
सुध भई सी सुधि आपुनी गँवावै है । प्रीतपट
धारि कटि काछिनी सुधारि सीस मुकट सँवारि
ढंग रावरो बनावै है ॥ ऐसी वा भई है तनमई
तुमही में कान्ह एकै धुनि राधे राधे नाम की

लगावै है । बंसीबट बिपिन बिलोको बलबीर
बलि बीर बलबीर बनौ बाँसुरी बजावै है ॥

बाबू जगन्नाथप्रसाद जी बी० ए० [रत्नाकर कवि] काशी ।

जाके सुर प्रबल प्रवाह को भूकोर तोर सुर
मुनिवृन्द धीर बिटप बहावै है । कहै रतनाकर
पतिव्रतपरायन की छाज कुलकान की करार
बिनसावै है ॥ कर गहि चिवुक कपोल कल
चूमि चाहि मृदु मुसुकाय जो मयङ्कहिँ लजावै
है । ग्वालनि गुपाल सों कहति दूठिलाय कान्ह
ऐसी भला कोऊ कहूं बाँसुरी बजावै है ॥

वैठे भङ्ग छानते अनंगअरि रङ्गरमे अङ्ग अङ्ग
आनंद तरङ्ग छवि छावै है । कहै रतनाकर क-
कूक रङ्ग ठङ्ग औरै एकाएक मत्त ह्वै भुजङ्ग द-
रसावै है ॥ तूँवा तोर साफ़ी छोर मुख विजया
सो मोर जैसे कङ्कगम्भ मे मलिन्दवृन्द धावै
है । वैल पै विराज संग मैलतनया लै बेगि क-
हत चले यों कान्ह बाँसुरी बजावै है ॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी - बनारस ।

बसि करि डारत है सातौ सुर देवलोक
परम अशोक ताल जधम मचावै है । खग मृग
जहां तहां चित्र से बनाय देत जल थल एकै
भाँति रस सरसावै है ॥ खूब हरिशंकर अजूब
महिमा है जाकी हारद मरम कछू सारद न
पावै है । आँसु री जो गोकों मेरे पाँसुरी उठत
पीर गजब कहर कान्ह वाँसुरी बजावै है ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

छोटी सौ कछोटी और छोटी ही भँगूली
पाग छोटे छोटे वाजूवन्द किङ्किनी सुहावै है ।
छोटे से मुग्धारविन्द छोटी नवनीत लोंदी मागि
मागि जननी पै मोद को बढावै है ॥ छोटी २
पैयां छोटी पैजनी सुठार चारु छोटे छोटे सखा
संग आँगन में धावै है । छोटे छोटे भौरा लटू
छोटी सौ चकैया चारु छोटे छोटे पानि छोटी
वाँसुरी बजावै है ॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी ।

सौम क्रीठ मुकट मयूरपख केर धारे गर

लगावै है । बंसीबट बिपिन बिलोको बलबीर
बलि बीर बलबीर बनौ बाँसुरी बजावै है ॥

बाबू जगन्नाथप्रसाद जी बी० ए० [रत्नाकर कवि] काशी ।

जाके सुर प्रबल प्रवाह को भकीर तोर सुर
मुनिवृन्द धीर बिटप बहावै है । कहै रतनाकर
पतिव्रतपरायन की छाज कुलकान को करार
बिनसावै है ॥ कर गहि चिबुक कपोल कल
चूमि चाहि मृदु मुसुकाय जो मयङ्कहिँ लजावै
है । ग्वालनि गुपाल सों कहति झुठिलाय कान्ह
ऐसी भला कोऊ कहूं बाँसुरी बजावै है ॥

वैठे भङ्ग छानते अनंगअरि रङ्गरमे अङ्ग अङ्ग
आनंद तरङ्ग छवि छावै है । कहै रतनाकर क-
कूक रङ्ग ठङ्ग औरै एकाएक मत्त ह्वै भुजङ्ग द-
रसावै है ॥ तूँवा तोर साफी छोर मुख विजया
सो मोर जैसे कञ्जगन्ध मे मलिन्दवृन्द धावै
है । वैल पै विराज संग मैलतनया लै वेगि क-
हत चले यों कान्ह बाँसुरी बजावै है ॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी - बनारस ।

बसि करि डारत है सातौ सुर देवलोक
परम अशोक ताल ऊधम मचावै है । खग मृग
जहां तहां चित्र से बनाय देत जल थल एकै
भाँति रस सरसावै है ॥ खूब हरिशंकर अजूब
महिमा है जाकी हारद मरम कछू सारद न
पावै है । आँसु री जो रोकों मेरे पाँसुरी उठत
पीर गजब कहर कान्ह वाँसुरी बजावै है ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

छोटी सी कछोटी और छोटी ही भँगूली
पाग छोटे छोटे बाजूबन्द किङ्किनी सुहावै है ।
छोटे से मुद्दारबिन्द छोटी नवनीत लोंदी मागि
मागि जननी पै मोद को बढ़ावै है ॥ छोटी र
पैयां छोटी पैजनी सुठार चारु छोटे छोटे सखा
संग आँगन में धावै है । छोटे छोटे भौरा लटू
छोटी सी चकैया चारु छोटे छोटे पानि छोटी
वाँसुरी बजावै है ॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी ।

सीम क्रीठ मुकट मयूरपख कीर धारे गर

गुंजमाल लाल अति छवि छावे है । काछे कम-
नीय काछ कटि पटपौत केर कर्ण माहिँ मक-
राकृतकुण्डल सुहावे है ॥ धन्य ब्रजभूमि जहाँ
बिचरै बिहारीलाल गौवन के पाछे कर साँटी
लिये धावै है । साँभ समै आवत उडावत सुधेनु
रेनु गाड़ कौ केदार सुर बाँसुरी बजावै है ॥

छन्नलाल रसिक नवीन — काशी

रसिकनवीन को बिलोकु चलि आली नेक
अङ्ग अङ्ग जाकी छवि मदन लजावै है । मोर को
मकुट कटि काछनी लकुट हाथ काँधे पीतपट
सो अधिक छवि छावै है ॥ उर वनमाल भाल
चन्दन विराजै वेस कुण्डल चमक चहुं मोद
वरसावै है । लीन्हे ग्वालवाल संग अमित उमग-
भरो कुंजन में कान्ह आज बाँसुरी बजावै है ॥

कवि गोपीनाथ जो - काशी ।

सुनि के भनक मन मुनि के न माने छन
जोगिन को ज्ञान जोग सबही भुलावै है । संभु
कूँक्षी बे पद्मिनी विरंच भूल्यौ चन्द बाँ-

नो पै आव चौगुनी चढावै है ॥ गोपी ग्वाल
गाल ततकालही निहाल हांत देव नर किन्नर
के मोद सरसावै है । नन्द को कुमार आली
कालीदह तीर जवै राधे रंगरातो मातो वांसुरी
बजावै है ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

सीस न डोलावै सीस मुदित सहैस होत छ-
कित दिनेस भूलि रथ ना चलावै है । टूटी परै
नभ ते वधूटी देवतानन को देव नर किन्नर की
टक लग जावै है ॥ बेनी द्विज ब्रह्मा ब्रह्मण्डल
समेत मोहे गोपी ग्वाल गैयन को आनंद बढ़ावै
है । जमुना के तीर वौर कोहरा अहीरवारो टेरि
वलवीर जवै वांसुरी बजावै है ॥

रसीले कवि - काशो ।

ककु ना सोहात थहरात गात बार बार अ-
वला अवल जानि प्रान तरसावै है । कहत र-
सोले उठै कठिन कुपीर हाय धीरज नसाय उर
मदन सतावै है ॥ लाज रहि जाय ना वेहाल

(१५८)

बिबादी भेद राग रागनीन पुत्र भारजा लखावै
है । उपज बिलम्बित सुमध्य द्रुत शुद्ध बानी ग
मक की तान कान्ह बाँसुरी बजावै है ॥

शब्द भयोध्यासिंह - मधुवन जिला आजमगढ़ ।

बिहोर (काठियावाड़) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई सरद कौ चँदनी मे रवि राममण्डल कों ब्रजवनिता के हौ आनन्द उपजावै है । गोविंद सुकवि तहाँ वाजन विविध वाजि उनके अवाज आज चित्त कों चुरावै है ॥ या समै तूं मान करि बैठी क्यों अजान हँरो चल सोइ देखन कों ताहि कों बुलावै है । माने सो न साची तो तूं सुन श्रुति देके आली टेरि तेरो नाम कान्ह वाँसुरी बजावै है ॥

कोपागंजनिवासी मारकंडेलाळ उपनाम चिरजीव कवि , निषध रिषभ औ गन्धार षर्ज मध्यमहूं धैवत औ पंचम को मुरनि मुनावै है । कोमल सु ते-वर ल्यों रोही अवरही सम द्रुत औ विलम्पत ते सैन उपजावै है ॥ कवि चिरजीव षट राग रागिनी छतीस है सत अठासी सुत ताके बीच गावै है । तीन सत साठ ताल मुर्च्छन यकीस लैके कांध वा कलिन्दीकूल वाँसुरी बजावै है ॥

विवादी भेद राग रागनीन पुत्र भारजा लखावै है । उपज बिलम्बित सुमध्य द्रुत शुद्ध बानी ग मक के तान कान्ह बाँसुरी बजावै है ॥

बाबू प्रयोध्यासिंह - मधुवन जिला आजमगढ़ ।

काको सुत कैसी कृषि धारत बसन कैसे कैसी बानी बोलि को पियूख बरसावै है । जानत जुगत कैसी मोहत कहा धौं करि मन्द सुसुकानि काकी मन अपनावै है ॥ हरि-श्रीध की सौं कही मानु चलु देखैं नेक काको रूप कामिनी को बावरी बनावै है । काके बस ब्रज की विलामिनी भई हैं बौर ! कौन बनमाली बन बाँसुरी बजावै है ॥

विवस वनाडू वारनादिक विहंगहू को बनचर वानरादिहू को वहरावै है । विटप औ वल्लीहू विमोहि विलमावै वारि वहत बयारहू की गति विरुभावै है ॥ हरि-श्रीध वृष्णि देखै वैगुन विलोकै कहा बावरी जो ब्रजधनितान को बनावै है । विवुध वरुध विवुधिस विधिहू को वेधि वीर । बनमाली बन बाँसुरी बजावै है ॥

सिंहोर (काठियावाड़) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई सरद को चँदनी में रचि रासमण्डल को ब्रजबनिता के हौ आनन्द उपजावै है । गोविंद सुकवि तहाँ बाजन विविध बाजे उनके अवाज आज चित्त को चुरावै है ॥ या समै तूं मान करि वैठी क्यों अजान हँरो चल सोइ देखन को ताहि को बुलावै है । माने सो न साची तो तूं सुन श्रुति देखे आली टेरि तेरो नाम कान्ह बांसुरी बजावै है ॥

कोपागंजनिवासो मारकंडेलाल अपनाम चिरजीव कवि, निषध रिषभ औ गम्धार षर्ज मध्यमहूं धैवत औ पंचम को सुरनि सुनावै है । कोमल सु तेवर ल्यों रोही अवरोही सम द्रुत औ विलम्पत ते सैन उपजावै है ॥ कवि चिरजीव षट राग रागिनी छतीस है सत अठासी सुत ताके बीच गावै है । तीन सत साठ ताल मुर्च्छन यकीस लैके कांध वा कलिन्दीकूल बांसुरी बजावै है ॥

काछनी पिताम्बर की आछि रंग दुपट सुढंग ब-
नमाल सरसावै है ॥ श्रीवर जू क्रौट श्रुति कु-
ण्डल अमोल नील इन्दुमुख टूनी दुति दीह
दरसावै है । रम को बटोरी मकरन्द मधु बौरी
मानो मैन रुचि घोरी मन्द बाँसुरी बजावै है ॥

श्रीकिशं रोलालजी गोस्वामी आरा ।

माथे मोरमुकुट चटक सिरपेंच बाँधे साधे
कानकुण्डल लटक ललचावै है । नासिका बु-
लाक अनुरागभरे नैननि सों विहँसि निरखि
चित चाह सरसावै है ॥ पीतपट लकुट नकल
कटि काछनी पै नखसिख भूषण विशेष मन
भावै है । भनत किसोरी स्यामसुन्दर कबीलो
छैल मन्द मन्द मेरी गैल बाँसुरी बजावै है ॥

गंधीलो जिला सीतापुरनिवासी बाबू जुगलकिशोर जी

रपनाम हुनराज ।

सीस मंजु मुकुट विराजै गुंजमाल गरे तैसी
पीतपट तन दुति सरसावै है । लचकि लचकि
अँठिलात ब्रजराज वीर ग्वालन समेत नित भीर

दूत आवै है ॥ निकट कुवाय अंग भृकुटी नचाय
रद अधर दवाय करि सिसकी सुनावै है । मो
तन निहारि अलि रूकन तिरीकन सो मन्द सु-
सकाय मुरि वांसुरी बजावै है ॥

तज मै बहाली भरि थाली उजियाली लिये
दैदै कर-ताली सवै ग्वाली गीत गावै है । काली-
दह बीच संग काली घरवाली सवै वाली वैस
व्यालिन सों बिनती करावै है ॥ अदभुत ख्याली
को निराली करतूति लखि मुख छवि हालौ
ससि समता न पावै है । कालीफन ऊपर क-
पाली सौंह देख आली कैसे वनमाली खरो
वांसुरी बजावै है ॥

मानिक ते मानहु मरीचि मरकत की

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

सूरज की पर्व सुन चले द्वारका ते स्याम अश्रव
गज उष्ट्र प्यादे सेनाह सजत की । त्योही रस-

सिंधु फेर करुच्छेत्र न्हान आये जसुदा जी नन्द
गोप गोपी मसलत की ॥ भीर भई भारी तहाँ
ठाढ़े नर नारी कृष्ण देख राधिका सीं कहे नई
उकत कौ । रवि को जु रंग लाल राहु की है
स्यामतार्द्र मानिक ते मानहु मरीचि सरकतकी ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजोवन काशी ।

आये बलवीर प्रिय भोरहौ प्रिया के गेह वसे
कहूं रात कीन्ही वात हरकत कौ । सारी रैन
जागे अनुरागे प्रेमपागे उतै इतै मनमोहिनी कौ
छाती दरकत की ॥ दोऊ अनुरक्त नैन श्याम
पूतरी की प्रभा उकति अनूठी बौर भासै बरकत
कौ । अरविन्द-अन्दर ते कटै अलि-छौना कौधौं
मानिक ते मानहु मरीचि सरकत की ॥

कालिकास्तव ।

ठाढ़ी विकराल मुखड-माल गर सोहै लाल
भाल पै सिंदूर जीभ ज्वाला फरकत की । ल-
लकि रही है लिये कर में कृपान दुष्टदल हनिवे
को जाने भक्त हरकत की ॥ वीरन की सिद्धि

रिद्धि धीरज धरैयन की भगत धुरीनन को पुंज
वरकत की । कालिका के अङ्ग की प्रभा यों
लाल सारी कढ़ै मानिक ते मानहु मरीचि म-
रकत * की ॥

काशोनिवासी पण्डित द्विज वेनी कवि ।

सकल सिँगार साजि मिलन सहैट गई डारि
डर लाज गृहकाज हरकत की । वेनीद्विज वा-
लम बिलोक्यो ना तहां पै जाय गिरी भहराय
तुल्य काटे दरखत की ॥ सोचन सों समकै स-
कोचन सकै ना बोलि रोयरोय आँखें भई तद्वत
रकत की । आँसुन के संग मिलि कज्जल कतार
कढ़ी मानिक ते मानहु मरीचि मरकत की ॥

आये ही कहां ते प्रात विह्वल विहारीलाल
आँखें ह्वै रही है लाल बूड़ी ज्यों रकत की ।
जावक ललाट सीस अटपट पाग सोहै खवर

* मरकत प्रायः पत्ते की कहते हैं किन्तु प्राचीन क-
वियों ने [जैसे श्री सूरदास जी, श्री गुसाईं तुलसीदास जी,
श्री वल्लभदास जी इत्यादि ने भी इसे नीलमणि कहा है ।

नहीं है लर पेच लरकत की ॥ बेनीद्विज राजत
कपोलन पै पीक लीक मोहनी मनोजवारी बातें
आसकत की । अंजन की रेख स्याम भानक अ-
धर बीच मानिकते मानहु मरीचि मरकत की ॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी बनारस ।

मित्र के प्रकास मिलिबे को चली मित्र पास
धरि उर आस बाये नैन फरकत की । भ्रमकि
चले ते लफि लफि जाति लोनी लङ्क घायल
करति अदा करा करकत की ॥ कदम कदम पै
हँसति हरिशङ्कर जू रोम रोम सोखी भरी नोखे
हरकत की । मिसी मल्यो ओठन सो ऐसी
छवि छार्ई कठी मानिकते मानहु मरीचि मर-
कत की ॥

कन्नलाल रसिक नवीन—काशी

चन्द्र ते दुचन्द्रमुख चन्द्र को छटा है चारु
वतियां सुधा मी खामी मोहिनी जगत की ।
रसिकनवीन है प्रवीन सब भाँतिन सों पाई वा-
दशाही सुघराई के तखत की ॥ लालन चली

तो मैं लखाऊँ चलि वाकी छवि सारी सजि बैठी
है किनारी के टँकत की । भलक मिसी को
आनि अधर लमी है इसि मानिक ते मानहु
मरीचि मरकत की ।

वृजचन्द जो वल्लभीय—काशी ।

सोहैं श्रीव्रजेन्दुसिर चन्द्रिका मयूरपिच्छ अ-
मृता कला है मानो दानि अभिमत को । ल-
सति ललाट पै ललित जध्वं पुंड जोति मानौ
रिद्धि सिद्धि रेख सकल जगत की ॥ भौंह वर
वांकी ढांकी सुखमा त्रिलोकन की मानौ कल्प
बेलि श्री सिंगार के भगत की । अधरन बीच
लसै बांसुरी अनूप कढ़ै मानिका ते मानहु म-
रीचि मरकत की ॥

पण्डित अस्वाशङ्कर जी काशी ।

भीर ते' अभीरन के आगे जटुवीर धीर भारैं
पिचकारी रँगवारी जरकत की । कीरतिकिशोरी
टोरी गोरिन मों न्यारी होइ मारी मूठ भारी लै
अवीर वरकत की ॥ संकर सुकवि उतैं जानो

की । मर्कत ते मानो चारु मानिक मरीचि फै-
ली मानिक ते मानहु मरीचि मरकत की ॥

तरनि तनूजा-तीर आजु चलि देखो लाल
भाल लता कुंज मे' बिराजै वरकत की । भनि
अवधेश बेश भूषन सुहावै अंग सोभा त्यां बनौ
है चारु पट फरकत की ॥ लाल रंग रजित सु-
भीन कंचुकी मे' फवै नौलिमा उरोज अग्रभाग
थरकत की । मदन महीश मध्य मन्दिर महान
मंजु मानिक ते मानहु मरीचि मरकत की ॥

काशोनिवासी पं० केदारनाथजी ।

वैठे स्याम राधे संग मन मैं उमंग भरे क-
रत कलोल लोल मैन वरकत की । भई वरजोरी
तेहि ठोरौ ना कहो री जाय गिरिगो किरौट
भाल वैँदी सरकत की ॥ केलि विपरीत करै
दम्पति मरोरि कर छाड़ैं ना केदार आंगुरौहू
तरकत की । समर वदौ है कौधौ अतन अखारे
आजु मानिक ते मानहु मरीचि मरकत की ॥

वावू जगन्नाथप्रसाद जी बी. ए. [रत्नाकर कवि] काशी ।

जब ते रची है रूप रावरे रसिक लाल तव
ते बनी है बाल बात बरकत की । कहै रतना-
कर रही है रुचि नैनन में मीन मुख मंजुल
मुकुट ठरकत की ॥ आठो जाम वाम मग जो-
हत मृगी सी जब चौंके पाय आहट तिनूका
खरकत की । अनुराग रंजित अवाज सों कढ़त
श्याम मानिक ते मानहुं ॥

श्रीकिशोरीलालजी गोस्वामी धारा ।

सुन्दर सुंवारी चारु चन्द्रिका उजारी जहाँ
सोहै चित्रसारी प्रानप्यारी प्रानपति की । भनत
किसोरौ चौंकि चकित चितौति चित चंचल
चलत चाल हंसनि के गत की ॥ औचकि उ
चकि मनभावन मनावन कीं पावन परसि सीस
सादर नमित की । तरुन अरुन पग विस्वित
मुकुटछवि मानिकते मानहुं मरीचि मरकतकी ॥

कीपागंजनिवासो मारकंडेलाल उपनाम धिरजीव कवि ,
कोऊ दैहै उत्तर विमारी ते लिख्यौ ना कछू

सँयोग धूपछाँह सोभा सकत बखान कौन आ-
तमा जगत की । कुच औ अधर ते' उजास यों
कढ़ै है सदा मानिक ते' मानहु मरौचि मर-
कत की ॥

बाबू अयोध्यासिंह—मधुवन जिला आजमगढ ।

पूरन मयङ्क ते खवत मधु बिन्दु की सी सोभा
अर्द्ध मुख ते प्रसेद ठरकत की । गोल आरसी पै
नागछौना सी अनोखौ छवि लसी है कपोलन
पै लटै लरकत की ॥ विपरीत रचे हरि औध
लाल चोली माहिँ दुति है नकल कुचकोर फ-
रकत की । मिलि मिलि मोहे लेत मानस म-
नोजहूँ को मानिकते मानहु मरौचि मरकतकी ॥

सिद्धोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगोलाभाई ।

ओपत अरुन ओठ राधिका ललाम तेरे सौ-
तिन के चित्त माहिँ खूब हरकत की । वामे' द-
मकत दन्त वर्हिका बलित स्याम मुखमा समूह
सोय वेश वरकत की ॥ गोविँद सुकवि ताकी
उपमा अपूर्व लसे आइ अभिराम मेरे चित्त स-

रक्त की । मंगल ते' सन्द कढ़े मंजुल मयूख
कैधों मानिक ते' मानहु मरीचि मरकत कौ ॥

श्रीचन्द्रकला वाई - वूँदी ।

सारी रैन आन धान जागि कै गुपाललाल
नाना भाँति कौनी कामकला कोक मन कौ ।
जावक लिलार लाय अंजन अधर दाय पलकन
पीक पाय छाती भरी छत कौ ॥ चन्द्रकला प्रा-
तहो पधारि मन भावती कै भाँके लाल नैन
धारि दीठि शोभ रत कौ । ताहि देखि बोलौ
अलि देखहु कढ़ी है यह मानिक ते मानहु म-
रीचि मरकत कौ ॥

वाईसवां अधिवेशन ।

मिती पूस वदी १ सखत् १८५१

सरोज सकुचाने से ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिधु ।

सुन्दर सँवारे वार सोने कौ जु चौकी बैठ
अतर फुलिल मले सोँधि खूब साने से । कहे रस-

पं० छत्रलाल रसिक नवीन — काशी

अरुन उदै में आज, सर पै नहान आई ना-
गर नबेली एक मुघर जमाने से । रसिक नवीन
मुखचन्द ते दृचन्द चारु ल्याई है लोनाई लूटि
विधि के खजाने से ॥ चौर धरि नीर में धसौ
है बाल खोले बार बाम हित भँवर भिराने है
लोभाने से । लाल चलि देखो तो कमाल वा उ-
रोजन कों जाहि लखि ह्वै रहै सरोज सकुचाने से ॥

मेरे मुखचन्द को बिलोकतै चकोर जोर
दुकटक लाये खरे रहत लोभाने से । सहज स-
रीर की सुवास आस पाम पाय अलि मिडराने
फिरें विकल दिवाने से ॥ रसिकनवीन गति दे-
खि देखि हंस मेरी चाल को बिसारि बैठे सर पै
लजाने से । नैनन निहारि मृग हारि के पराने
वन पक परे रहत सरोज सकुचाने से ॥

कवि पं० गोपीनाथ जो — काशी ।

गति देखि हंसन हिये में हार मान लीन्ही
कटि देखि सेवें सिह कानन लुकाने से । बैन

सुनि कोकिल के मन में मलोले उठें नैन देखि
खंजन उहाने खिसियाने से ॥ गोपीनाथ अंग
की गोराई कवि आव आगे लाल लखि परत
गुलाव कुम्हिलाने से । राधेमुखचन्द्र को विलो-
कत विहारीलाल लागत समस्त है सरोज ॥

कवीले कवि बनारस ।

वचन बनाय खाति सौं हैं नित भूठी भूठी
बादही मै जात रात दिवस विताने से । सुकवि
कवीले होस हीय में हमारे यहै रहत हमेस वैत
कहत सकाने से ॥ कत करि मान लेत जानत
अजान होति मो चित चकोर मुखचन्द्र पै लो-
भाने से । क्यों न प्रानप्यारी कर परसन देति
का उरोज गोज रहत सरोज ॥

राति रतिरंग में जगी है कहुं काहु संग
भीर उठि आवत वनी सी वरसाने से । सुकवि
कवीले ना कृपाये ते कृपैगी कहा वचन प्रवीनता
वखानति वहाने से ॥ कवन कलङ्क जग जानत
कलानिध मै उपमा अनूप यहै सरस समाने से ।

कोर पै चकोर है दिवाने से ॥ बेनी द्विज बान
पंचवान को गुमान गारि ल्यार्द है लुनार्द लूटि
विध के खजाने से । देखि देखि तैरी अँखियान
की अजूबी वीर पंक जाय परत सरोज० ॥

प० केदारनाथ जी बनारस ।

प्रोषित वियोगिनि को पौडित करनवारो
सुखद सँजोगिनि को हिय हरखाने से । असुधा
वनस्पति के जीवन जनक आछि कृषी सुखकारी
अंकुरादि दरसाने से ॥ कहत केदार मनमोदक
चकारन के चोरन अमोद कोक कोकी बिल-
गाने से । विकसै कुमोदिनी प्रकासित निसाकर
के मुरझात मुकुल सरोज० ॥

जाइये बहाँही चलि आये जहँ भोरै होत
कृपिहै न मोसों आजु बात के बनाने से । भूठीर
खात काहे सौहैं तूँ हमारी सौँह कज्जल की
रेखझ कपोल दरसाने से ॥ मीसौ केर कालिमा
छर्द है अधरान आछी पलकैं तमोल पीक लीकैं
रंग साने से । रैन अँग आरस केदार जू भरो है
जगे मूँदे जात नैन है सरोज० ॥

ब्रजचन्द को वल्लभीय—काशी ।

एहो आजु धन्य अनजाने से अयाने ऐसे
चकित जकाने विथकाने से विकाने से । अति
अरसाने से ठिकाने ना परत पग हिय हरषाने
से सरस रस साने से ॥ रसिक सयाने ब्रजचन्द
ढंग ठाने ऐसे बात ना बखाने कछु अतिहौ म-
काने से । मुख कुंभिलाने से अधर पियराने ऐसे
लाल दीज लोचन सरोज ॥

सुखद सुजान ब्रजचन्द मुखचन्द देखि च
हकै चकोर जन अति हरषाने से । अमित उ-
संग होत आनंद उदधि काहिँ चौहैं तरसात
कूर कोक विलखाने से ॥ रंचहू वियोग तम
कतहूँ दिखात नाहिँ रहैं सुद्व जीव तरु गुल्म
हरियाने से । विषयी औ खारयी कुटिल कुवि-
चारी अधी पदरज विमुखी सरोज ॥

साची चन्दवदनी दिखाजँ ब्रजचन्द तुमैं दे-
खतहि ह्वैहौ लाल अति तरसाने से । दिनहूँ मैं
चहकै चकोर संग छोड़ैं नाहिँ निरखि कुरग गन

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिहौर ।

तीसरे पहर लों मचाई रसबस बाम राते
विपरीत रति सैन मद साने"से । होत परभात
उठि बैठी परजङ्ग पर अङ्ग अङ्ग ऊपर तरङ्ग अ-
रसाने सैं ॥ कांज कर उलटि सवारि कच जूरो
कसै निरखि तमासे मन ह्वै रहौ लुभाने से ।
मेरे जान तम है डराय भयो अङ्ग मोरि प्रफु-
लित देखि कै सरोज० ॥

चलि ब्रजचन्द आप कौतुक बिलोकि लीजै
सुखमा समूह लखि जग भो विकाने से । सौ-
रभित धारिज बदन पर आठो जाम भौरन की
भीर ल्यों फिरत मड़गाने से ॥ चहकि चकोर
चोत्र लावत है आनन पै बरही बिलोकि बेनी
होत है लुभाने से । वाके टिग हौंसै रही प्रफु-
लित देखिबे को देखती हमेस हौं सरोज० ॥

वाव शिवपाससिंह—भिनगा ॥

चकि २ चकि जात चस्य तकि २ तन सकि
सकि सकि जात मृग दृग ताने से । थकि थकि

थकि जात बीजुरी कटावन सों जकि २ होय
जात घूंघट कढ़ाने से ॥ क्विकि २ हंस जात चाल
लखि शिव कवि पकि २ दाड़िम द्रवत दन्त-
दाने से । ऐसी वृषभाननन्दिनी हूँ लार्दे तेरे
हित मुख लखि दीसति मरो ॥

काहे पूर्ण निशिकर आजही भयो है मन्द
काहे है लखात 'मृग मन मे' सकाने से । काहे
चम्प सुमन परत जात पीरे २ काहे ये गयन्द
फिरै वन मे' विकाने से ॥ पंचम तज्यौ है काहे
कोकिलन गन शिवपाल भनि काहे जात कीर
हू धगने से । आवती नितहि पर आज लौं
लख्यौ हैं नाहि काहे सखि दीसत मरोज ॥

कोपागंजनिवासो मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि,
नर सों दिखाये क्वि नौल न्हाय आय दूते
न्यामत नवेनिन के हौ मे' सुख साने से । प-
रसों पखेरुन से उड़िगे छिनक आय ठौक दो
पहर में सुकाह अनजाने से ॥ कवि चिरजीव
ये जू कीरति लता के पुंज काहे ना बतावो

कहा होत ये दुराने से । साँझ के समै ती आये
पंकज खिले से लाल आज आये भोर क्यों स-
रोज सकुचाने से ॥

छूटति न टेव जाकी जौन सी परी है आनि
कोटिन उपाय गुरुजन के बुझाने से । हमरी
सुनै है कौन तूती सी नगारखाने और को ब-
खाने बानि रावरी असाने से ॥ कवि चिरजीव
सोंह लाखन करी है तौह्ण बाज नहि आये काह्ण
गैल उरझाने से । रोज रोज आय के दिखावत
हनोज हमैं चोजभरे प्यारे ये सरोज ० ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्द गोलाभाई ।

कीरतिकुमारी आज लखि लाल लोचन ते'
उपमा अनूप ताकी जाय न बखाने से । ऐसी
अभिराम आभा ओपे प्रति अगन की जाकीं
लखि रभादिक रहत लजाने से ॥ गोविँट सु
कवि ताके दन्दन को द्युति देख नित्यही नकव
रहे दिन से दुराने से । नैन कीं निरखि तैसे'
मानस ते' मान तजि रहे नित साँझ मे' सरोज ०

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

आये उठि प्रातहो जंभात अंगरात गात
सारी रात सौति पै बिगारै अरसाने से । कछु
की बनाइ कछु भाषत पियारी पाहिँ कढ़ नं सु-
सील एक वचन ठिकाने से ॥ लाल को हवाल
देखि वान कछु बोली नाहिँ साधि चुप ठाढ़ी
रही जानि अनजाने से । चन्द के समान मुख
चन्द ललना के देखि नैन भये लाल के सरोज ॥

प्यारी बलिहारी जाउँ तेरो धनि भाग क्यों
न रहै रूप माधुरी पै लाल ललवाने से । हंस
तरसाने रहै देखि कै तिहारी गति गजज ल-
खाते अति अन्तही लजाने से ॥ तेरे कुच देखि
कै महेस काम दुन्दुभी ल्यों श्रीफल निहारि परै
आत सरमाने से । चन्द भये मन्द मुख तेरो सु-
खकंद देखि नैनन निहारि भे सरोज ॥

गंधौली जिला सीतापुरनिवासी बाबू युगुलकिशोर जी
उपनाम ब्रजराज ।

तेरे कहे आई हौं यहां लौं सुनु मेरी वीर

देखतही मेरे ये सहमि सरमाने से । खंज मृग
 मीन कहूं परत न पेखि अलि द्रवकि गयन्दगन
 विपिन पराने से ॥ येरी ब्रजगाजहूं लिखत तस-
 धीर रहे चकित निहारि हारि धीरज हेराने से ।
 भेद न बतावति रहति हँसि काहे सखि मोहि
 लखि सकल सरोज० ॥

रजनी विताय कहूं आये ब्रजराज तुम्हें पू-
 छनि सकल अंग काहे कुम्हिलाने से । कमल
 नयन कै कुमुद नैन भाखौ मोसों साँचौ कहौ
 आजु लखि परत सकाने से ॥ निसि मै मुदत
 वे मुदत दिनही में भेद दीजिये बताय कौधों
 मोही सों रिसाने से । बल करि खोलौ तज
 खुलत न खोले कहूं भोर भये रहत सरोज० ॥

भावू प्रयोध्यासिंह - मधुवन जिला आजमगढ ।

श्रीफल कहे ते सान्ति होति सपनेहूं नाहिँ
 तोष होत हिय मैं न कन्दुक बखाने से । कंचन
 कलस की कथान को उठावै कौन रति के सिँ-
 धोरा कहे रहत लजाने से ॥ हरि-औध जामैं

परि मत्त मन भृङ्ग मेरो कटत न टोखै अजौं
कौनेहूं वहाने से । सोभा सने मोहैं सोहैं मसि
लौं सुआनन के सरस उरोज ए सरोज ॥

मेरे भाग जागतही जामिनी वितंबी हतो
कौन काज आप हैं नखात अलमाने से । प्यारी
पीक लीकहिं अनूठे अधगन कोरि कहा लाभ
कलित कपोल पै लगाने से ॥ हरि-श्रीध की
सौं साँची कहो कल कन्द कोरो भोरही कहां
हो आज फिरत भुलाने से । रावरे विसाल दृग
कांज लाल ! ह्वै रहे हैं सूरज उगेहूं क्यों स० ॥

श्रीकिशोरीलालजी गोस्वामी आरा ।

मोहित मराल चाल देखत क्वीली हाल
वानी सुनि कोकिल लजाने अनखाने से । सुधा
को सुहाग मुसुकात हरिलीनो अरी जीती सु-
न्दरार्द्र सुधरत मनमाने से ॥ कटि के कराह
हरि कन्दर लुकान्यो त्योहि जलमे समानी मीन
लोचन लजाने से । तेरो ये किशोरि अकलङ्क
मुखचन्द चितै चन्द भये मन्द श्री सरो ॥

कनफूल पत्ता रूप के उँजरे में । कहै रससिंधु
फेर कंचुकी जरी की चारु हीरा हार मोती
चकाचौंध ज्यों घनेरे में ॥ देख री तू बीजुरी सौ
बीजुरी सों डरे कहा चमके हे बीजुरी ल्यों स्याम
घनघेरे में । घूँघट कियो है स्याम सारी को जु
राधिका नै गरक गई ॥

दाबू रामकृष्ण बन्धी सम्पाटक भारतजीवन काशी ।

कीरति-किशोरी गोरी मदनतरंग-रली मिली
घनश्याम सों अनंग के दररे में । सधन नि-
कुंज माहिँ बदनमयङ्ग जाकी हेरि कै हिरानो
मनो चन्द घनघेरे में ॥ आयो बलदाज उतै
खोजत कन्हाई ताहि देखत सकानी अकुलानी
फन्द फेरे में । दामिनी सी कामिनी यों का-
सरी दुरानी वीर गरक गई छै मनो बी० ॥

कवि पं० गोपीनाथ जो काशी ।

राति रसरग कै उमंग भरौ आई बाल जेत
अंगराई छाई आलस घनेरे में । सीसहि नवाय
कै लजाय आय सासु पास ठाढ़ी सकुचाय नैन

नीचे किये नेरे मे ॥ दूरही ते आवत तहां पे
देखि गोपीनाथ बैठव परी है वीर लाज के द-
रेरे मे । टाँपि स्याम पट मे तमाम गात वैठी
गोय गरक गई ॥

बा० माधोदास जी - काशी ।

चित्रमई सारी नई दई है ववा ने आजु मां-
वरो वचाय परी पावस घनेरे मे । कारे कारे
बादर ये उनये चहुंघा चारु परन लागी वूंदै
वली आवै मेह नेरे मे ॥ मोदभरे माधव जू उ-
चकि उरुंग ले के लीनो है छपाय स्याम का-
मरी के घेरे मे । हेरि हेरि हारे कवि उपमा न
पाई और गरक गई ॥

बाबू मन्मूलालजी—काशी ।

गई भौन तौन जहाँ सूरज न खावौ जाय
दमन की दमक दवी मौसी के फेरे मे । चन्द
ते दुचन्द है प्रकास जासु आनन को मन्मूलाल
सोज घिखो घूँघट के घेरे मे ॥ हीरन को हार
चारु धखो है उतार सवै वरत ना चिराग जाऊँ

बेरे मे । कैधीं ए नरेम भासमान आसमान बीच
गरक गर्दे ॥

पं. मनमोहन कवि गिहोर ।

दारिद दतारे सटवारे चलै भूमि भूमि दी-
खत यों रङ्ग निमि मावस के गेरे मे । भासै मन-
मोहन ए गरब गहूर भरे फैले फिरै ऐसेही ह-
मारे पल टरे मे ॥ आज महाराज रावणेश्वर-
प्रसादसिंह दान कीरवान लै सधारत सबेरे मे ।
भारत गरे पै चलि पैठिगी करेजे बीच गरक गर्दे ॥

राजत नवेली अनवेली छषभानु जी की छार्दे
भली छवि ते सहेलिन घनेरे मे । चौकी पर
चाँदनी सी फरम बिछार्दे हुती जमुना ते न्हाये
आइ वैठत सबेरे मे ॥ सघन सँवारे सुकुमारि
मुख ऊपर ज्यों बार को बगारती लै आरसी सु
हरे मे । भाषत विचारि मनमोहन जू मेरे जान
गरक गर्दे ॥

बाबू शिवपालसिंह - भिनगा ।

माखी है अनेक दल टाखी है प्रचण्ड बीर

फास्यो है करीन कुम्भ एकही भरिरे मे । डाय्यो
 है पछारि वरवौर नगमेल आये गास्यो है गुमान
 शत्रु नैन के तरेरे मे ॥ हास्यो जानि धास्यो टोप
 भिलम सआदतवां आयो गज मत्त चढ़ि युद्ध
 के दरेरे मे भास्यो है कृपान भगवन्त भूप शिव
 भनि गरक गई ॥

कोपांगनिवासो मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि,
 जाके अङ्ग ओप पै न कुन्दन जँचात नेकु
 जाके रङ्ग देखे चम्पा आवत न नेरे मे । जाके
 पट भूषन के दाप पै दिनेसहू की, महिमा रही
 है कछू मुरकि उँजरे मे ॥ कवि चिरजीव कान्ह
 क्यों कर न पावै ताहि, चोर मिहिचान के च-
 हुंघा आनि घेरे मे । ऐमी दसै है वाल कुंजन
 लता के वीच, गरक गई ॥

महाराजकुमार श्री गीरीपसादसिंह जी गिहौर ।

कञ्चन जटित परजङ्ग पै विराजै वाम दीपत
 दिनेस लों फनूस के उजरे मे । आये जो गुविन्द
 करि चञ्चल चितौन चित्र मानुहैं देखायो रति

सारी सों सरीर भली भाँति अली सोवति परी
है खरी नींदही के फेरे मै ॥ हिय मै बिचारि
ब्रजराज मन हारि रहे उपमा निहारि कहूं आ-
वति न हेरे मै । फरक कछू न रह्यौ सरक उ-
जरे तैं सु गरक गर्द ॥

बाबू प्रयोध्यासिंह - मधुवन जिला आजमगढ़ ।

कल जलकेलि जमुना मै रचे कान्ह जू के
करि जुवतीन की जमाति निज घेरे मै । मो-
हन के अङ्क सों कबीली राधिका की छूटि छू-
वंत बिलोक्यो शरि वा दिन सबेरे मै ॥ हरि-
औध ताकी एक अजब अनूठी आज उपमा बसी
है ऐसी आनि उर भेरे मै । गोद सों गरवधारे
वारिद हितू की गिरि गरक ॥

श्रीकृष्णरोलालजी गोस्वामी शारा ।

भाँकति भरोखे भुकि उभाकि नवेली बाल
लालन निरेखि चित चाह निरबेरे मै । फौलि
फवि कुन्तल कपोलन परसि रहे उड़त निचोल
नील मासत घनेरे मै ॥ चार चख चंचल मिले

ते चन्दमुखी चोकि आनन अनूप फेखो लोचन
तरेरे मै । दरसि गयो छै तमतोम में अमन्द
चन्द गरक गई० ॥

कैधौं सोनलता लपटानी है तमाल तरु चं-
पक की माल इन्दीवर के चंगरे मै । कैधौं मि-
ली कौमुदी कलङ्क सों सँकोच मोचि कैधौं रति
काम सों लपटि नेह नरे मै ॥ भनत किसोरी
मेघमाला ज्यों कलाधर सों बन्धि की सिखा धौं
धूम धारनि के घेरे मै । श्यामघन तन सों मि-
ली है ब्रजवाल ऐसी गरकि गई० ॥

तेईसवा अधिवेशन ।

मिती पूष सुदो १ सम्बत् १८५१

मालमुकतान की ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जो महाराज

उपनाम रससिंधु ।

कुञ्जन में आयि श्याम राधिकाजी संग लिये
भृगुडन की भृगुड सखी सुन्दर सुजान की । कहै

हार हारी जासों दुति भान की ॥ जो पै ब्रज-
राज जू न आयै तो सकोच कहा यामै तो क-
कूक बात है न सकुचान की । कुचन पै नख
चन्दहार से पहिरि इतै आर्द्र कितै खोय अरी
माल सु० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहस्य जागीरदार—पहरा ।

सब ब्रजबाल हैं निहाल लख लाल चाल
डाल दृगजाल सुने वाँसुरी की तान की । भाल
मे बिसाल विन्दु लोचन अरविन्द नैन राजै कवि
मानहु मनोज गलतान की ॥ राधिकाप्रसाद
श्रुतिकुण्डल रसाल हाल काछनी सुभग कटि
पीतपटतान की । मन कों चुरावै वीर रुचि
उपजावै धीर लोचन सिरात लखि माल० ॥

श्री० मारकण्डेलाल उपनाम चिरजीवी कवि - कोपागंज ।

पग मैं विराजै पायजीव जाके पैजवारी कटि
मैं सु मेखला सँवारी रतनान की । बाँह मैं वि-
राजै जाके बाजूवन्द धानक सो कङ्कन कलार्द्र
मैं पसारै प्रभा भान की ॥ कवि चिरजीव ऐसी

राधिका मनावै कौन जाके मान कौन्है कान्ह
भूलहू न मान की । सीस पै विराजै जाके च-
न्द्रिका चमक वारी गरे मै विराजै जाके माल०

ऋटि मै विराजै जाके पीतपट पैज वारो वाँह
मै विजैठो बिस बनक महान को । कान मै वि-
राजै जाके कुण्डल कनक वारो जाको देखि
लाजै दृति सिगरे जहान को ॥ कवि चिरजीव
ऐसे कान्ह सो मिलै ना कौन जापै नटू ह्वैरही
किसीरी वृषभान को । सीस पै विराजै जाके
मोर को सकुट आज गरे मै विराजै मंजु मा० ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलाल जी गयावाल ।

केलि करि यामिनी वितार्द्र कामिनी ने
जव विदा ह्वै चलन लगी भये ते विहान की ।
कहै गिरधारीलाल सहित सनेहन की मधुरी
सु वैन बोली मन्द मुसुकान की । एजू प्राण-
प्यारे यादगारी के लिये मै कहाँ दीजिये अँगूठी
एक आपना चिन्हान की । अस दीजै लाल एक
जर की रुमाल एक रेसमी सुसाल एक माल० ॥

हिये मे तन फरक करक कौन साँची कहू छाडि
दे री बानि जो सयान की । छूटि गई बेनी
कहा लूटि गई कुंजन में टूटि गई कैसे उर
माल म० ॥

पं० लक्ष्मीनारायण जी - अयोध्या ।

सारी रैनि केलि कला कौतुक मयङ्गमुखी
गति मे गयन्द गरवीली गुन ज्ञान की । मन्द
प्रभा दीपक बिलोकि चन्द छीन भई मन मे
मलीन करी चातुरी प्रमान की ॥ भरि भरि
अङ्क लेति चाव मों मयङ्गमुखी करि करि बातें
कमलापति सयान की । दर परदान कछू व्या-
जही ते दीन्हे छोरि धरति उतारि बाल माल०

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

छाडि घर कारवार कौन जाय कामी बसै
सुक्तीजन ठूँढ़ै लहै शिखा भलि ज्ञान की । सेवै
विश्वनाथ एक सहि कै अनेक विद्या प्राप्त होत
लावै चित चिन्ता अमनान की ॥ वैठि मनिक-
निका पै मनिका घुमावै अरु घान मे समावै

धुआँ मरघट मसान की । जौपै घरहौ में मिलैं
एक साथ दीय संभु सकल सुपास पास माल॥

कैसौ भलि सोभा लाल भाल में महावर
की कैसी भलि सोभा गोल गाल पीकपान की।
कैसौ भलि सोभा यह किस विखराने सीस कैसी
भलि सोभा यह पलकें भूपान की ॥ कैसी भलि
सोभा यह लाल लाल लोयन की कैसौ भलि
सोभा बात भूठ के बखान की । मेरो मन मोड़े
लेतं टीकुली सटे पट औ दाग ये विसाल उर
माल सु० ॥

ओ प० बलदेव कवि बिलकिष्ठा जौनपुर ।

प्रेमवस जादूभरे नैनवां नसौले हंसि कहत
कटाक्षन सीं मै जो अनुमान की । कीन्हो मन
काम बलदेव द्विज वृजराज मैन के मरोर में रही
ना सुधि मान की ॥ छूटी लटैं सिधिल वचन
रद छद् छवि जलित कपोलन में पीक लोक
पान की । लाला के गरे की गड़ी वाला गोरे
गातन मे आला रंग लार्ई लोक माला सु० ॥

भूमत चहूषा दल धीरन के काटिवे को को-
रति करत चोपि चंचला कृपान की । फेरि गि
रधारी आय अबला वचाओ बेगि चलन अचूक
लागी चोटै पंचवान की ॥ द्विज बलदेव देखौ
स्याम ले बलाहक नव कँपति लसत प्रभा सो
भरि भान की । विरहो बधन हेत घेरि चहरान
लागे डारे हैं गले में मनौ माल० ॥

पं० सीताराम उपाध्याय सीतापुर ।

ल्यार्डे केलिमन्दिर भोरार्डे भोरी भामिनी
को कल सो बताइ कै तमासो सखियान की ।
साटन के सुमुख सजाये सेज फूलन सौं तापै
धर्यो धाड़ भुजा जावक जपान की ॥ आइ करि
उकरि तहँार्डे ऐंठि बैठि गई निकट निहारि नैन
मन्द मुसुकान को । करि गई कामिनी कलावा
सौं जकरि गई भरि गई सेज टूटे माल० ॥

श्रीचन्द्रकला वार्डे - बूँदी

राति कहीं रमि कै प्रभात प्रानधारी पास
भायि घनश्याम स्यामसारी धारि आन की । अ-

धर अनूप माहिँ काजर की रेख धारि लाल र
लोयन पै लाली पीक पान की ॥ चन्दकला द्वि-
कल कलाधर अनेक धरे लखि उर गाड़ बोली
बेटी वृषभान की । इन्द्रजाल ढाली गल घाली
कौन बाल आज अगुन रमाल लाल माल० ॥

प्यारे बृजचंद पै उज्यारी चलीजाति है ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

कालिंदीकूलन पर वांसुरी बजावै स्याम सुन
ब्रजवाल सभी दौरी बहरात है । कहै रससिंधु
फेर भुण्डन की भुण्ड सखी बीच मैं जु राधिका
की मन्द मुमुकात है ॥ जुगनू सौ दीपक सी
ताग फुलभरौ जैनी दीपत मसाल की सी आ-
वत दिखात है । छूटे महताव किधौं चंचला
सिताव इन्दु प्यारे ब्रजराज पै उँ० ॥

सारी है करीकी सेत कारचोवी कामदार
हीरन के डार भारी मोती चमकात है । कहै

परै यों प्रातिविम्ब ता विचित्र बलि कौतुक बखानत
विकाति है । कबों ब्रजचन्द चन्द्रिका पै
चल्यौ जात कबों प्यारे वृज० ॥

पान करिवे को रस सरस प्रमोद पुंज भौं-
रन की कंज पै कतारी चली जाति है । सुकवि
छबीले उठै मदन तरंग अंग मन ते सुलाज की
सवारौ चली जाति है ॥ अब अवलोकि लै ह-
ठीली ठकुराइन अनूप यह उपमा हमारी चली
जाति है । जैसे उदै अरुन अँधारी चली जाति
पेखि प्यारे वृज० ॥

कवि पं० अम्बाशंकर जी—काशी ।

पानिप सुपानीदार वारन के मुक्तालार पोहे
वार जोहे मार चाबुक भापाति है । हीरन के
हार हिये हरत हरेइ हियो चन्दन चुपेरो अङ्ग
आभा उफनाति है ॥ कचुकौ सुपेत कुच सारौ
ह सुपेत धरौ सारौ छिन प्यारी सुच्छ सारौ अ-
धराति है । संकर सुकवि जनु जोमभरी मिलि
वे को प्यारे ब्रजचन्द पै उँ० ॥

काशोनिवासी पण्डित द्विज वेनी कवि ।

सेत सेत हीरन के भूषन सजे हैं अग मांग
मुकतान साँ सँवारो बहु भाँति है । सारी जर-
तारी की है भलक निराली तामे गहव गोराई
दुति अति अधिकाति है ॥ चंचला सी चलत
चमकै चहओरन मे वेनी द्विज कवि की छटा
सी छहराति है । रूप की अन्हाई छीरनिधि सी
उमाण्ड जनु प्यारे ब्रजचन्द पै० ॥

जिवदार जिवर जवाहिर के साजे साज जाकी
जोति उभरि अगारी चली जाति है । मारी ज-
रतारी की सँवारी वर वानिक सो छोरन ते
भरत किनारी चली जाति है ॥ चन्द जानि घरे
हैं चकोर आनि वेनी द्विज पाछे परी भौर भीर
भारो चली जाति है । छीरनिधि काढ़ी सी द-
वारी सी किं ऐसी कहों प्यारे ब्रजचन्द० ॥

वैठी काह ठनगन को ठाने ठकुराइन ही
हठि ये हठीली तेरी मोहि ना सोहाति है । वेनी
द्विज बरवस किये ते मान है है हानि याही निय

किला दुखारी हूँ उड़ाति है ॥ कहत बनत ना
केदार गोपिका की पौर नेह नीर सींचे विनु
बारी मुरझाति है । बटिया निहारिं भइ अ-
खिया धुँधारी ऊधो प्यारे वृज० ॥

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिहौर ।

धारे अङ्ग जीवर जड़ाऊदार हीरन के सेत
पट अङ्गन ठकी सी दरसाति है । माल उर
सोतिआ नबेली अलबेलौ धरे पीतस को ध्यान
हिय भीतरै सुहाति है ॥ पून्यो निमा माँझ चली
सजि कै मिलन काज पग पग ऊपर मे ठठकि
लजाति है । मेरे जान आली मैन लाज के ह-
वाले परी प्यारे वृजचन्द पै० ॥

पं० सीताराम शपाध्याय पिलकिष्ठा जौनपुर ।

सारी जरतारी दर-दामन किनारौदार साजि
अंग अंगन बनाय बहु भाँति है । रचि २ भूषण
सँवारे नखसिख सवै जगमगै जटित जवाहिर
की काँति है ॥ केसरि को अंगराग कीन्हे सवै
गातन मे वातन मे भला भलकति दरसाति है ।

सीताराम दूनी दामिनी सों दमकति जिमि
प्यारे ब्रजचन्द पै उँज्यारी चली० ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

मन्द मुसुकाति उमगाति हरखाति हिये देखि
जिन लिय कोऊ मन मे सकाति है । पेन्हि पट
भूषण कीं अंगन सजाय प्यारी पान की मसा-
लेदार वीरी मुख खाति है ॥ संग लै सखीन कीं
हँसीन कुंजगैल लखी गोरे तन ओप चहुँओर
छितराति है । अति हलसाति वतराति भाँति
भाँति वात प्यारे ब्रजचन्द० ॥

आई यदि खिलन कीं लोचन-मिचौनी खेल
खेल पर गोल राखे जियरा डगाति है । जब र
रही है तू प्यारी संग खेल माहिँ तव र हार
भई ऐमहि सुनाति है ॥ तेरे यह गोरे गात
रात ओप दूनी कढ़े केतेहु कृपायेह न नेकहु
कृपाति है । सघन निकुंज घनघोर तमहू को
फारि प्यारे ब्रजचन्द पै० ॥

श्री कमलापति जो प्रयोध्या ।

धारी सेतसारी प्यारी मोतिन किनारीवारी
हीरन ते जटित विभूषन विभाति है । सजि
गुन गौरव गयन्द गरधीली भरी मदन उमंग
संग कोऊ ना लखाति है ॥ कहै कमलापति
पिछानी ना परति ऐसी सौरभ मिलित चन्द्रिका
ते सरसाति है । साथ मै सहायक मलिन्द मद्-
भाते लीन्दे प्यारे वृजचन्द पै ॥

पं० बलदेव कवि सीतापुर ।

धारे सेत वसन हसन में दसन दुति मन
हरि फसन की कीन्ही मनौ घात है । गृधे माल
मुक्त ते लुरत डिज वन्देव गौरव गवन सों ग-
यन्दगति मात है ॥ सौरभित सुसन के हारन
की सौरभ सों भीर के कुलान हा.३ कम्पित यों
गात है । अगमग जोति जागै उषल अवाहर
की प्यारे वृजचन्द पै ॥

कैधों स्वामघन में लसत थिर दामिनी सी
कैधों हेमलतिका समाल सत गात है । कैधों

कृष्ण कंज ये चढ़ी है माल चंपक की कंधों
नीलमणि मै कनक कृत पाँत है ॥ सोनजुही
अतिसी कुसुम माल बलदेव वाग पंचवान की
विचारो वर बात है । न्यारी होत अंग सों न
प्यारी की सुखवि कंधों प्यारे० ॥

गंधीलो जिला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जो
उपनाम वृजराज ।

फेरि रहि जैहै अजू एकही गुनीं सों अवे दू-
गुनी रही है भरि चारी ओर काँति है । चन्द-
मुख चन्द ते सुहोड सो परी है खरी आवति
विलोके ठिगही सों भली भाँति है ॥ जी मैं प
कितैहो ऐसो ओसर न पैहो हाल चलि अव-
लोकौ यह समयो सिराति है । प्यारी ती न जैहै
कहूं इतही रहैगी लखौ प्यारे वृज० ॥

कतहूं न दीसत प्रकाश दस दिसन मै आय
तम तोम जाय छाव भली भाँति है । अंगन गु-
रार्द्धहूं न रार्द्ध रहि जाय कहूं नैनन कुह की
निसि ऐसी दरमाति है ॥ विरहविधा की कथा

सिद्धोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगोलाभाई ।

काय में लगाय लीने सुन्दर सिताभ पुनि
घार में विसद गुह्नी पुष्पही की पाँति है । रूप्य
के ललाम धरे आभरन अंगन में मोतिन की
माल गरे विमल विभाति है ॥ गोविंद सुकन
ऐसें साज सज चाँदनी में मोहन मिलन चलि
राधा अधराति है । आभा उन अंगन की फौल
के फावत मनो ध्यारे वृजचन्द ॥

चीवीसवां अधिवेशन ।

मिती भाष वदी १ सम्बत् १९५१

फुलवारी है वसन्त की ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

बेला श्री चमेली जुही मोसरी गुलाब कुन्द
बम्पाह सुपारी वाँस ताडक सजन्त की । कहे
रससिंधु फेर केला अमरुद सेव केवडा अनार
लीची देखी एक तन्त की ॥ बैठे तहाँ राधा
स्याम दोऊ अनुराग-भरे पीत पोखराज भी ॥

सोभा सरसन्त की । आम कचनार टेसू सरसो
वसन्त फूल लाल गुललाला फुलवारी है व०॥

सारी है वसन्ती रंग चम्पक सौ अङ्ग चारु
करत सिंगार वाट देखत है कन्त की । कहै र-
ससिधु गरे पीत-पोखराज हार माला हू वसन्त
फूल धरे दूकतन्त की ॥ एत बौच आये स्याम
पेख के लुभाये नैन मैनभरे घूमे' दोज वात है
दूकन्त की । आखैं सेत सेवती सी डोरे है गु-
लाला लाल अतसी सी कीकी फुलवारी है ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतजोषन काशी ।

कोकिल की कूक बिन कोयल सुनौगे लाल
होहुगे निहाल देखि बैठक दूकन्त की । विम्ब
में अनारदाने लखि के प्रसन्न हूँहो लोट जैहो
लता देखि मदन सहन्त की ॥ दूक अरविन्द मे
विराजैं जुग वारिज विलोकितै विकैहो छवि
भौर रसवन्त की । चलौ वलवीर तुमैं कौतुक
दिखाज' कैसी सुन्दर सुधारी फुलवारी है ॥

मे अरुन कीधौं लूक लौं लगै है वायू सीतल अनन्त की । बरि जरि जैहै बाल लाल बिरहागिन ते उत मति जारौ फुलवारी है व० ॥

पं० केदारनाथ जी बनारस ।

आयो ऋतुराज महाराज सैन साजि आछि कोकिल कुङ्कनि नकीब बिरतन्त की । ठौर २ भुण्ड २ गुंजरत भौर भीर सुभट केदारनाथ कलरौ अनन्त की ॥ दाडिम गुलाबन में आव अधिकाई पुंज पातन में लालिमा अपार सरसन्त की । पीत रंग सुमन सुहात सरसोन केर उपमा अनूप फुलवारी है बसन्त की ॥

ऐसो कौन देव जामु मन ना लुभानी देखि पारासर नारदादि जोगह्न नसन्त की । बानी पति गौरव गंभीर जाको धाता कहैं ज्ञान सिंधु वासी कडूलास उमाकन्त की ॥ च्यवन विहाय तप भोग भरमाइ रहे स्याम व्रजवाम संग कौतुक अनन्त की । मदन मलिन्ट अरविन्ट अनुराग वाग वारी कल क्यारी फुल० ॥

वा० माधोदास जी - काशी ।

मौजदार मालती के महल महान मध्य
मौलसिरी मालन की झालरें झिलन्त की । म-
रुडली मरालन की मत्त भई लोलैं तहाँ मधुपन
श्रेणी सुखसेनी है सिमन्त की ॥ माधव के मास
माह माधुरी लता से वैठि मन्द मन्द मालकोस
गावैं रति कन्त की । मिलि के मयङ्कमुखी मा-
धव जू मौज करैं क्यारिन से फूली फुलवारी० ॥

आवतहीं दूर करै ताप भवै तरुनी को हीय
से हजार होस वाढ़ै रति कन्त की । रूप-भरी
रस-भरी सौरभ समूह भरी अङ्गन से रङ्ग र सोभा
सरसन्त की ॥ माधव की माधुरी वखानू कहा
अरी वीर भीर है अलीगन की सुखमा लसन्त
की । ऐसो तो हमारे जान कन्तही लसन्त आ-
ली नहि नहि प्यारी फुलवारी है० ॥

कवि पं० गोपीनाथ जी काशी ।

सूरजसुखी सी जुही जोहै वृजचन्दमुख कुन्द-
कली दन्त दुति पार्द्र है दिगन्त की । चम्पक-

बरन धारु कंजन से राजै नैन जाहिर है घेरे
 भीर अलि अनगन्त की ॥ गोपौनाथ श्रीफल से
 कठिन कठोर कुच-कंचुकी कसी है तापै अद्भुत
 लसन्त की । स्याम वाम भाग मे बिराजै प्रान-
 प्यारी इमि मेरी जान फूली फुल० ॥

पं० बचकचौबे उपनाम रसीले कवि - काशो ।

कूकि कूकि क्वीलिया कसाइन कलेजो कोचै
 दरद विचारै ककु काह्र के न अन्त की । कहत
 रसीले भुँजि डारत मधुप पुंज गूँजि कै अवाई
 जानि मदन महन्त की ॥ तैसो डोलि त्रिविधि
 समीर थहराये देत कैसे हय हाय धीर धारै
 विनु कन्त की । चेत कै चैताय दीजो जधो मन
 भावन सी अब ना सोहाति फुलवारी है० ॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी - बनारस ।

देह सोनजुही सी चकोर ऐसे नैन राजै न
 जरि मदनवान सुखमा लसन्त की । मोरनी न-
 चत नय नाक कीर मुख कांज तिल है मधुप
 फसे फसनि अनन्त की ॥ दोऊ कुच श्रीफल हैं

नाभी अथाह कूप सौंह हरिशङ्कर पै कहों वात
अन्त को । सुनिये विहारौ जेती नारी ब्रजवारी
तामे मेरी प्रानप्यारी फुलवारी है० ॥

घूँघट जमक सोई हय की ठमक जानो मो-
तियाकली सी सोभा लसै पाँति दन्त की । अंग
राग भूरि जो पराग सो उड़त तासों पूरि नभ
रही धूरि महक अनन्त की ॥ भनै हरिशङ्कर
कढी जो घर वाहर को तीनि भ्रम वाग सन्धो
कदम चलन्त की । कैधौं स्याम प्यारी कैधौं रति
की सवारी कैधौं छाई छवि भारी फुल० ॥

कवि प० अम्बाशकर जी—काशो ।

चंपक दुति देखि बुति जाति केतिकी की
दुति पल्लव ललाई नवपल्लव कसन्त की । द्विजन
की पाँती कुन्द कुन्द करै कुन्दन को सारी छवि
कुसुम कुसुंभ के खसन्त की ॥ कोकिल अलाप
सों अलाप कोकिला को हरै हँमत भरै है जुही
जूही के हसन्त की । सकर सुकवि कहों कहत
वनै नर कछू प्यारी कन्त कीधौं फुलवारी० ॥

काशीनिवासी ब्रजचन्द जो बलभीय ।

ग्रीषम सी भामा औ कुमारिका की जगै जोति
 स्यामा, रविजा मैं दुति पावस दुरन्त की । च-
 न्द्रावली इन्दु लेख कांति सुभ सारद सी ललिता
 बिसाखा माहिँ सुखमा हिमन्त की ॥ चंपक सी
 चंपलतिका की उँजियारी माहिँ छार्द है अनूप
 छवि सिसिर सिमन्त की । कोटि कामरूप ब्र-
 जचन्द जू के सग नित्य भानु की दुलारी फु० ॥

अमल कमल सी प्रफुल्लित निहारि मीन-
 मनकी विचारि कै सवारी रतिकन्त की । मोहि
 माति सोखि ताइ करिकै अचेत सबै सकल दि
 गन्तनि लौं विजय अनन्त की ॥ मंजुल सिनिन्द
 मत्त मधुर मरन्द छाकि खंजन चकोर मृग सु-
 खमा सुतन्त की । प्यारि ब्रजचन्द की पियारी
 वृषभानवारी अँखिया तिहारी फु० ॥

त्रिविधि समीर वातसल्य सख्य दास्य भाव
 ललित लता हैं भक्ति भावुक अनन्त की । भो-
 रनि भूपनि भौर भौरनि रसिक रीति कूक

कोकिला की वृत्ति कवित कहन्त की ॥ रति के सहित रतिकन्त की अनूप कीति प्रीति ब्रजचंद्र दोज रसिक इकन्त की । वालकृष्णलालकृत कासी कविता की सभा रामकृष्ण जू की फुल-वारी है वसन्त की ॥

शो ठा: महेश्वरवक्त्रसिंह जी तालुकुकेदार—रामपुर मथुरा।

कूजि रहे कानन मे विपुल विहंग वर भौर गुंजरत पाय सौरभ सुतन्त की । डोलै लगी लतिका लवंगन की लोनी लोनी त्रिविधि समीर साज सुखमा इकन्त की ॥ ऐसे मे सुदित महा मन भै महेश्वर जू वाल अभिसार करै प्रीति भारी कन्त की । तजि मान प्यारो वनवारी सों मिलत क्यों न कैसी लखु फूली फुल० ॥

पंकज चरन चारु रम्भ खम्भ जानु युग लंक लचकीली मृगराजकटि तन्त की । वदर सरोवर सोहाय मान सौरभित ललित लता सौ रोम राजिका लसन्त की ॥ प्रफुलित कुमुद से कुच है महेश्वर जू इन्दुमुख हरत अंधारी है दिग्गन्त

किला कौ माती निज तन्त कौ ॥ भौहनि क-
मान तान मान करि बैठी कहा देती गल बाँहो
कमलापति सुकन्त कौ । वारी बैसवारी कही
मान लै हमारी चलि देखिये तहाँ री फुल० ॥

दासापुरनिवासी पं० बलदेव कवि सीतापुर ।

कमल पै कंचन कदलि जुग जोख्यो सिंह
तापै सरि हेमलतिका मै बिरमन्त कौ । ताके
सिर सिखर युगल द्विज बलदेव कम्बु पै रसाल
बिम्ब कुन्दिका लसन्त कौ ॥ ता अध सनाल
जन्जात जुग जोहियत क्यारी प्यारी न्यारी ब-
नवारी हित तन्त कौ । चन्द मे कमल कीर धनुं
अहि विद्यमान रति संतवारी फुल० ॥

कमलकली से कुंच सौरभ सनेह सने संकुल
सुमन सोभ मुखमा इकन्त कौ । पंकज से नैन
वैन कोकिला से बलदेव ऐन सुखदाई सैन मै
सर तन्त कौ ॥ चन्द सम आनन बसन बैस चाँ-
दनी से सोनजुही गात कलीकुन्द टुति दन्त कौ ।
वारी बैसही मे रूपवारी सब वारी हरि भौर
राधे वारी फुलवारी है० ॥

बाबू शिवपालसिंह - भिनगां ।

दाहिम रसाल चम्प श्रीफल जपा प्रसून ल-
सत वसन्ती सारी हिय हुलसन्त की । नारंगी
गुलाबकली कंज कदली सपत्र सोहत सिंगार
बेलि पाली रति कन्त की ॥ मूगफली पल्लव सु-
बिम्ब तिल फूल भली सिव कवि भनत सुवात
विलसन्त की । मालिनी सुमनवारी कैधौं सुकु-
मारी नारी कैधौं मनहारी फुलवारी ० ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

पीतपट साजे स्याम सारी पीत स्यामा सर्जी
कहा कहौं सोभा प्यारी पीत सरसन्त की । पीत
पट ग्वालन की गोपिन की पीत सारी पीत
विलसन्त सोभा दसह्र दिगन्त की ॥ पीत सेज
पीत भौन पीत हार पीत हार दसक की पीत
सोभा पीत दरसन्त की । बेलि पीत द्रुम पीत
पात पीत फूल पीत पीतमयी आजु फुल ० ॥

अन्त भी हिमन्त को अजौं ना घर आये कन्त
व्यर्थ दरसन्त सोभा दसह्र दिगन्त की । पेखि

सा० भारकण्ठेलाल उपनाम चिरजीवी कवि कोपागंज ।

दीनो कुलकानि की बिराजति दिवारैं जामैं
फाटक सुप्रेम औ किवारी निज तन्तकी । वि-
टप अनेक हाव भाव के बसत जामैं लतिका
सनेह सील साधिका दिगन्त की ॥ कवि चिर-
जीव जामैं जोवन जलूस छायो सुखमा सुगन्ध
सुखदार्द्र रतिकन्तकी । चलिये कन्हार्द्र लोढ़ि
लीजै मन भाई वह प्यारी गुनवारी फुल० ॥

जामैं जपा जूहिन की जुगपल बिराजै छटा
बेला औ चमेलिन के सहिमा हसन्त की । गु-
लाला गुलाब गुलतोर्रा गुलमेहदीह गेंदा औ
गुलाची जहाँ फूलत दिगन्त की ॥ कवि चिर-
जीव सिद्ध पृष्ट ब्रज भूतल में कामना दिवैया
सारे सन्त औ असन्त की । आइये कन्हार्द्र ककु
कीजिये कृपा की कोर कैसी ये अनोखी फु० ॥

वृषभान की दुलारी मैं ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाल जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

गावत है गारी खरौ प्यारी ब्रजनारी संग
यही निरधारी फाग खेलों गिरधारी मैं । कहै
रससिंधु धरे अविर गुलाल रंग चोवा और च-
न्दनहुं रवि की उँजारी मैं ॥ प्यारे कृष्णलाल तहाँ
नेह को निसान रोप्यो स्याम को जु ल्यार्द्र धर
मैन फुलवारी मैं । सारी पहिराय चोली घाघरो
धराय आज कृष्ण को नचाजँ वृषभान की० ॥

आज वरसान चली साँकरी जु खोर तहाँ
दूध दधि माखन ले गोपीभुण्ड भारी मैं । कहै
रससिंधु स्याम दौर के जो रोक्यो सखी चलिवे
की वाट नाहिँ खूबही विचारी मैं ॥ लाठी के
सु मारत ही दधि की मटूकी फोरी दूध की वो
छीट उड़ी लेत वलिहारी मैं । नन्दगाम आवें
तव दान लीजो नन्दलाल दान नहीं द्योँ जु
वृषभान की दुलारी मैं ॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा सम्पादक भारतलोचन काशी ।

ठसक न वाकी पर जैये बलवीर वह रावरेई
 प्रेम मे बिलीकी मतवारी में । विरह बिधा सों
 परी तरफत आठो जाम तुमतेँ गुमान नेक त-
 जत न हारी में ॥ सुख दुख आपने हिये की
 कहि देत मोसों तुम सों तनीये रहै कोटिक
 निवारी में । मोतेँ कही चरी हम कान्ह को
 सदा हैं पर कहन कहौ है ब्रषभान की० ॥

आज हौं गर्दही नन्दगांव दधि लै के भोर
 निरखि सकानी या अनोखी हरहारी में । रंग-
 भरे गागर लुढ़ावत उमंगभरे कोन में लुकानी
 भरी देखि पिचकारी में ॥ अविर गुलाल जो पै
 डार दर्द डार दर्द कैसे कै सहोंगी वीर लाज-
 भरी गारी में । भूलै मत नन्द जसुदा पै कह
 दीजो कान्ह कौरतिकुमारी ब्रषभान० ॥

महामहोपाध्याय श्रीयुत पण्डित सुधाकर जी द्विवेदी
 खजुरो—वनारस ।

लाड़िली को वनक वनाइ बैठे लाल हाल
 लाड़िली कन्हैया वनि वैठी चिचसारी में । क-

रत कलोल मिलि चूमत कपोल सुख लूटत अ-
मोल दोऊ लोल बारी बारी मैं ॥ आरसी मैं
वनक बिलोकि भ्रम छाया गयो मन मैं समाय
गयो धाय नारी नारी मैं । नन्द को दुलारो मैं
ही राधा कहै बार बार कान्हा कहैं आली वृष-
भान की दुलारी मैं ॥

काशोनिवासी पण्डित द्विज वेनी कवि ।

ठाढ़ी रही परम निसंक अडी याही ठौर
सामना करौंगी वढ़ि गोल के अगारी मैं । आ-
वन दे फगुआ धमार वीर गावन दे मारि कुम-
कुमा सों करौंगी धुम्भ भारी मै ॥ वेनी द्विज
अवहों वियोरि गोल खालन की रूपटि धरौंगी
धाय गहि गिरधारी मैं । नर ते बनाय नारी
तारी दै नचैहों नाच बाँकुडौ कडी हों वृष० ॥

जाके लखिवे को लाल पौरि पै परेई रही
होत ते निहाल टुक रुख ते निहारी मैं । जाहि
नाचि गाय कै रिभाय लेत हाहा खाय रुसिकै
कहूं जो नेक वैठौं जाय न्यारी मैं ॥ सोई कान्ह

मान कूबरी को लियो बाही भाँति हाय निर-
दई ऐसी कौत चूक पारी मैं । माधव भए जो
बेनी द्विज है हमारे और ऊधव वही हौं वृष • ॥

बस्य हौं न देव औ अदेव जज्ञ किन्नर के
फँसिगो तुही सों तोहि जबते निहारी मैं । बेनी
द्विज बस्य हौं न गोपी गोप गाइन के करत स
दाही हौं तिहारी इन्तिजारी मैं ॥ तेरे बिन देखे
नेक मन ना धरत धीर फिरत अधीर हौं कहाय
गिरधारी मैं । मेरी प्रानप्यारी मूरि जीवन ह-
मारी एक बस्य हौं तिहारी वृषभान की • ॥

काशोनिवासी पं० केदारनाथजी ।

गोपन के ठोटन लै जोटन खरे है ओट
खोट खोट बातें कहौ कुंज की अंधारी मैं । अ
हम भरन भुज भेटन केदार चहौ चूमन कपोल
अनमोल बटपारी मैं ॥ ठाढ़े रहौ दूर ना तो मा
रिहौं गुचीं कौ मार छीनि लैहौं कामरो छदाम
री तुमारी मैं । छूटि जैहै तेरो लँगरार्द्ध जदुरार्द्ध
धानि कोरतिकुमारी वृषभान की • ॥

छवीले कवि बनारस ।

रूप रचिवे मे जाहि सुधि विसराय विधि
अचल अगाध बुधि विमल विचारी मैं । सुकवि
छवीले छवि काम कामिनी को पयो मन्द कंज
कोमलता पगन हमारी मैं ॥ जगत लटू हूँ म-
टुकीरति बगायो करै वेद वरनै है करौं सपथ
तिहारी मैं । मान जीतिवे को मन कान्ह जी-
तिवे को ससि भान जीतिवे को वृष० ॥

वा० माधोदास जी - काशी ।

दम्पति विहार करै एकही सिंगार धार ए-
कही किनारी लगी एक रंग सारो मैं । माधव
जू मारग मे ललिता मिली है आय धाय गहि
लीनी लखि चातुरी तिहारी मैं ॥ गोरी गरवौली
गाम कौन की न देखी कहूं वास नन्दगाँव वड़े
गोप की कुमारी मैं । साँवरौ सलोनी लोनी
कौन की किसोरी वीर आली ना पिछानी वृ० ॥

कवि पं० गोपीनाथ जो काशी ।

जाही के फिराक मे विहाल लाल डोलति

हुसियारी मैं । बनिता बनाइहीं बिचित्र ब्रज
चन्द जू कौं वन्दावनवारी वृषभान० ॥

मुनिमनहारी देह खेदित सुगन्धवारी आखैं
रतनारी अलसौहीं निरधारी मैं । सोचिये सको-
चिये न जनसुखकारी स्याम कबहूँ न चूक ब्रज-
चन्द जू निहारी मैं ॥ खोइ निसि सारी मरजाद
सब धोइ डारी आये प्रात देखि क्वि तपति नि-
वारी मैं । गोपनि जुठारी सबे गोप की कुमारी
कहां उत्तमा तिहारी वृषभान० ॥

महाराजकुमार श्री गुरुप्रसादसिंह जी—गिहौर ।

सूक्त न मग सूधी परत न पग हाय तड़पि
तड़पि रैन दिवस गुजारी मैं । भूली सुधि लकुट
मटुक बनमानहूँ की बंसो बंसीबट पीतपट हूँ
विसारी मैं ॥ सूल सो लगत खान पान ग्वाल
वाल संग साँची हीं कहत करि सपथ तिहारी
मैं । चाल मतवारी मन्द हंसनि चितौनवारी
जब से निहारी वृषभान की दु० ॥

श्री ठा: महेश्वरबक्सिंह जी तालुकेदार—रामपुर मथुरा ।

ढौली ढौली नजरि लज्जिली अँखियान लख्यो
मन्दहांस सोभित वदन ससि सारो मैं । डारो
हरि ता जग सों लकुट मकुट कहीं मुरली । न
वाजत भरे है भाव भारी मैं ॥ आगे काह छैहै
श्रीमहेश्वरसहाय करै निपटि निकेत कै नध्यौ
है नेह-नारी मैं । भूली सब आज मनमोहन की
मोहन यों लागो मन मोहि वृष० ॥

कौनौ तप साधन कै आप गति जान जग
कौनौ करि तीरथ फिगत नित कारी मैं । कौनो
रचि ग्रन्थन को आपन उवार देखै कौनौ पढ़ि
ग्रन्थ गति जानै हुसियारी मैं ॥ कौनौ कछु मंत्र
यन्त्र तन्त्र टोटकादि लागे कौनौ व्रत पूजन को
देव धरि थारी मैं । मेरो मन मोदि कै महेश्वर
चरन लाग्यो कोमल कमल वृषभान० ॥

श्री नवनीति कवि—मथुरा ।

माँगत मही का कहा दान इतरान भरे वो-
लन न सूधे वात करत मरौरी मैं । नवनीत प्यारे

गति गजराजन की गौरव गहत जात स-
कुच सिखापन मिखाय करि हारी मैं । सानै ना
सनेह यों बखानै हरि आगमन जानै ना बिभेद
जौन गावै गीत गारौ मैं ॥ उन्नतार्द्ध आर्द्ध और
नेसुक उरोजन मे छौनतार्द्ध कटि त्यों नितम्ब
भाति भारी मैं । द्विज बलदेव दिन दूनी दुति
होन लागी दीसै ना दुराव वृष० ॥

महाराजकुमार श्री गीरीप्रसादसिंह जी गिहौर ।

जाय नन्दगाँव धूम फाग को रचौंगी आज
कसक मिटैहौं हिये यह प्रन धारी मैं । भोरिन
अवीर भरि धूंधर मचैहौं महा रंग भरि मारिहौं
उमगि पिचकारौ मैं ॥ मेलिहौं गुलाल लाल
आँखिन से बरबस गाफिल कै लैहौं गहि तब
गुनवारी मैं । आजु जौं न लाजँ वाँधि नन्द को
दुलारो सखी तेरी सौंह तौ न वृषभान की० ॥

पीतपट काछनी मुकुट मोर चन्द्रिका की
सीस आप लीजै धरौं नीलपट सारी मैं । गुंज-
मान आप उर धारिये सँवारि प्यारी लैहौं उर

आपनो सुकंचुकी तिहारी में ॥ लीजै रतिहूं मे
सुख लूटि बिपरीत रति रीति यह ठानिये अ-
नीत ना बिचारी मैं । आइये निकुंज आप नन्द
को दुलारी वनि आज वनि आज वृष० ॥

साभानिवासी पं: अच्युतानन्द जी द्विवेदी ।

जारि नेह तरु की बिसारि कौल वातन की
गातन लखात घात कौन्ही कुंज भारी मैं । हारि
हेरि हाय हाय करत हजार वार कुंज पार तो
लौं ऐसी भई दुखवारी मैं ॥ अच्युत न पायो
तबों अच्युत अनोखे लाल प्रच्युत हवाल गति
बावरी गंवारी मैं । काहे लागि घेरों उन्हें फेरो
बार बार भटू देत काहे गारी वृषमान० ॥

गयानिवासी पं. गिरधारीलाल जी गयावाल

बीन ते मधुरवैनी सुन्दर सरोजनैनी महा
सुखदैनै ऐसी दूजो ना निहारी मैं । कहै गिर-
धारालाल चाल है मरालवारी गुन की अगारी
जैमो नाहीं दिसि चारी मैं ॥ लहू अति खीन
चंचलाई के बिहीन चारु वैस की नवीन उप-

मान टूँडि हारी मैं । करीं का बखान ससि भान
मे नहीं है कान्हू जैसी है छटान वृष • ॥

जवहीं ते छोड़ि आये आपनौ भवन मीत
तवहीं ते दिना रैन रहत दुखारी मैं । कहै
गिरधारीलाल खटकत है बार बार कियो जौन
केलि रविनन्दनी-किनारी मैं ॥ भूलती ना हज
छिन ये कहूं कबहुं मोते साँची कहौं तोसे करि
सौहनि तिहारी मैं । जधव सुजान जज आये
देश आन तज बसै मम प्रान वृष • ॥

बाबू शिवपालसिंह - भिनगा ।

हय गज मृग फणि डोलत मुदित मन दा-
डिम रसाल चम्प नारंगी पत्यारी मैं । कीर
कोक कोकिल कपोत कलरव करैं सिव कवि
सर कांज विम्ब की कियारी मैं ॥ कदली जपा
प्रसून मूगफली वेलि भली भाँति २ कवि काजै
गति न्यारी २ मैं । विपिनि-विहारी ऐसे विपि-
निहि जाहु जनि ये सब लखाऊँ वृष • ॥

श्रीठाकुर राधाचरणप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा ।

एरी सुन हाल ब्रजवाल नन्दलाल कू के नये
रंग-ढंग ख्याल कौतुक निहारी में । देखतहीं
भये हैं निहाल नेह जाल फाँदे चित्र के लिखे से
रह गये चित्रसारी में ॥ राधिकाप्रसाद खान
पान गान तान ध्यान ज्ञानहूँ विसारी समुभाय
धाय हारी में । उनको मन छाको ब्रजचन्द्रलाल
मोहन मे मोहन मन छाको वृषभान० ॥

श्री चन्द्रकला वाई—बूंदी ।

जावक रजोगुन है पद जलजात चारु नख
ससि भान उरु करी कर चारी में । कुच सिव
सैल ग्रीवा विष्णु शङ्ख दन्त हीरा हास्य कौन्ड
धानी वीना मीननैनवारी में ॥ चन्द्रकला भृकुटी
मनोज धनु मुखचन्द वर पद भूषन की सुखमा
निहारी में । वेग चलि देखी ब्रजचन्द तिहुलो-
कन की सारी छवि छाई वृष० ॥

कानपुरनिवासी पं० ललितप्रसाद जी त्रिवेदी ।

मलयज राग मै गुराई की सुकृति छाई

होरन के हारन के भार न सभारी मैं । मालती
 के भूषन ललित अंग अंग राजी साजी जरतारी
 की किनारीवारी सारी मैं ॥ हरे ना मिलति
 भिलमिलति सुदौठि ऐसी कैसी भ्रमि गर्द मुख-
 चन्द की उज्यारी मैं । हरिये ती आपही बिहारी
 जू तिहारी की सौ द्रुहँ लगि लार्द वषभान
 की दुलारी मैं ॥

जानि परै दीन्हो विधि वाही को सकेलि
 सब रूप अधिकारी कहीं कहुँ लों बिहारी मैं ।
 ललित समारी नखसिख दुतिवारी लखि भूलति
 धकोर मुखचन्द उजियारी मैं ॥ दौठि चकचौंधि
 जाति जोति को जमाति ऐसी दामिनि सी द-
 मकि उठति नील सारी मैं । कौन जग नारी
 कमला सी विमला सी वारी आजु लखि लार्द
 वषभान की दुलारी मैं ॥

भीर लै अहीरन की तीर मति ऐये कान्ह
 मोद करि राखो है धमारिन की गारी मैं । भूलि
 जैहै सब अठिलाइवो बिहारी यह धाइवो भरे

हो जौन रंग पिचकारी में ॥ ललित खिलारी
 हो तो खेलिये सखान साथ जौन रंग डारी
 तौन हों न बृजनारी में । ओढ़ि कारी कामरी
 कौ सारी जरतारी रंगों जानति न मोहि वृष
 भान की दुलारी में ॥

कोपागंजनिवासो मारकंडेन्नाल उपनाम चिरजीव कवि ।

कहा कहूं प्यारी निज भाग्य की खुआरी
 जामें वीती वैस सारी रोज रोज इन्तजारी में ।
 जासो रहे पङ्कज हमेस वने प्यारे तामों भये अब
 चम्पा अनुकम्पा छाड़ि भारी में ॥ तव ते न ने-
 कह दिखात चिरजीव कहै प्रीति-प्रेमपन्थवारी
 कान्ह सुकुमारी में । जब सो लुभाने कान्ह चु-
 म्बक लों लोह मान कीरतिकुमारी वृष॥

करि कै चकोर सवही के चल चंचल को
 अंचल उमेठि कै अभोली लाज भारी में । दक्ष
 करि सवको सरौर निज वानक सों वाहन स-
 मेठि पट प्रीतम तयारी में ॥ सोरहो सिंगार
 करि वैठी कुंज भौन राधे रमा चिरजीवी जाके

भई बलिहारी मैं । मानो तीनों लोक की अ-
नोखी सुखमा अपार आनि कै बसी है वृषभान
की दुलारी मैं ॥

भई अति चस्त जापै अबला नभस्त सारी
टापि निज मुख हस्त गस्त खाय भारी जैं । रछौ
नहि कान्ह फेरि ध्वस्त करिबे को कस्त परीं ना
अधस्त कहूं आपने अटारी मैं ॥ कवि चिरजीव
आज लाड़िली कढ़त नेकु अस्त व्यस्त भयो तीनों
लोक छवि भारी मैं । पस्त करि मानो उदै अस्त
की समस्त सोभा भई है प्रसस्त वृषभान की
दुलारी मैं ॥

किस कवि की कविता किस पृष्ठ में है उसकी सूची ।

प० अच्युतानन्दजी—२५२, २७१,

प० अम्बाशंकर जी काशी—४, १४, २५, २८, ३८, ४८,
५८, ८०, ८८, १०४, १४२, १५५, १६७, २११, २३०,
२४८, २६५,

पं० अम्बिकादत्तध्यास—२, १४, ३७, ५७,

प० अयोध्यानाथजी (अवधेश) १६८ ।

पं० अयोध्याप्रसाद (ग्राम)—४१, ६८ ।

वा० अयोध्यासिंह (हरिप्रौढ)—४५, ५३, ६३, ७०, ७८,
८८, १०८, ११७, १२७, १३०, १४७, १५८, १७४,
१८०, २०६ ।

श्री १०५ कृष्णलालजी महाराज—१, ११, ११, १८, ३६,
४६, ५५, ६५, ७१, ७८, ८६, ८५, १०२, १११, ११८,
१२८, १३८, १४८, १६३, १७५, १८३, २०७, २२५,
२४९ ।

श्री गोस्वामीकिशोरीलालजी (भारा)—१६२, १७१, १८१,
२०६, २२०, २३८ ।

पं० केदारनाथजी—३, १३, ३१, ४८, ४९, ५६, ६७, ८
 ८९, ८९, ९६, १०५, ११३, १२०, १३१, १४२, १५
 १७०, १८२, १९७, २१४, २३३, २४६, २५९, २६२

श्रीगिरधारीलाल जी शर्मा—८, १६, २७, ३३, ४१, ५
 ६२, ६८, ७४, ९१९, ९४०, ९५६, २७१ ।

श्रीसहाराजकुमारगुरुप्रसादसिंह—५९, १९४, १३४, १५
 १८५, २०३, २६६ ।

पं० गोपीनाथजी—९७, १०५, १२९, १४०, १५२, १७
 १९४, २११, २२८, २४०, २६३ ।

श्रीगोविन्द गीला भाई जी—९, १९, ३५, ४५, ५४, ६
 ७०, ७७, ८५, ९४, १०२, ११०, ११८, १३८, १४
 १५९, १७४, १८८, २४२, २५७ ।

सहाराजकुमार श्रीगौरीप्रसादसिंहजी—८, १५, २६, ३
 ४३, ५०, ६०, ९३, १९३, १३४, १४४, १६०, १८
 २३४, २७० ।

पं० घनश्याम कवि काकरीली, १३८, १४७ ।

श्रीचन्द्रकलावाई वूंदी—११, १९, २८, ८५, ९३, १०
 ११०, ११७, १२६, १३६, १४६, १६०, १७५, १९
 २०१, २२४, २४१, २५७, २७३ ।

श्रीछन्नूलालजी (रसिक नवीन)—९८, ११३, १२०, १३
 १५२, १६६, १७८, १९८ ।

छवीले कवि -- २१, १२, १४३, १५४, १६८, १७८, २००
२१५, २२८, २४५, २६२ ।

बाबू जगन्नाथप्रसाद वी० ए० (रत्नाकर कवि) १५०, १७१ ।

बाबू जुगुलकिशोरजी (हजराज) - ७, १६, २६, ३४, ४४
५०, ६०, ६८, ११६, १२५, १३५, १४६, १६२, १७२,
१८८, २०५, २१७, २३७ ।

पं० द्विजबेनी कवि जी १०, १२, २०, ४८, ८१, ८८, ९७
१०६, ११४, १०१, १३२, १४१, १५३, १६५, १८१,
१८८, २१२, २४४, २६१ ।

त्रिनवनीति कवि -- २६७ ।

बाबू पत्तनलालजी - ६, १७, २५, ३०, ४२, ५०, ६१, ६८,
७६, ८४, ९२, १००, १०८, ११५, १२४, १६१, १७३,
१८८, २०४, २२०, २३५, २५५, २६८ ।

पं० वचन चौबे (रसीलेकवि) - १५३, १७७, १८६, २१३
२२८, २४८, २६४ ।

पं० बलदेवप्रसाद, २०३, २३६, २५४, २६८ ।

श्रीहृजचन्द्रजी बलभीय - ५, १५, ३०, ४०, ४८, ५८, ६७
७३, ८३, ९०, ९८, १५६, १६७, १८३, १८७, २१६,
२२, २५०, २६५ ।

डा० भगवतीचरणजी - ७, ७५ ।

पं० सटनमोहन पाठक - ८१ ।

मनमोहन कवि—१३३, २०२ ।

बाबू मन्नूलालजी—८२, ८०, ८६, १०४, १३०, १५५, १६८,
१८०, १८५ ।

ठाकुर महेश्वरबख्शसिंह—२५१, २६७ ।

बाबू माधवदास—३, १३, २४, ३०, ३८, ६६, ८१, ८०,
१०६, ११४, १२२, १३०, १४०, १५१, १६८, १८४,
१८५, २१३, २२७, २४७, २६३ ।

लाला भारकखेलाल—३१, ४०, ८४, ८२, ८८, १०८, १३४,
१४५, १५८, १७१, १८७, २०३, २१८, २५८, २७५ ।

प० रघुनाथ कवि—८१ ।

ठाकुर राधाचरणप्रसाद—१८९, २१८, २७३ ।

बाबू रामकृष्णवर्मा—१, १२, २२, ४७, ५५, ६५, ७२, ७८,
८७, १०३, ११२, १२०, १२८, १३८, १४८, १६४,
१७६, १८४, २०८, २२०, २४३, २६० ।

पण्डित रामदयालजी—२१० ।

महाराज सर रावणेश्वरसिंह बहादुर K C I E गिहौर—
१२३, १५६, १८४, २०१ ।

कविराज लखिरामजी—१४४ ।

पण्डित ललिताप्रसादजी त्रिवेदी—१०, २०, २७, ३६, ४४,
५३, ५८, ७१, ९२०, ९३८, ९५२, २७३ ।

पण्डित लक्ष्मीनारायणजी—२२९, २३६, २५३ ।

पण्डित मालियामजी—८३, ८२, १०७, ११६, १२७ ।

बाबू शिवनन्दनसहायजी—१८, ३४, ४०, ५०, ६१, ६८ ।

बाबू शिवपालसिंहजी १८६, २००, २५५, २७२ ।

पं० सिद्ध कवि (काशी) - २१४ ।

पण्डित सीतारामजी - २२४ २३४ ।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदीजी - २१०, २२७,
२४४, २६० ।

माला हनुमानप्रसादजी (लखनऊ)—१३६, १४६ ।

पण्डित हनुमानप्रसादजी (अयोध्या)—१६१ ।

बाबू हरिश्चन्द्रप्रसादजी—५, १४, २४, ३०, ३८, ५८, ६६,
७३, १२६, १४९, १५१, १६६, १८०, १८६, २०८,
२२८, २४८, २६४ ।

सूचना ।

भारतरत्न साहित्याचार्य्य पं० अम्बिकादत्त व्यास जी की पूर्ति “मलिन्द मतवारे से” पर पृष्ठ ५७ में छपी है परन्तु उसमें छापे की गलती से पद छूट गया है इसलिये उसे यहाँ पुनः शुद्ध कर प्रकाश करते हैं ।

“नैन कमललखि उमंग भरेसे । भृकुटि व्याजजनु पाँति करे से ॥ फरफरात पुनि ठठकारे से । सोहत मलिन्द मतवारे से ॥”



